बाईबल अध्ययन का अवलोकन

कैसे बाईबल एक पूर्ण रूप में सटीक बैठता है? बाईबल एकीकृत है और उत्पति से प्रकाशितवाक्य तक एक पुस्तक है। यीशु मसीह सम्पूर्ण बाईबल का विषय है।

बाईबल में एकीकृत धागा परमेश्वर की ग्रन्थकारिता है। बाईबल का प्रत्येक वचन परमेश्वर का वचन है। बाईबल में वह सब है जो परमेश्वर चाहते हैं कि हम उसके विषय में जानें। प्रत्येक वचन हमारा निद्रेश के लिए लिखा गया है। रोमियों 15:4 –'' जितनी बातें पहिले से लिखी गई, वे हमारी ही शिक्षा के लिए लिखी गई हैं कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की शांति के द्वारा आशा रखें।''

बाईबल यह स्पष्ट करती है कि सम्पूर्ण इतिहास के लिए परमेश्वर की एकीकृत योजना है।

उसके पास समय की परिपूर्णता के लिए एक योजना है, ताकि सभी चीजें मसीह में पूर्ण हो, चाहे वे स्वर्ग या पृथ्वी पर की चीजें हों।

मसीह का यह सब करने का एक उद्देश्य है – इफिसियों 1:12 कहता है कि हम जिन्हों ने पहिले से मसीह पर आशा रखी थी, उस की महिमा की स्तुति के कारण हो। परमेश्वर ने हमें उसकी महिमा के लिए रचा है।

उसकी यह योजना सदैव ही थी यशायाह 46:9–10, प्राचीनकाल की बातें स्मरण करो जो आरम्भ ही से है, क्योंकि ईश्वर मैं ही हूँ। दूसरा कोई नहीं है। मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीन काल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूँ, मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूंगा।

यह योजना उनके समय पर है गलतियों 4:4–5, परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ, ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले और हम को लेपालक होने का पद मिले।

पृथ्वी पर मसीह का कार्य सबसे महत्वपूर्ण बात है। हम पीछे मुड़ कर क्रूस की ओर तथा मसीह के द्वितीय आगमन की ओर देखते हैं ताकि वह अपने कार्य को पूर्ण कर सके। 2 पतरस 3:13 पर उस की प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और एक नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिन में धार्मिकता वास करेगी।

परमेश्वर की योजना के एकीकरण के कारण उसने भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी की और मसीह के आने के द्वारा उन वायदों को पूर्ण किया। यशायाह 9:6–7 क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है और प्रभुता उसके कांधों पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करने वाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता और शांति का राजकुमार रखा जाएगा। उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शांति का अन्त न होगा, इसलिए वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय हौर धर्म के द्वारा स्थिर एि और संभाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा।

भविष्य की एक भविष्यवाणी अभी भी आने बाकी हैं, देखें 2 पतरस 3:13

पुराने नियम में मसीह

चूंकि परमेश्वर की योजना मसीह और उसकी महिमा पर केन्द्रित है, इसलिए यह स्वभाविक है कि पुराने नियम की बातें मसीह की ओर इशारा करती है। 2 कुरि 1:20 ''क्योंकि परमेश्वर की जितनी प्रतिज्ञाएं हैं, वे सब उसी में हाँ के साथ हैं। इसलिए उसके द्वारा आमीन भी हुई, कि हमारे द्वारा परमेश्वर की महिमा हो।''

यीशु मसीह ने यह सिखाने में समय व्यतीत किया कि पुराना नियम उनकी ओर ही द्वारा करता है। लूका 24:44, ''फिर उसने उनसे कहा, ये मेरी वे बातें हैं, जो मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए, तुमसे कही थीं, कि अवश्य है कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में, मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों।'' लूका 24:45–48

तब उसने पवित्र शास्त्र बूझने के लिए उनकी समझ खोल दी, और उनसे कहा, ''यों लिखा है कि मसीह दुख उठाएगा और मीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसकी के नाम से किया जाएगा। तुम इन सब बातों के गवाह हो।

लूका 24:45 परमेश्वर से पवित्र शास्त्र को समझने के लिए उनकी समझ खोल दी। सम्पूर्ण रूप से पुराना नियम उद्धार की परिपूर्णता की ओर देखता है जो कि मसीह के जीवन, मृत्यु और जी उठने के द्वारा एक बार और सदा के लिए हुआ है।

परमेश्वर की योजनाएं।

किन मायनों में पुराना नियम मसीह की ओर देखता है? पुराने नियम में स्पष्ट वायदें हैं जो मसीह के मसीहा के रूप में आने की ओर इशारा करते हैं। मीका 5:2, यशायाह 7:13–14, 9:6–7, 40:3–4, 53:1–4, और भजन संहिता 45:6–7, 2:7, 22:1–21, 78:1–2, यिर्मयाह 31:15, होशे 11:1, जकर्याह 9:19

सम्पूर्ण बाईबल मसीह की ओर इशारा करती है। पुराना नियम आगे की ओर तथा नया नियम यीशु की ओर पीछे इशारा करती है।

निम्नलिखित विववरण पुराने नियम की प्रत्येक पुस्तकों को शामिल करता है जो कि अधिक हो सकता है कि कक्षा के समय में पूर्ण हो। यह सही है कि कुछ भविष्ववक्ताओं के विषय में सिखाया जाए और नये नियम को जारी रखा जाए। फिर भी यह सिफारिश है कि स्नातकता के पश्चात् कक्षा साथ मिल कर पढे और भविष्यवक्ताओं का अध्ययन करे और बाईबल की विभिन्न पुस्तकों का गहराई से अध्ययन करें।

उत्पति का अवलोकन : प्रारम्भ की पुस्तक

लगभग 2500 वर्षों तक परमेश्वर की कहानी एक श्रवणीय कहानी थी जो पीढ़ी दर पीढ़ी बताई गई। इतिहास को रखने का यह एक भरोसेमंद तरीका था और अीाी भी समाज में बिना लिखित भाषाओं के मध्य जीवित है। बाईबल की पहली पांच पुस्तकें मूसा द्वारा लिखी गई थी। वे पुराने नियम के एक वर्ग के रूप में जानी जाती हैं। जिसे पेन्टाट्युक (पांच पुस्तकें) या तोरहा (विधि/कानून) के नाम से जाना जाता है।

उतपति बताती है कि कैसे परमेश्वर ने सभी चीजों की रचना की, और पाप न होने के कारण उसकी सृष्टि अच्छी थी। शीघ्र ही आदम और हव्वा ने पाप किया और संसार में सभी मुसीबतें उस पहिले पाप से ही शुरू हुई। प्रथम पाप करने के

पश्चात् मनुष्य पाप करने से नहीं रूका और परिणामस्वरूप परमेश्वर का न्याय मनुष्य पर आया। हम सीखते हैं कि जैसे ही मनुष्य ने पाप किया परमेश्वर ने मनुष्य को पाप से बचाने और उसके साथ एक अच्छें सम्बन्ध को बनाने की प्रक्रिया शुरू कर दी थी। उत्पति 12 में परमेश्वर ने यह घोषणा की कि अब्राहम और उसकी पीढ़ीयों के द्वारा वह उद्धार की योजना पर कार्य शुरू करने जा रहा है, जिसमें यीशु भी शामिल हैं।

1. पहली रचना की कहानी है। उत्पति 1:1–2 अध्याय तक रचना की कहानी को समझना बहुत महत्वपूर्ण है क्यों? संसार विकास की बात सीखाता है जो कि यह धारणा है कि सब कुछ की रचना कुछ होने के द्वारा हुई है, परमेश्वर के द्वारा बिना कुछ किए हुए। यह पूर्णतया गलत है। बाईबल बताती है कि परमेश्वर ने कुछ भी नहीं से बोलने के द्वारा रचना की जो कि बिल्कुल सही है। युहन्ना 1:3 बताता है कि यीशु के बिना किसी भी वस्तु की रचना नहीं हुई। वह हमारा सृष्टिकर्त्ता है और वही सभी चीजों को नियन्त्रित करता है।

अ. पढ़ें आयतें 1–13 हमे यह समझना चाहिए कि परमेश्वर के लिए सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड और जीवन की रचना करना सरल था। यह हमें समझने के लिए मदद करता है कि हमारा परमेश्वर असीम सामर्थी है। हमें उसके भय में खड़े होना चाहिए। पुरी रीति से उसका आदर करते हुए। उसकी रचना द्वारा उसका व्यक्तित्व प्रकट होती है। उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि वह खूबसूरती और विविधता को पसंद करता है।

ब. उत्पति 1:27 ''मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप में रचा गया था। इसका अर्थ क्या है? इसका अर्थ है कि हमारा व्यक्तित्व परमेश्वर के समान है – हमारे पास ज्ञान है, हम महसूस करते हैं, हमारी इच्छा है और हमारे पास सही या गलत को चुनने की योग्यताएं हैं। हम कारण ढूंढते हैं। गलत से सही सिखने की हमारी नैतिकता है ओर हमारे पास आत्मिकता है जो हमें परमेश्वर के साथ सम्बन्ध में होने की इजाजत देती है। सभी पशु अपनी सहजबोधता से नियंत्रित होते हैं।

स. उत्पति 1:26–30 परमेश्वर ने आदम से कहा कि वह सारी पृथ्वी पर शासन करे। 1 कुरि. 6:2–3 कहता है कि संत लोग पृथ्वी का न्याय करेंगे। हम केवल पशु नहीं है, हम शासक हैं क्योंकि परमेश्वर के साथ हमारा विशेष सम्बन्ध है।

द. युगांडा में आमतौर से उत्पति 1:28 के अनुसार यह प्रश्न पूछा जाता है कि क्या परिवार नियोजन गलत है। जबकि अफ्रीका में यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। पश्चिम में यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न के तौर पर प्रकट नहीं है। मैं यह इसलिए कहता हूँ कि जब मैं टीकाओं को पढ़ता हूँ तो यह परिच्छेद पृथ्वी पर भर जाने के भाग का उल्लेख नहीं करता है। इसके बजाए वे हम मनुष्यों के पृथ्वी पर शासन करने की भूमिका पर जोर देते हैं।

मैं सोचता हूँ कि हमें इस परिच्छेद को पूर्ण रूप से 26वीं आयम से प्रारम्भ करते हुए 31वीं आयत तक अनुवाद करना चाहिए। यह परिच्छेद हमें बताता है कि हम मनुष्य खास रचना किए गए हैं। इस कारण हमें पृथ्वी पर शासन करनी की जिम्मेदारी दी गई है। हम इस परिच्छेर का अध्ययन करने में बहुत समय व्यतीत कर सकते हैं परन्तु मैं स्वयं को पृथ्वी में भर जाने के प्रश्न तक सीमित रखूंगा।

जिस समय यह आज्ञा दी गई, तब सम्पूर्ण पृथ्वी पर केवल दो ही व्यक्ति थे। बेशक पृथ्वी को लोगों से भर जाने की आवश्यकता थी ताकि वे शासन कर सके। क्या अब पृथ्वी पर शासन करने के लिए पर्याप्त लोग हैं? इस विषय पर मेरी राय व्यवहृत करने दे। मैं कहता हूँ कि हम मनुष्यों ने पृथ्वी पर भर जाने की आज्ञा का पालन किया है और परिवार नियोजन एक पाप नहीं है क्योंकि पृथ्वी पर शासन करने के लिए पर्याप्त मनुष्य हैं।

मेरा ऐसा कहने के कारण निम्नलिखित हैं :

1. पृथ्वी की जनसंख्या 2 से बढ़कर लगभग 7000000000 लोगों की हो चुकी है।

2. आज पृथ्वी पर शासन करने की तुलना में लोगों की संख्या अधिक है। हम इस कथन के प्रमाण रूप में यह देख सकते हैं कि मनुष्य ने कैसे बहुत से पशुओं के पूर्ण विलुप्त होने में स्वयं की भूमिका निभाई है। पृथ्वी के कई हिस्से मनुष्य की गतिविधियों के कारण बर्बाद हो चुकी है जैसे भूस्खलन, यह मनुष्यों की ही गतिविधियों का प्रमाण है।

3. दुनिया के कई हिस्से भूख और अकाल का अनुीाव कर रहे हैं। क्योंकि वहाँ भोजन से अधिक मनुष्यों की संख्या है।

जबकि यह मेरे कहने के लिए नहीं है कि लोग कितने बच्चे उत्पन्न करें, परन्तु 1 तिमु. 5:8 के अनुसार यह कहना चाहता हूँ कि परमेश्वर चाहते हैं कि आप उतने ही बच्चे उत्पन्न करें जितने की आवश्यकताएं आप पूरी कर सकें। आप अपने बच्चों के लिए भोजन, रहने का स्थान, कपड़े, चिकित्सा सुविधाएं, माता पिता का समय और शिक्षा उपलब्ध करवाने वाले होने चाहिए।

पश्चिमी देशों में प्रत्येक परिवार में केवल दो ही बच्चे होते हैं। उनके पास इसके कारण हैं जो इस प्रकार हैं :

1. उनके देश में पर्याप्त लोग हैं।

2. युगांडा की तुलना में बच्चों के लिए खर्च करना ही पड़ता है। आप बच्चों को त्याग नहीं सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में यदि आप अपने बच्चों की आवश्यकताएं पूर्ण करने में असमर्थ होते हैं तो आप को बंदीगृह में डाला जा सकता है।

3. मसीही रिवाज के अनुसार अभिभावकों को अपनी संतानों की आवश्यकताएं पूरी ही करनी चाहिए।

परिवार नियोजन जो गर्भधारण से रोकता है, पाप नहीं है। परन्तु परिवार नियोजन जो बच्चे के गर्भधारण के पश्चात उसकी हत्या करता है वह पाप है। आधुनिक दवाईयों के कारण सुरक्षित और प्रभावी उपाय है जिससे जन्म नियंत्रित किया जा सकता है।

फ. उत्पति 1:31 के अनुसार वह रचना उत्तम थी। क्यों? क्योंकि वहाँ कोई पाप नहीं था।

1. उत्पति 2:1–3 के अनुसार परमेश्वर ने सातवें दिन को पवित्र और विश्राम का दिन ठहराया। आज की सब्त के दिन को मानना महत्वपूर्ण है। हमें एक दिन का अवकाश चाहिए ताकि हम परमेश्वर की आराधना कर सकें।

2. लोगों को सप्ताह के कार्यों से एक दिन दूर रहना चाहिए। परमेश्वर ने हमारे लिए दिन ठहराया कि हम विश्राम करें और परिवार के साथ कुछ समय बितायें। हम यदि सातों दिन कार्य करें और एक दिन का विश्राम लेकर 6 दिन कार्य करें तो वह ज्यादा अच्छा कार्य होगा।

जी. उत्पति 2:4–25 में परमेश्वर ने पुनः मनुष्यों के विषय में रचना की कहानी में बताया है, जो कि रचना का महत्वपूर्ण हिस्सा है। वह हमें हमारी शुरूआत के विषय में अधिक बताता है। यह एक अलग रचना का लेखा–जोखा नहीं है, परन्तु जैसा मैंने कहा कि परमेश्वर अपनी रचना की शीर्ष के विषय में अधिक बताया है जो कि मनुष्य है।

1. उतपति 2:15–17 बताता है कि हमें कार्य करना है। क्या हम स्वर्ग में कार्य करेंगे।

2. उत्पति 2:18–24 में पुरूषों और स्त्रियों के सम्बंध के विषय में हव्वा की रचना के द्वारा अधिक विवरण देता है। 18वीं आयत हमें सिखाती है कि स्त्री को पुरूष के सहायक होने के लिए रचा गया था और 24वीं आयत परमेश्वरीय विवाह का आधार है। जो यह सिखाती है कि हम एक व्यक्ति हैं और जैसे हम स्वयं के साथ कभी भी दुव्यर्वहार नहीं करते हैं। इसलिए हमें अपनी पत्नियों से भी दुव्यर्वहार नहीं करना चाहिए।

3. हम कभी भी तलाक नहीं लेंगे क्योंकि एक बार विवाह होने के पश्चात् हम एक ही व्यक्ति हैं और वास्तविकता में हम अलग नहीं हो सकते। परमेश्वर सभी तलाकों से घृणा करता है।

2 पहले ग्यारह अध्यायों की दूसरी मुख्य घटना मनुष्य का गिरना है।

अ. उत्पति 3:1–7 पाप जगत में प्रवेश किया– मनुष्य के पास यह आजादी है कि वह परमेश्वर की आज्ञा का अनुसरण करे या उसकी आज्ञा को ठुकरा दे। आदम ने परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारिता को चुना और यह प्रथम पाप है। तब से लेकर मनुष्य ने पाप का चुनाव किया। संसार की सभी समस्याएं इसी एक कार्य के द्वारा आरम्भ हुई। रोमियों 3:23, 6:23

बी. परमेश्वर ने तत्काल ही सर्प, आदम, हव्वा और सम्पूर्ण सृष्टि के लिए सजा की घोषणा की। उत्पति 3:14–19, रोमियों 8:19–23 के द्वारा हम यह जानते हैं कि सभी इस प्रथम पाप के द्वारा तकलीफ में पड़ गई। पाप बहुत गंभीर है और परमेश्वर प्रत्येक पाप को दण्डित करते हैं। यहाँ पर लोगों के लिए दो प्रकार के दण्ड का उल्लेख है।

अ. पृथ्वी का दण्ड जो कि सभी लोगों को दिया गया चाहे वे मसीह हैं या गैर मसीह। उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति एच.आई.वी संक्रमित व्यक्ति के साथ व्यभिचार करता है तो वह एडस से ग्रसित हो कर दुख झेलते हुए मृत्यु को प्राप्त करता है।

ब. अनन्त दण्ड

क. उद्धार न पाया हुआ व्यक्ति मरने पर नरक में सदा अपने पापों के कारण दुख उठाता है।

2. मसीह व्यक्ति के पापों का हर्जाना मसीह द्वारा चुकाया गया इसलिए वह स्वर्ग जाता है। यीशु मसीह को प्रत्येक मसीही द्वारा किये गए पापों के लिए क्रूस पर दण्डित किया गया।

3. उत्पति 3:8–15 परमेश्वर ने मनुष्य को ढूंढ़ा और उसे उसी समय मृत्यु न देते हुए अपने अनुग्रह को बढ़ाया। परमेश्वर ने फिर से मेल मिलाप की अपनी योजना का प्रारम्भ किया।

अ. और 9 आयत में परमेश्वर ने मनुष्यों को छुड़ाने की योजना की प्रक्रिया का प्रारंभ किया और यह तभी शुरू कर दिया गया था जब प्रथम पाप का कार्य समाप्त हुआ। परमेश्वर ने मनुष्य को ढूंढ़ा ताकि वह सम्बंध को पुनः शुरू कर सके।

2. 21वीं आयत बताती है कि परमेश्वर ने पशुओं का वध करके आदम और हव्वा के लिए कपड़े बनाये। पशुओं का मारा जाना और आदम, हव्वा का ढका जाना निम्न बातों को प्रदर्शित करता हे।

1. पवित्र परमेश्वर के सम्मुख खड़े होने के लिए मनुष्य का ढका जाना अवश्य है।

2. मनुष्य स्वयं के कार्यों द्वारा खुद को नहीं ढक सकता है, और न ही परमेश्वर द्वारा स्वीकार्य हो सकता है। यह परमेश्वर द्वारा किया जाने वाला कार्य कि मनुष्य उसके सम्मुख ग्रहण योग्य हो।

3. परमेश्वर के सम्मुख ग्रहणयोग्य होने की आवश्यकताओं को परमेश्वर पूर्ण करेगा।

4. परमेश्वर द्वारा निर्दोष पशुओं का लहू बहाने से यह प्रकट किया गया कि पुनः स्वर्ग प्राप्त करने के लिए लहू का बहाया जाना आवश्यक है। इन निर्दोष पशुओं के लहू बहाये जाने के द्वारा पूर्ण बलिदान की ओर इशारा किया गया जिसे यीशु के लहू बहाने के द्वारा पूर्ण किया गया।

3. उत्पति 3:15 में परमेश्वर ने शैतान की पराजय का वायदा किया। एक बहुत ही महत्वपूर्ण आयत क्योंकि इसमें शैतान की पराजय और मसीह की विजय की भविष्यवाणी की गई।

4. एंडी को डसने का अर्थ है कि शैतान यीशु को चोट पहुंचाएगा जो कि क्रूस पर हुआ, जहां यीशु ने शैतान को परास्त किया और यीशु ने युद्ध को जीत लिया।

3. उत्पति 4 में कैन और हाबिल के विषय में बताया गया जो कि प्रथम प्राकृतिक रीति से उत्पन्न हुए मनुष्य थे। हम देखते हैं कि कैन ने अपने भाई की हत्या की। पाप की प्रवृति आदम द्वारा उसकी हर संतान में पहुंची। सभी मनुष्य पाप करने लगे और जैसे हम बाईबल से गुजरते हैं तो हम पाते हैं कि मनुष्य के लिए पाप के बिना जीना कठिन होने लगा और परमेश्वर हर पार को दण्डित करते हैं। यही कारण है कि मनुष्य को एक उद्धारक की आवश्यकता है।

4. तीसरी महत्वपूर्ण घटना जो हम पहले ग्यारह अध्यायों में पाते हैं वह बाढ़ (जल प्रलय) है। उत्पति 6:9 में नूह और जल प्रलय की घटना का उल्लेख पाया जाता है।

जगत में पाप बढ़ने लगा और परमेश्वर ने सम्पूर्ण मानव जाति को समाप्त करने की बात को प्रकट किया। उत्पति 6:5–7 में हम पढ़ते हैं कि कैसे परमेश्वर मनुष्य की पापमय प्रवृति से दुखित था।

पद 8 में हम पढ़ते हैं कि केवल नूह ही परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी पाया गया। आयत 13–14 में परमेश्वर ने नूह से एक जहाज तैयार करने के लिए कहा ताकि वो और उसका परिवार आने वाले जल प्रलय से बच जाये जबकि बाकी सभी लोग नाश हो जायेंगे।

महा जल प्रलय की कहानी हमें बताती है कि कैसे पाप लगातार बढ़ता चला गया और कैसे परमेश्वर को जल प्रलय के रूप में दण्ड भेजना पड़ा। हम देखते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य के साथ धीरज धरा। परन्तु जब उसका यह धीरज टूट गया तो भयानक दण्ड आया।

उत्पति 6:22 बताती है कि नूह ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। इब्रानियों 11:7 हमें बताती है कि विश्वास द्वारा नूह बचाया गया, ठीक वैसे ही जैसे यीशु पर विश्वास करने के द्वारा मसीही लोग बचाये गये हैं

5. 1–11 अध्याय में चौथी मुख्य घटना बाबुल की मीनार है। जैसे समय बीतता गया वैसे ही मनुष्य पाप करने में लगा रहा।

उत्पति 11 में बाबुल की मीनार की कहानी है। लोग एक साथ मिलकर परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारिता का षड़यंत्र करने लगे। उनके घमण्ड के कारण उन्होंने मीनार का निर्माण किया और उत्पति 9:1 अनुसार पृथ्वी में भर जाने की आज्ञा का उल्लंघन किया।

परमेश्वर ने उत्तरस्वरूप उनकी भाषाओं में विविधता डाल दी ताकि वे एक दूसरे की भाषा न समझ सके ओर वह सम्पूर्ण संसार में फैल गए।

2. उत्पति 12वां अध्याय से बाकी उत्पति की शुरूआत है कि कैसे परमेश्वर ने चार मनुष्यों को इस्तेमाल किया। ये पुरूष अब्राहम, इसहाक और युसुफ हैं जिन्हें यहूदियों के पिता के तौर पर जाना जाता है।

इनमें से पहला अब्राहम है जिसे बाद में अब्राहम कहा गया (अब्राहम को उसके पुत्र इसहाक की उत्पति तक अब्राहम के नाम से जाना गया) वह यूदी राष्ट्र का पिता है, यहूदियों का पिता।

उत्पति 12:1–4 पवित्र देश के लिए अब्राहम की बुलाहट– क्या अब्राहम को इसलिए बुलाया गया कि वह एक खास व्यक्ति था? नहीं वह एक मूर्तिपूजक ओर डरपोक था :– दो अवसरों पर उसने स्वयं को बचाने के लिए अपनी पत्नी को त्याग दिया था। इससे प्रदर्शित होता है कि कैसे परमेश्वर स्वयं पापियों तक पहुंचा। हालाकि हम यहां यह पढ़ते हैं कि अब्राहम ने विश्वास द्वारा अपना घर छोड़ा और परमेश्वर के पीछे चल पड़ा। इब्रानियों 11:8–19 में देखे अब्राहम एक ऐसे व्यक्ति के तौर पर जाना गया जिसका विश्वास महान था।

उत्पति 12:1–3 परमेश्वर ने अब्राहम के साथ एक वाचा बांधी। यह याद करने के लिए महान आयते हैं। इसे अब्राहम की वाचा के तौर पर भी जाना जाता है जहां पहले परमेश्वर ने यह प्रकट किया कि कैसे वह मनुष्यों के साथ शांतिपूर्ण सम्बंध स्थापित करेगा। वह अब्राहम और उसकी पीढ़ियों के द्वारा उद्धार की योजना को पूर्ण करेगा। यीशु अब्राहम का वंशज था। उसने लोगों को रखा जो इब्रानी या इस्राएली, और बाद में यहूदी कहलाये, इसके अलावा वे परमेश्वर के लोग भी कहलाये जिनके साथ परमेश्वर ने कार्य किया।

उत्पति 15:1–21 अब्राहम के साथ परमेश्वर ने लोहू द्वारा वाचा को पक्का किया। इससे वाचा अधिकारिक ठहरी। वाचा परमेश्वर और मनुष्य के मध्य अनुबंध के समान है। अधिकतर वाचाये परमेश्वर द्वारा वायदे हैं और इसे पूर्ण होने के लिए मनुष्य से कुछ भी अपेक्षा नहीं की जाती है। हालांकि कुछ वाचाएं जैसे खतना मनुष्य द्वारा की जाने वाली क्रिया है। देखें अध्याय 17 नीचे जो कि खतने की वाचा है।

उत्पति 15:4 अब्राहम से एक संतान की प्रतिज्ञा की गई थी, यद्यपि अब्राहम एक विश्वास का व्यक्ति था फिर भी कई बार उसने संदेह किया। अब्राहम ने सोचा कि वे और उसकी पत्नी काफी वृद्ध हो चुके हैं। हम सीखते हैं कि कई अवसरों पर हमारा विश्वास कमजोर हो जाता है, लेकिन यह पुनः मजबूत होता है। ऐसा हम सभी के साथ होता है।

उत्पति 16 अब्राहम के अविश्वास की कहानी है, जहां अब्राहम और उसकी पत्नी ने अपनी योजना अनुसार परमेश्वर के विरूद्ध सोचा और अब्राहम ने अपनी दासी के द्वारा एक पुत्र को जन्म दिया, जो कि इशमाइल था। हालांकि इब्रानियों 11:8 में अब्राहम को विश्वास का पुरूष कहा गया। हम देखते हैं कि कई अवसरों पर हमारे समान उसका विश्वास भी कमजोर हुआ। अब्राहम के पुत्र इशमाइल का जन्म हुआ और वह अरब राष्ट्र का पिता है। जिनसे मुस्लिम उत्पन्न हुए जो कि आज इस्राएलियों के शत्रु हैं। अविश्वास की इस घटना का परिणाम इस्राएल के लिए खतरनाक शत्रु के रूप में पाया जाता है।

उतपति 17 खतने की वाचा के विषय बताती है। आयत 1–6 परमेश्वर द्वारा अब्राहम से 99 वर्ष की आयु में एक वायदे के विषय में है, जहां परमेश्वर ने उसे एक पुत्र रूपी संतान देने के साथ–साथ उसका नाम अब्राहम कर दिया। और उसे राष्ट्रों का पिता होने के पूर्व में दिये वायदे को याद किया।

परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंशजों को आशीषित करने का वायदा किया। वह आशीष यीशु है और हमारा उद्धार यीशु के द्वारा है।

9–14 वीं आयत में हम देखते हैं कि खतने की वाचा है जहां इब्रानी लोग परमेश्वर के विशेष चुने हुए या अलग किये हुए लोग हैं। खतने के द्वारा यह प्रदर्शित होता है कि परमेश्वर के लोग अन्य लोगों से अलग किये हुए हैं ठीक उसी प्रकार

जैसे अभी मसीह लोग बपतिस्मा लेते हैं। नया नियम भी यही सिखाता है कि हम मसीह लोग इस संसार में तो हैं परन्तु इस संसार के नहीं हैं। हमारा वास्तविक घर स्वर्ग में परमेश्वर के साथ हैं। देखे ख्हन्ना 17:14–16 और 18:36

15–19 परमेश्वर ने सारा को 90 वर्ष की आयु होने के बावजूद एक संतान के साथ आशीषित करने का वायदा किया और उसका नाम भी सारा कहा जो कि सटीक है सारा के लिए क्योंकि इस नाम का अर्थ है राजकुमारी और उसे राजाओं की माता होना है।

17:17 में पुनः अब्राहम के विश्वास की कभी प्रभु पर जब उसने यह संदेह किया की सारा कभी माँ बनेगी। इस संतन का नाम इसहाक रखा जाना था जिसका अर्थ है '' वायदों का पुत्र'' और एक वर्ष के भीतर ही उसका जन्म होना था।

उत्पति 18–19 अध्यायों में सोदोम और गोमोरा के विषय में एक भयानक कहानी है कि मनुष्य कैसे दुष्ट हो सकते हैं और कैसे परमेश्वर क्रोध में न्याय भेज सकते हैं।

उत्पति 18:1–15 एक स्वर्गीय भेंट करने की घटना का विवरण देता है। 3 आयत में अब्राहम ने इस बात की पुष्टि की कि परमेश्वर उससे मिलने आये थे। अब्राहम ने अपने मिलने आने वालों की मेजबानी की, और उसे फिर से कहा गया कि वह आने वो वर्ष में एक पिता होगा। हम देखते हैं कि सारा ने यह समाचार सुना, बहुत ही अद्भुत और अविश्वसनीय कि सारा हंसी। 14वीं आयत में परमेश्वर की प्रतिक्रिया देखते हैं जब उसने पूछा ''क्या परमेश्वर के लिए कुछ भी कठिन है?'' लूका 1:34–38 में पढ़ें कैसे इस प्रश्न का उत्तर दिया गया है।

सोदोम और गोमोरा की कहानी अगली है। उत्पति 18:20 में परमेश्वर ने सोदोम और गोमोरा के लोगों के पापों के प्रति अपनी नाराजगी प्रकट की ठीक उसी प्रकार जैसे उत्पति 6:5 में नूह के समय में परमेश्वर नाराजगी प्रकट की थी। 21वीं आयत में परमेश्वर ने कहा किवे नाश होने के योग्य हैं। उनके पाप बहुत थे, और वे समलैंगिकता में भी पाये जाते थे जिससे परमेश्वर अत्यंत क्रोधित होते हैं। यह पाप परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए खूबसूरत विवाह के तोहफे पर आक्रमण है। 9:22–23 बताती है कि कैसे अब्राहम ने परमेश्वर के सामने निवेदन किया। हम यहाँ यह सीखते हैं कि परमेश्वर से याचना करना तब तक सही है जब यह सम्मानपूर्वक और सही कारण से की जाए। ध्यान दे कि अब्राहम द्वारा की गई याचना स्वयं के लाभ के लिए नहीं थीं, बजाए इसके वह सोदोम ओर गोमोरा में निर्दोष लोगों को बचाने के लिए थी। अब्राहम की याचना परमेश्वर की धार्मिकता पर आधारित थी और यही चाचना उसके द्वारा की गई थी।

उत्पति 19 बताता है कि कैसे परमेश्वर ने लोगों के भयंकर पापों के कारण शहर को नष्ट किया, केवल लूत का परिवार ही विनाश से बचाया गया। हम पढ़ते हैं कि दण्ड इतना अधिक भयावह था कि आग और गंधक के द्वारा शहर का विनाश किया गया। (उत्पति 19:24)

हम यह भी देखते हैं कि बचाये जाने में अनाज्ञाकारिता के कारण लूत के परिवार को भी दण्डित किया गया। उन्हें निर्देश दिया गया था कि वे पीछे न देखें, परन्तु लुत की पत्नी ने निर्देश को नहीं माना और वह नमक का खम्भा बन गई। उत्पति 19:17, 26

उत्पति 19:30–38 एक शर्मनाम कहानी के विषय में बताती है जो लूत और उसकी दोनों बेटियों की हैं। यह कहानी बताती है कि कैसे लूत की बेटियों ने परमेश्वर पर भरोसा नहीं रखा इसलिए उन्होंने लूत को नशा पिला कर उसके साथ सो गई ताकि उनकी संतान उत्पन्न हो। उन दोनों के एक–एक पुत्र हुए जो दो राष्ट्रों के पिता हुए, मोआब और अम्मोन। यह दोनो राष्ट्र यहूदियों के शत्रु बन गए।

उत्पति 20 परमेश्वर की दृष्टि में प्रार्थना के महत्व की कहानी है। हम यहां पढ़ते हैं कि कैसे अब्राहम ने अपने प्राण को बचाने के लिए अपनी पत्नी को अबीमेलेक को सौंप दिया था। इससे पहले कि अबीमेलेक सारा के साथ यौन सम्बन्ध बनाता परमेश्वर ने उसे चेतावनी दी कि वह मर जाएगा; अब्राहम को अबीमेलेक के लिए प्रार्थना करनी पड़ी।

एक सामर्थी कहानी जो परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठता और प्रार्थना की ताकत और महत्व को प्रकट करती है।

उत्पति 21 वायदा किए हुए संतान इसाहक का जन्म लेना। परमेश्वर सदैव अपने वायदों को पूरा करता है। तीतुस 1:2 के अनुसार परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता।

उत्पति 22 परमेश्वर इसहाक को बलिदान करने की आज्ञा देता है। हम यहां देखते हैं कि क्यों अब्राहम को महान विश्वास का पुरूष कहा जाता है। क्योंकि उसने परमेश्वर की आज्ञा को मान कर इसहाक को बलिदान चढ़ाने की तैयारी की। हम देखते हैं कि अंतिम समय पर परमेश्वर ने इसहाक के स्थान पर बलिदान के लिए पशु का प्रबंध किया। यह यीशु मसीह को हमारे पापों के लिए क्रूस पर बलिदान चढ़ाने के द्वारा यीशु मसीह की उपलब्धता को बताहा`।

उत्पति 24 इसहाक को याकूब का पिता होने से अधिक नहीं जाना गया। अब्राहम ने अपने सेवक को अपने गृहदेश भेजा ताकि वह इसहाक के लिए एक पत्नी को चुन सके ताकि इसहाक स्थानीय या किसी विदेशी को पत्नी न बनाये। बाद में हम देखेंगे कि कैसे विदेशी पत्नियों ने परमेश्वर के लोगों को संकट में डाला। अब्राहम परमेश्वर की इच्छा जानता था और उसने इसका पालन किया। हम कैसे परमेश्वर की इच्छा को जान सकते हैं? बाईबल पढ़ें और प्रार्थना करें कि परमेश्वर बाईबल की गहराईयों के अर्ि आपको बताये।

उत्पति 25 अब्राहम की मृत्यु और इसहाक के जुड़व0ां बच्चों का जन्म होना। इसहाक से याकूब और एसाव उत्पन्न हुए। याकूब का अर्थ है –झूठा या धोखा देने वाला। याकूब का जन्म बाद में हुआ था परन्तु उसने एसाव से धोखा कर के पहिलौठे का अधिकार ले लिया और इसहाक को भी धोखा देकर पहिलौठे की आशीष को भी चुरा लिया। याकूब को एसाव को धोखो देने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि परमेश्वर ने पहले से ही उसे एसाव के उपर चुना था उत्पति 25:23। रोमियों 9:10–13 परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ है और वह चुनाव करता है किवह किसे प्रेम करे।

2. द्वितीय कुलपति (पिता) इसहाक है

उत्पति 26:2–4 में आशीष के वायदे का नवीनीकरण है जो कि वास्तव में अब्राहम से किया गया था। यह इस बात को याद दिलाना था कि आशीष मान्य है और हमेशा रहेगी। बाईबल में इसहाक के विषय में बहुत अधिक नहीं बताया गया है।

उत्पति 26:7 में इसहाक ने भी अपने पिता के समान अपनी पत्नी रिबेका का इंकार कर दिया था।

तीसरा पिता याकूब है। हम याकूब के विषय में उसके नाम से जानते हैं कि वह एक धोखाबाज या झूठा व्यक्ति था। वह बारह पुत्रों का पिता हुआ जो इस्राएल के बारह गोत्र हुए।

उत्पति 28 बताता है कि याकूब अपने भाई एसाव के पहिलौठे के अधिकार और आशीषों को चुराने के बाद उसके क्रोध से बचने के लिए अपने मामा लाबान के पास आराम भाग गया था। उत्पति 27:41–42 बताता है कि एसाव, याकूब को घात करना चाहता था। अब याकूब एक धोखेबाज और एक झूठा व्यक्ति था, परन्तु उसका मामा लाबान याकूब से भी अधिक कपटी था और उसने याकूब को कई बार धोखा दिया।

जैसे याकूब अपने भाई के क्रोध से भाग रहा था वह अकेला था और शायद अनजाने स्थान में यात्रा करने से भयभीत था। उत्पति 28:10–19 विवरण देता है है कि कैसे परमेश्वर उसके स्वप्न में आये और उसे पुनः आश्वस्त किया। हम देखते हैं कि यद्यपि याकूब निर्जन प्रदेश में अकेला था लेकिन वह वास्तव में अकेला नहीं था क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। मत्ती 28:20 हमें बताता है कि परमेश्वर सदैव हमारे साथ है। याकूब का पालन पोषण एक धनी परिवार में हुआ था परन्तु अभी वह बिल्कुल अकेला था। अभी उसके पास धन नहीं था और परमेश्वर ने अपना प्रेम प्रकट किया और उसे सांत्वना देते हुए फिर से आश्वस्त किया।

उत्पति 28:13–15 में परमेश्वर ने उस वायदे को दोहराया जो उसने वास्तव में अब्राहम को दिया था और परमेश्वर ने याकूब से कहा कि वह उस वायदे को पाने का उत्तराधिकारी है। परमेश्वर ने याकूब से कहा कि सब कुछ ठीक हो जाएगा और याकूब जीयेगा और उस प्रदेश में वापिस लौटेगा जिसकी वाचा अब्राहम और उसके वंशजों से की गई है। परमेश्वर ने याकूब को पुनः आश्वस्त किया कि याकूब का परिवार भी होगा।

उत्पति 29 याकूब के राहेल के प्रेम में पड़ने और उसे अपनी पत्नी के तौर पर पाने के लिए उसके मामा लाबान के पास सात वर्षों तक काम करने की कहानी को बताती है। हम यहां यह भी पढ़ते है कि कैसे विवाह हुआ और कैसे याकूब सुबह उठने पर जान पाया किया उसके मामा ने उसे धोखा दिया और उसके बिस्तर पर लिया थी न कि राहेल। आप क्या सोचते हैं कि ऐसा कैसे हुआ होगा? लाबान ने कहा कि राहेल को पाने के लिए उसे सात साल और कार्य करना होगा। सो याकू के लिए दो पत्नियों के साथ रहना कठिन था।

उत्पति 31:–5 याकूब के 12 वर्षो पश्चात् घर जाने का विवरण है।

1–3 आयत में हम देखते हैं कि यह याकूब को अपने मामा लाबान को छोड़ने का समय था। परमेश्वर ने लाबान का उपयोग किया िकवह याकूब को कहां से निकाले।

सबसे महत्वपूर्ण बात जो याकूब के साथ हुई वह उत्पति 32:11–28 में पाई जाती है ज बवह परमेश्वर से मिला। याकूब परमेश्वर से मिलने के समय एक भयभीत पुरूष था। उसे पता था कि उसे अपने भाई उसाव से मिलना है जो उसे घात करना चाहता होगा और 24 आयत बताती ळै िकवह बिल्कुल अकेला था। आमतौर पर एक व्यक्ति याकूब के समान एक स्थिति में होता है ताकि वह यह जान सके कि उसकी आवश्यकताएं परमेश्वर द्वार ापूरी होगी। परमेश्वर के सम्मुख आत्मसमर्पण करने से पहले याकूब पूरी रात्रि परमेश्वर से संघर्ष करता रहा। यह याकूब के लिए ठीक उसी प्रकार जैसे एक मसीही व्यक्ति परमेश्वर से मुलाकात करने के पश्चात् एक नये व्यक्ति के रूप में बदल जाता है। हम देखते हैं कि याकूब का नाम धोखेबाज से बदल कर इस्राएल कर दिया गया जो कि एक व्यक्ति के लिए अच्छा नाम था जो बारह गोत्रों का पिता था। यह उसके लिए परमेश्वर की संतान के रूप में नया जन्म था।

याकूब एक नया व्यक्ति था और उसे इस्राएल नाम दिया गया जिससे यह प्रदर्शित हुआ कि अ बवह एक झूठा व्यक्ति नहीं है। उसके बचे हुए जीवन में एक समस्या उसकी संतानों के द्वारा उत्पन्न हुई हम देखते हैं कि परमेश्वर हर प्रकार के पापियों के साथ कार्य करते हैं

अध्याय 24 में यह विवरण है कि कैसे याकूब की बेटी दीना का शकेम के शासक के पुत्र द्वारा बलात्कार किया गया। उसने दीना के साथ विवाह का प्रस्ताव रखा जिसे इस्राएल ने बुद्धिमानीपूर्वक उसके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया क्योंकि परमेश्वर के लोगों को केवल परमेश्वर के लोगों से ही विवाह करना था। इस विवाह का दूसरा अर्थ यह था कि इब्रानी लोग शकेम के राज्य में घुल मिल जायेंगे। इसका अर्थ यह कि परमेश्वर द्वारा जगत के उद्धार की योजना का समापन हो जाएगा। याकूब ने इस बात का भयानक बदला लिया और शकेम नगर और सभी लोगों के नाश कर दिया।

उत्पति 28 यहूदा के विषय भयावह कहानी को बताता है जो याकूब के पुत्रों में से एक था। जैसे हम अध्ययन करते हैं कि यहूदा कितना दुष्ट था तो हमें यह याद रखना चाहिए कि यीशु यहूदा की वंशावली से थे। एक बार फिर हमें यह याद दिलाया गया कि परमेश्वर किसी के साथ कार्य कर सकते हैं चाहे वह और उसका परिवार कितने भी दुष्ट क्यों न हो।

उत्पति 38:1–5 में विवरण है कि यहूदा कनानी व्यक्ति का मित्र बन गया और एक कनानी स्त्री के विवाह कर लिया जो कि एक पाप था।

उत्पति 3:1–5 में विववरण है कि यहूदा कनानी व्यक्ति का मित्र बन गया और एक कनानी स्त्री से विवाह कर लिया जो कि एक पाप था।

उत्पति 38:5–10 ओनान के विषय में दुखित कहानी को बताती है, जो यहूदा का पुत्र था। जिसने परमेश्वर की आज्ञा को नहीं माना और उसे मृत्यु के साथ दण्डित किया गया।

11–26 आयात में यहूदा की पुत्रवधु तामान की दुखद कहानी है। जब उसके पति की मृत्यु हुई तो उसके निश्चित अधिकार थे। यहूदा को अपने अन्य पुत्रों में से तामार के लिए एक पति की व्यवस्था करनी थी, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। इसलिए तामार ने इस मसले को अपने हाथ में ले लिया और यहूदा से गर्भवती हो गई। यहूदा ने तामार को मार डालने का सुझाव दिया हालांकि वह स्वयं भी इस कार्य में दोषी था। यह एक और कहानी है जो यह प्रकट करती है कि यीशु मसीह के पूर्वज कितने दुष्ट व्यक्ति हो सकते थे। क्यों महिला को ही मारा जाए और पुरूष को क्यों नहीं?

4. अंतिम पिता (कुलपति) युसूफ है जो किसी एक विशेष व्यक्ति है। वह बेजोड़ है क्योंकि उसके जीवन में कोई भी कलंक या बुराई नहीं था। वह एक नैतिक पुरूष था।

उत्पति 37 युसूफ की कहानी से शुरू होती है और कैसे परमेश्वर ने मिस्र में उसके रहने का मार्ग तैयार किया। युसूफ राहेल का प्रामि पुत्र था जो कि कई वर्षों तक बांझ थी जबकि उसकी बहन लिआ के कई बच्चे थे। याद रखे कि राहेल इस्राएल की पसंदीदा पत्नी थी और युसूफ, इस्राएल का प्रिय पुत्र था और सभी यह बात जानते थे। जैसे हम युसूफ की कहानी की शुरूआत करते है तो वह 17 वर्ष का था।

उत्पति 37:5–11 विवरण देता है कि युसूफ ने अपने परिवार से कहा कि उसने स्वप्न देखा है िकवे उसके सम्मुख झुकेगें और उसे समान देंगे। इस बात ने युसूफ के परिवार को उसके साथ बहुत अधिक क्रोधित नहीं किया। वह स्वप्न बाद में भविष्यवाणी के शब्द साबित हुए और पूर्ण भी हुए।

उत्पति 37:28 विवरण देता है कि युसूफ के भाईयों ने उसे कुछ इश्माएलियों को बेच दिया जो उसे मिस्र ले गए। परमेश्वर अपने लोगों के लिए मार्ग को तैयार करना चाहते थे ताकि वे मिस्र की ओर जा सके जहां उन्हें तब तक रहना था, जब तक की वे उस वायदे की भूमि को अधिकार में करने के लिए तैयार नहीं जाए, और यह परमेश्वर की योजना का हिस्सा है।

उत्पति 39:1 बताता है कि परमेश्वर ने युसूफ को आशीष दी और उसे पोतीफर के पास बेचे जाने दिया जो कि मिस्र के शासक फिरौन का एक महत्वपूर्ण अधिकारी था अब युसूफ विश्वासयोग्य था परमेश्वर के प्रति और परमेश्वर ने युसूफ को आशीष दी क्योंकि पोतीफर ने उसे अपने घर का अधिकारी ठहरा दिया था। हालांकि पोतीफर की पत्नी ने युसूफ को फुसलाने की कोशिश की, जब उसने पाया कि युसूफ विश्वासयोग्य रहा तो उसने युसूफ पर झूठा आरोप लगाया कि उसने उस पर हमला किया। युसूफ को कारावास भेज दिया गया जहां फिर परमेश्वर ने उसे आशीष दी और उसे कारावास का निरीक्षक बना दिया गया।

उतपति 40 में परमेश्वर द्वारा युसूफ को कारावास में डाले जाने के उद्देश्य को प्रकट किया। जब युसूफ कारावास में था तो ऐसा हुआ कि वो फिरौन के पिलानेहारे से जो कुछ ही समय के लिए था, से मुलाकात कर सका। युसूफ ने पिलानेहारे के स्वप्न का अर्थ बताया कि बहुत ही जल्दी उसे फिर से उसके कार्य पर नियुक्त किया जाएगा। इस कहानी में हम बाद में पाते हैं कि कैसे यह परमेश्वर की योजना का भाग था कि उसके लोग मिस में आ सके।

उत्पति 40:14 में युसूफ ने पिलानेहारे से कहा कि स्वतंत्र होने पर वह उसे याद रखे। उत्पति 40:23 में हम देखते हैं कि कैसे लोग उस पिलानेहारे के समान अविश्वासयोग्य होते हैं जो युसूफ को भूल गया था।

उत्पति 41 में विवरण है कि दो वर्षों के पश्चात् फिरौन ने एक स्वप्न देखा जिसका अर्थ कोई नहीं बता सका। तब पिलानेहारे ने याद किया कि युसूफ फिरौन के स्वप्न का अर्थ बता सकता है इसलिए उसने फिरौन को यह बताया और फिरौन ने युसूफ को कारावास से आजाद किया ताकि वह इस स्वप्न का अर्थ बता सके।

उत्पति 41:17–24 फिरौन ने युसूफ को अपना स्वप्न बताया। कि अकाल आने वाला है और उसने फिरौन को योजना भी दी कि कैसे वह इस समस्या से निपट सकता है और धनी बन सकता है। इस बात का श्रेय परमेश्वर को दिया गया।

आयतें 37–41 युसूफ को मिस्र का दूसरा सबसे ताकतवर व्यक्ति बना दिया गया। अब उसके पास ताकत थी कि वो अपने परिवार की रक्षा कर सके।

उत्पति 42 आकाल ने युसूफ ने भाईयों को बाध्य किया कि वे भोजन के लिए मिस्र में आये और वहां युसूफ ने स्वयं को अपने भाईयों पर प्रकट किया और उसका परिवार मिस्र में आ गया। यह उत्पति 15:13–14 में की गई भविष्यवाणी के प्रथम भाग की पूर्णता थी।

उत्पति 50 याकूब की मृत्यु के पश्चात् उसके भाईयों को यह भय था कि युसूफ उनसे बदला लेना चाहेगा, परन्तु आयतें 4–21 में याकूब ने अपने परमेश्वरीय हृदय को प्रकट किया और उन्हें उनके भविष्य के प्रति आश्वस्त किया।

आयत 20 एक महान आयत है, यह रोमन 8:28 के साथ मिलता है। यह आयतें हमारे लिए सांत्वना का कार्य करती है, जब कोई हमारे विरूद्ध गलत करता है।

उत्पति 50:25 युसूफ ने अपने मन की इच्छा प्रकट की कि उसकी हड्डियों को प्रतिज्ञा के देश में ही दफनाया जाए।

उत्पति की समाप्ति इस्राएलियों के मिस्र में होने के द्वारा समाप्त होती है जहां परमेश्वर चाहते थे िकवे रहे। वे न केवल मिस्र में रह रहे थे, परन्तु परमेश्वर ने ऐसा प्रबंध किया कि उनके साथ अच्छा व्यवहार किया गया।

उत्पति का सार

उत्पति दुनिया की शुरूआत हुई और यह श्रेष्ठ थी। मनुष्य ने पाप किया और बुराई जगत में आ गई। एक बार जब मनुष्य ने पाप करना शुरू किया तो वह रोक नहीं सका। हम बार बार देखते हैं कि परमेश्वर न्याय करने वाला है और वह पाप को दण्डित करेगा। हम भयानक न्याय को देखते हैं जैसे कुछ अवसरों पर ओनान के समान व्यक्तिगत लोगों पर दण्ड आया और दूसरे अवसर पर जगत के सभी लोगों के उपर परमेश्वर का दण्ड आया केवल नूह का परिवार ही बचाया गया।

प्रथम पाप के तुरंत बाद ही परमेश्वर ने यीशु के द्वारा मेल करने की प्रक्रिया शुरू कर दी और हम देखते हैं कि उसकी योजना को प्रकट किया गया। उसने इस्राएल को ऐसे लोगों के तौर पर चुना।

जिसने पूरे जगत के लिए उद्धार आ सके। बाईबल की प्रथम पुस्तक में ही हमें छुड़ाने की परमेश्वर की योजना को देखते हैं। हम देखते हैं कि मनुष्य अपनी स्वाभाविक दशा में ही पापमय है और स्वंय परमेश्वर के साथ अपने सबंधों को जोड़ पाने में अयोग्य है। बाकी पुराने नियम में यही कहानी जारी है कि कैसे परमेश्वर ने सब चीजों का प्रबंध किया ताकि सही समय पर जगत यीशु के पकट होने के लिए तैयार हो सके।

निर्गमन अवलोकन

(शीघ्र बाहर आना)

निर्गमन के दो मुख्य भाग है। पहला भाग अध्याय 1–18 में परमेश्वर द्वारा मूसा का उपयोग इब्रानी लोगों को मिस्र की दासता से बाहर निकालने के विषय में है। यह कहानी आगे यीशु मसीह द्वारा हमें पाप की गुलामी से बाहर निकालने की ओर ले जाती है। दूसरा भाग 19–40 अध्यायों में पाया जाता है जहाँ पर परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को दूसरे लोगों से भिन्न जीवन कैसे जीना है इस बात को सिनाई पहाड़ पर सिखाया गया है। परमेश्वर के लोग तब भी और आज भी दूसरों से भिन्न होने चाहिए। निर्गमन तब है जब परमेश्वर ने दस आज्ञाएँ दी और अपने लोगों को यह सिखाना शुरू किया कि कैसे वह सही रीति से परमेश्वर की आराधना करें।

मूसा बाईबल के महान व्यक्तित्वों में से एक है। मूसा एक नबी था। उसने बाईबल की प्रथम पाँच पुस्तकें और भजन संहिता 90 भी लिखा। वह लेवी था, जिसका अर्थ है कि वह पुरोहित के परिवार से था। वह 120 वर्षों तक जीवित रहा। व्यवस्थाविवरण 34:7 वह परमेश्वर के साथ बहुत ही नजरीकी से चला, लेकिन उसके पाप के कारण उसे दण्डित किया गया और वह प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश नहीं कर सका। मूसा परमेश्वर का एक महान व्यक्ति था। परन्तु वह भी एक पुरूष था जिसकी कई कमियाँ थी जैसे उसका क्रोध और वह एक हत्यारा था। मूसा भी अन्य लोगों के समान निर्गमन की शुरूआत उत्पति की समाप्ति के 430 वर्षों के बाद हुई। परमेश्वर का नियंत्रण है सभी घटनाओं पर और उसने यह रूप दिया कि यह समय है कि अब्राहम और उसकी संताने उस भूमि पर नियंत्रण के लिए आगे बढ़े जिसकी वाचा परमेश्वर ने की थी। हम यह स्पष्ट रीति से नहीं जानते हैं कि क्यों इब्रानी लोगों को 400 से अधिक वर्षों तक रहना पड़ा। एक कारण यह हो सकता है कि उन्हें एक राष्ट्र के समान पहचान देने के लिए। दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि उनकी संख्या को बढ़ने लिदया गया ताकि वह असंख्य और ताकतवर हो जाए कि वे प्रतिज्ञा के देश कनान को जीत सकें।

निर्गमन 1:1–2:10 मूसा का जन्म और आरम्भिक जीवन। युसूफ के समय में फिरौन द्वारा इब्रानी लोगों पर अनुग्रह किया। परन्तु 8–10 आयत में मिस्र में परिवर्त्तन हुआ और नये राजा इब्रानी लोगों से डरता था और उन्हें पसंद नहीं करता था। फिर्रान ने इब्रानियों का जीवन बहुत कठिन बना दिया। वास्तव में उसने इब्रानियों का जीवन इतना कठिन बना दिया कि वे मिस्र से निकल जाना चाहता थे। यह समय था कि इब्रानी लोग जाते और भूमि पर कब्जा कर लेते जिसकी प्रतिज्ञा अब्राहम से की गई थी। 11–14 आयतें बताती है कि कैसे मिस्रियों द्वारा शोषण से इब्रानियों को नियंत्रित करने का प्रयत्न किया गया।

अगली 15–22 आयतों में फिरौन ने आज्ञा दी की हर नवजात इब्रानी शिशुओं को मार डाला जाए। यही घटना 1500 वर्षों पश्चात यीशु के जन्म के समय में हुई मत्ती 2:16।

इस कहानी से हम मसीह नैतिकता में एक पाठ सिखते है और यही पाठ राहाब वेश्या के जीवन से पुनः बलपूर्वक दिया गया है। पाठ यह है कि झूठ कहना सभी उदाहरणों पर पाप है केवल एक अनुरोध/उदाहरण में नही। जब हमें स्वीकृति दी गइ हो, हो सकता है कि आदेश दिया गया हो कि हम झूठ बोले ताकि किसी निर्दोष की हत्या रूक जाए। हत्या एक बेहद गंभीर पाप है।

निर्गमन 1:16 फिरौन ने आज्ञा दी कि इब्रानी धाईयाँ सभी बालक शिशुओं के मार डाले। आयत 17 में हम देखते हैं कि धाईयों ने फिरौन की आज्ञा नहीं मानी। आयत 18–19 में धाईयों ने फिरौन से झूठ बोला। आयत 20–21 में परमेश्वर ने बच्चों को नहीं मार डालने के लिए धाईयों को पुरस्कृत किया।

पुनः यहोशु 2:1–4 में परमेश्वर ने वही पाठ सिखाने के लिए हमें एक अन्य कहानी दी है। आयत 4 बाताती है कि कैसे राहाब ने उसके घर में छिपे हुए इब्रानी जासूसों के प्राण बचाने के लिए झूठ बोला। यहोशू 6:25 में हम पाते हैं कि जो कुछ राहाब ने किया उस कारण वह और उसका घराना इब्रानियों के साथ रहने की अनुमति पा सके। इब्रानियों 11:31 में राहाब द्वारा किए गए कार्य को परमेश्वर पर विश्वास कहा गया। याकूब 2:25 कहता है कि यह झूठ विश्वास का एक

कार्य था जिसके द्वारा राहाब को सही ठहराया गया। मत्ती 1:5 बताती है कि राहाब यीशु की पूर्वजों में से एक थी। हम देखते हैं कि राहाब को आशीषित किया गया क्योंकि उसने गुप्तचरों को बचाने के लिए झूठ बोला था।

''याद रखें हमें कभी झूठ नहीं बोलना है केवल तभी जब यह किसी निर्दोष की हत्या को रोक सके''

अध्याय 2:1–10 बताता है कि कैसे मूसा मृत्यु से बचाया गया और फिरौन की बेटी के द्वारा उसका लालन पोषण किया गया। परमेश्वर ने ऐसा प्रबंध किया कि मूसा को उसकी जन्म देने वाली माँ द्वारा ही पाला पोषा गया और इस कार्य के लिए फिरौन की बेटी द्वारा उसकी माता को वेतन भी दिया गया। मूसा फिरौन के घर में पाला–पोषा और शिक्षित किया गया। उसने अपने जीवन के प्रथम चालीस वर्ष राजा के घर में शाही परिवार का सदस्य हाने के नाते सौभाग्य से बिताया।

अध्याय 2:11–15 मूसा को यह मालूम था कि वो एक इब्रानी है और जब उसने एक मिस्रि को एक इब्रानी को पीटते देखा तो वह क्रोधित हो गया और उसने मिस्री पुरूष की हत्या कर दी। इस हत्या के कारण मूसा को मिस्र से भागने के लिए मजबूर होना पड़ा। वह मिद्यान (वर्त्तमान में सऊदी अरब) को भाग गया, और वहाँ उसने जेयरो की बेटी जिप्पोरा से विवाह कर लिए और चालीस वर्षों तक वहाँ बसा रहा। इस दौरान इब्रानियों को लगातार मिस्र में सताहट का सामना करना पड़ा।

उत्पति 2:16–4:17 मूसा के अगले 40 वर्षों तक निर्जन प्रदेश में रहने की कहानी को बताते हैं। अध्याय 3:1–6 मूसा की मुलाकात परमेश्वर से हुई। इसे ईश्वर काल कहा गया है। जिस तरीके से परमेश्वर मूसा के सम्मुख प्रकट हुए तो मूसा यह जान पाया कि परमेश्वर उसके साथ उपस्थित है। ऐसा पहले अब्राहम और याकूब के साथ हुआ था। याद रखे परमेश्वर आत्मा है, वह अदृश्य है (कुल्लुसियों 1:15)। परमेश्वर अकसर मनुष्य से अपने उद्देश्य के लिए मिलते है। केवल परमेश्वर ने ही इन मनुष्यों को कुछ देखने के लिए अनुमति दी ताकि वे उसे देख सके क्योंकि हम मनुष्य अपनी गिरी हुई दशा में उसके मुख का सामना नहीं कर सकते। आयत 7–10 मूसा को परमेश्वर ने बुलाया कि वह परमेश्वर के लोगों को मिस्र से वाचा के देश में ले जा सके। देखे 3:11 में मूसा की बुलाहट के प्रति बुरी प्रतिक्रिया। यशायाह 6:8 देखें जहाँ एक विश्वासी को परमेश्वर की बुलाहट की सही प्रक्रिया है। बाकी तीसरा अध्याय में हम मूसा और परमेश्वर की बहस को देखते हैं कि मूसा कैसे वह एक पुरूष हो सकता है जो लोगों को मिस्र से बाहर ले जा सके।

अध्याय 4:1–5 बताता है कि कैसे मूसा और परमेश्वर बहस करते रहे, जब तक परमेश्वर क्रोधित नहीं हो गए। इसलिए परमेश्वर ने मूसा के भाई हारून को उसकी ओर से बोलनेवाला ठहराया और मूसा मिस्र को लौट गया। वह लोगों से बोला कि परमेश्वर उनकी तकलीफों को जानता है और वह उन्हें गुलामी से आजाद करवाने जा रहा है। 31 आयत में देखते हैं कि लोग प्रसन्न हुए।

पढ़े निर्गमन 4:24–26 एक उदाहरण कि कैसे परमेश्वर की आज्ञा माननी ही चाहिए। ऐसा प्रतीत है कि मूसा ने अपने पुत्र का खतना न करके परमेश्वर की आज्ञा को नहीं माना था।

निर्गमन 5 मूसा और फिरौन के मध्य युद्ध। मूसा ने फिरौन से कहा कि वह लोगों को तीन दिन यात्रा की अनुमति दे ताकि वे जंगल में जाकर परमेश्वर की आराधना कर सके। 6–9 आयत में फिरौन ने लोगों के कार्य को और अधिक कठिन बना कर इसका जवाब दिया। आयत 21–23 में ऐसा प्रतीत हुआ कि लोग निरूतर परमेश्वर पर भरोसा रखेंगे लेकिन ऐसा नहीं हुआ और उन्होंने मूसा से विवाद किया यहाँ तक कि मूसा भी परमेश्वर की तरफ देखने लगा। यह कुछ ऐसा है जो हमें कभी नहीं करना चाहिए। यह परमेश्वर पर भरोसे की कमी को दर्शाता है।

निर्गमन 6:1–8 परमेश्वर लोगों के साथ धीरज से व्यवहार करते है। परमेश्वर ने उन से वायदा किया कि वो उन्हें गुलामी से आजाद कराके उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश कनान में ले जाएगा। उसने यह भी वायदा किया कि वो उनका परमेश्वर होगा। परमेश्वर ने यह तब भी किया जब कि मूसा और लोग उसके विरूद्ध हो गये थे। इस से यह पता चलता है कि परमेश्वर बहुत प्यार करने वाले, क्षमा करने वाले और धीरज रखने वाले है।

निर्गमन 6:28–12:30 दस विपत्तियों के विषय में बताती है जो कि फिरौन और मूसा के मध्य दस लड़ाईया है। अध्याय 8:1–15 पढ़े और देखे कि कैसे यह मूसा और फिरौन के मध्य प्रतीकात्मक रीति से हो रहा था। परमेश्वर ने मूसा के द्वारा एक आश्चर्यकर्म किया और तब फिरौन के जादूगरों ने शैतान की सामर्थ के द्वारा आश्चर्यकर्म की नकल की। यह हमारे लिए एक शिक्षा है कि शैतान मूसा के समय भी सामर्थी था और आज भी है। हम देखते हैं कि हर विपत्ति के पश्चात् परमेश्वर ने फिरौन के मन को कठोर कर दिया जिस कारण फिरौन ने मूसा का विराध किया। निर्गमन 4:21 सिखाता है कि परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ है और परमेश्वर ने ही फिरौन के मन को कठोर किया ताकि वह मूसा के निवेदन को ठुकरा दे।

अंमिम विपति का वर्णन अध्याय 12 में किया गया है, यह मिस्र में पशुओं तथ मनुष्यों के पहिलौठे को घात किया जाना है। इस कारण फिरौन ने इब्रानियों को देश से निकल जाने दिया।

फसह के पर्व की कहानी हमें बताती है कि कैसे एक निर्दोष मेमने के लहू को दरवाजे की डेवढ़ी पर छिड़का गया जिससे उस घर में रहने वाले लोग मृत्यु से बचाये गए। फसह का मेमना हमारे उद्धार की ओर इशारा करता है। यह

परमेश्वर के निर्दोष मेमने का लहू है जो मसीहियों को नरक में अनन्त मृत्यु से बचाता है। याद रखे इब्रानियों 9:22 में बाईबल बताती है कि बिना लहु बहाये पापों से क्षमा नहीं मिल सकती है।

निर्गमन 12:1–20 में परमेश्वर ने यहूदियों को यह निर्दश दिया कि कैसे आने वाले समय में उन्हें फसह के पर्व को मनाना है।

निर्गमन 12:29 बताती है कि मध्यरात्रि में मिस्र के सभी पहले जन्मे पुरूषों की हत्या कर दी गई, हरेक उस घर में जहाँ पर दरवाजे की डेवढ़ी पर लहू नहीं छिड़का गया था। जैसे परमेश्वर ने दरवाजे की डेवढ़ी पर लहू को देखा और परिवार को छोड़ दिया ठीक उसी प्रकार जब आज परमेश्वर मसीहियों को यीशु के लहू से ढका हुआ देखता है तो वह हम दूसरी मृत्यु जो कि नरक है, से बचाता है।

इब्रानी लोगों ने मिस्र छोड़ दिया। निर्गमन 13:17–22 बताती है कि कैसे स्वंय परमेश्वर ने लोगों को अगुवाई प्रदान किया, दिन में बादल और रात्रि में अग्नि के खम्भे के द्वारा। आयत 19 बताती है कि कैसे उन्होंने युसूफ के निवेदन को याद रखा और उसकी हड्डियों को अपने साथ ले गये (उत्पति 50:25)।

निर्गमन 14:4 यह बताता है कि परमेश्वर ने फिरौन के मन को फिर से कठोर कर दिया और उसने इब्रानियों का पीछा करने का निर्णय किया। 10–12 आयत इब्रानी लोगों द्वारा परमेश्वर के विरूद्ध की गई शिकायत के विषय बताती है।

निर्गमन 14 लाल सागर पार करने की कहानी है। फिरौन ने सोचा कि उसने इब्रानियों को सागर के कारण फसा लिया है, परन्तु परमेश्वर ने मूसा को सार्मथ्य दिया कि वह सागर के पानी के मध्य रास्ता निकाल पाये ताकि इब्रानी लोग बच सके। फिर उसने पानी को फिर से बहने दिया और मिस्र की सेना डूब गई। तो एक बार फिर परमेश्वर ने अपनी प्रजा को बचाया। 31 आयत बताती है कि कैसे फिर से इब्रानी लोग परमेश्वर पर विश्वास कर पाये।

अध्याय 15:1–22 बताता है कैसे लोग परमेश्वर की स्तुति करते हुए नाचने गाने लगे। इसे मूसा के गीत के तौर पर जाना जाता है। लोग मूसा ओर परमेश्वर से तभी तक प्यार किये जब तक उनका सामना 22–24 आयत में वर्णित समस्या से नहीं हुआ। हम देखते हैं कि लोगों का परमेश्वर पर विश्वास नहीं था और हर बार जब उनकी इच्छानुसार चीजे नहीं होने पर वे परमेश्वर के विरूद्ध शिकायत करते थे। 25 आयत फिर हमें बताती है कि कैसे परमेश्वर ने उसके लोगों को अच्छा पानी पीने को दिया।

अध्याय 16 बताता है कि कैसे परमेश्वर ने स्वर्ग से मन्ना और बटेर के रूप में भोजन दिया। आयत 1–5 में एक बार फिर यह बताया गया है कि कैसे लोगों ने भूखे होने पर फिर से परमेश्वर की शिकायत की। लोगों ने फिर से परमेश्वर पर अपने विश्वास की कमी को दर्शाया। उनके शिकायत करने के बावजूद भी परमेश्वर ने उन्हें मन्ना और बटेर जैसा भोजन दिया।

परमेश्वर ने उनके प्रतिदिन की जरूरतों को आवश्यकतानुसार पूरा किया। लोगों को परमेश्वर पर भरोसा रखना सिखाया गया और सब्त के दिन को छोड़ केवल एक ही दिन के लिए इक्ट्ठा करने को बताया गया। जब तक वे प्रतिज्ञा के देश में नहीं पहुँच गये, परमेश्वर ने उन्हें यही भोजन प्रदान किया।

अध्याय–17 में फिर से लोग परमेश्वर और मूसा के विरूद्ध कुड़कुड़ाने लगे, क्योंकि उन्हें पानी चाहिए था। अन्त में वे सिनाई पर्वत पर पहुँचे जहाँ वे बहुत दिनों तक रहे, और परमेश्वर ने उन्हें सिखाया कि कैसे वे परमेश्वर की आराधना करें और कैसे वे परमेश्वर के नियमों के प्रति आाकारिता से जीवन को बिताये।

अध्याय–19 निर्गमन की पुस्तक के दूसरे भाग की शुरूआत है जहाँ परमेश्वर ने लोगों को सिखाना शुरू किया। यह शिक्षण व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के दौरान भी चलती रही जब तक कि वे प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश नहीं कर गये। परमेश्वर ने इब्रानियों को सिखाया कि कैसे वे उसके लोग होकर जी सकते है। एक ऐसे लोगों का समूह जो संसार से अलग है। इब्रानी लोग वास्तविकता में मिस्र में रहने के दौरान मूत्तिपूजक थे और उन्हें अपने परमेश्वर के विषय में सिखाये जाने की आवश्यकता थी।

जैसे पुराना नियम सिखाता है कि परमेश्वर के लोग संसार से भिन्न है। उसी तरह नया नियम भी सिखाता है कि मसीहियों को संसार से अलग जीवन जीना है। एक चिन्ह जो यह प्रदर्शित करता है कि यहूदी लोग अलग है वह यह था कि पुरूष लोगों का खतना किया गया था। (देखे उत्पति 10–14) आज सभी मसीहियों का बपतिस्मा हुआ है जो मसीहियों को मसीही होने का परिचय करवाता है। और हमें संसार से अलग करता है।

अध्याय 20–23 में परमेश्वर ने लोगों के साथ एक वाचा को बाँधा जब उसने उन्हें नियम और उनकी आज्ञाकारिता के लिए आशीषों की प्रतिज्ञाएँ दी

1. यहाँ पर तीन भिन्न प्रकार के नियम दिये गए है जिन्हें हम पुराना नियम में पाते हैं। वे इस प्रकार है :

   A. अनुष्ठानिक नियम वे नियम है जो यहूदियों को एि गए कि कैसे वे पुराने नियम के दिनों में परमेश्वर की आरधना करं। इन नियमों का पालन करने के द्वारा मंदिर में आराधना और बलिदान कैसे करना है, यह निश्चित

होता था। मसीही लोग इन नियमों का पालन नहीं करते है क्योंकि हम पुरानी वाचा के अधीन नहीं है और न ही पुराने नियम के दिनों के समान आराधना करते हैं। हम मसीही लोग नई वाचा के अधीन है।

B. नागरिक नियम वे नियम है जो बताते है कि कैसे सरकार लोगों के ऊपर शासन करें। हम इन नियमों का पालन नहीं करते है क्योंकि वे वास्तविक देश इस्राएल के लिए थे जो आज अस्तित्व में नहीं है।

C. नैतिक नियम हमारे लिए पालन करने के लिए दिये गए है। यह नियम हमें बताते है कि कैसे हम परमेश्वर की आज्ञा का पालेन करें। दस आज्ञाओं को पालन करना चाहिए।

2.परमेश्वर ने हमें दस आज्ञाएँ दी जो आज भी हमारे ऊपर अधिकारिक है।
आइए इन्हें देखें।

दस आज्ञाएँ

1. तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना। यह आज्ञा हम जिसकी आराधना करते है उसके प्रति है। इसका अर्थ है कि हम पुराने नियम के परमेश्पर के अलावा और किसी की भी आराधना नहीं करते है।
2. तू अपने लिए कोई मूर्त्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में है। तू उनको दण्डवत न करना और न उनकी उपासना करना। यह आज्ञा हम कैसे आराधना करते है उसके प्रति है। हम मूर्त्तियों जैसे क्रूस या चिन्ह की आराधना करते है।
3. तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना, क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा। हमेशा परमेश्वर का नाम सम्मान से लेना चाहिए। सामान्य बातचीत में परमेश्वर के नाम का उपयोग नहीं करना चाहिए। परमेश्वर के नाम का दुरोपयोग का एक उदाहरण है तब है जब हम लापरवाही से कहते है ''हे प्रभु''।
4. तू विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना। यह हमारे लिए इस प्रकार है कि कलीसिया जाकर मिल कर आराधना करें। दया के कार्य करके अपने परिवार समेत आनन्दित हों।
5. तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिस से जो देश तेरा परमेश्वर तुझे देता है उस में तू बहुत दिन तक रहने पाए। इसका अर्थ यह भी है कि हम अपने अगुवों का सम्मान करें (लैव्यवस्था 19:32)।
6. तू खून न करना। 1 यूहन्ना 3:15 हमें सिखाता हे कि अपने भाई से घृणा करना हत्या के समान है।
7. तू व्यभिचार न करना। आप इस आज्ञा का उल्लंघन अपनी आँखों या व्यभिचार की कल्पना भी व्यभिचार है देखे मत्ती 5:28।
8. तू चोरी न करना। यहाँ पर चोरी के कई उदाहरण है जैसे खरीदारी से अधिक की रसीद मांगना, जब काम के लिए आपको भुगतान किया जाए और आप सो रहे है इत्यादि।
9. तू किसी के विरूद्ध झूठी साक्षी न देना। झूठ न बोले, यहाँ पर कोई भी झूठ छोटा नहीं है क्योंकि हर झूठ भयानक है। एक झूठ सम्पूर्ण भरोसे को हमेशा के लिए बर्बाद कर देता है।
10. तू किसी के घर का लालच न करना, न तो किसी स्त्री का लालच करना, और न किसी के दास–दासी, वा बैल गदहे का, न किसी की किसी वस्तु का लालच करनाद्य। परमेश्वर ने जो आप को दिया है उसी से संतुष्ट रहना चाहिए। आप दूसरे को अपने से अधिक फलवन्त हो तो देखकर ईष्या न करें। यह सही है कि आप परमेश्वर से ऐसा कुछ मांगे जैसे एक नयी कार, लेकिन यदि आप नयी कार नहीं पाते है तो भी संतुष्ट रहे। यदि आप के पड़ोसी को नयी कार मिले तो ईष्या न रखें।

अध्याय 24 से परमेश्वर ने विभिन्न नियमों को पालन करने के लिए दिया (जैसे सब्त के दिन के लिए और गुलामों के लिए नियम)
अध्याय 25–31 में परमेश्वर ने विस्तारपूर्वक मिलापवाले तम्बू को बनाने का निर्देश दिया जो कि एक बड़ा तम्बू था जहाँ परमेश्वर अपने लोगों के साथ रह सकें। मिलापवाले तम्बू का अर्थ है, रहने का स्थान देखे 25:8 जो हमें बताता है कि यह मिलापवाला तम्बू ही वह स्थान है जहाँ परमेश्वर अपने लोगों के साथ रहेगा। आयत–9 बताती है कि परमेश्वर अपने रहने के स्थान के प्रति बहुत ही सजग है कि उसका निवास स्थान किधर होगा और पुस्तक का अधिकार भाग इस बात को समर्पित है कि कैसे विस्तारपूर्वक मिलापवाले तम्बू की संरचना का निर्देश दिया गया है। हम सीखते है कि परमेश्वर ने यह निर्देश दिया कि कैसे हम उसके सम्मुख सही रीति से उपस्थित हो सके। परमेश्वर ने विस्तारपूर्वक मिलापवाले तम्बू की संरचना, सजावर और याजकों के वस्त्रों के विषय में निर्देश दिया। परमेश्वर चाहते है कि हम सही रीति से उसकी आराधना के लिए आए।
अध्याय–32 लोगों ने अपने वास्तविक हृदय को दिखाया क्योंकि जब मूसा परमेश्वर के साथ समय व्यतीत कर रहा था, तो लोगों ने सोने का बछड़ा बना कर उसकी आराधना करने लगे, आयतें 1–6। परमेश्वर और मूसा दोनों ही अत्याधिक क्रोधित हुए। आयतें 7–14 बताती है कि परमेश्वर ने सभी लोगों को नाश करके फिर से शुरू करने की धमकी थी। फिर से हम एक दूसरा उदाहरण देखते हैं कि एक व्यक्ति परमेश्वर के साथ बहस कर रहा है। आयत 14 हमें बताती है कि परमेश्वर नरम हो गये और उन्होंने इब्रानियों को छोड़ दिया।

आयते 19–20 बताती है कि मूसा का एक स्वभाव है और हम देखते है कि उसने क्या किया। आयतें 26–28 हम देखते हैं कि लोगों को दण्डित किया गया और 3,000 लोग मार डाले गए।

अध्याय 33:18–23 बताती है कि मूसा ने परमेश्वर का अनुग्रह पाया और परमेश्वर ने मूसा को अनुमति दी कि वो उसे देख सके। मूसा की फिर से मुलाकात परमेश्वर से हुई और उसे निर्देश दिया गया कि कैसे इब्रानी लोगों को जीना है। ध्यान दे कि यद्यपि परमेश्वर की कृपा दृष्टि मूसा पर थी। फिर भी परमेश्वर ने उसे उसकी अनाज्ञारिता के लिए प्रतिज्ञा के देश में नहीं जाने देने के द्वारा दण्डित किया।
अध्याय–35 वर्णन करता है कि कैसे लोगों ने स्वेच्छा से अपना सोना और मूल्यवान वस्तुएँ दी ताकि मिलापवाले तम्बू के लिए उनका उपयोग हो सके। वे इन सब वस्तुओं को अपने साथ मिस्र से लेकर आये थे जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी (देखे उत्पति 15:14)।

परमेश्वर ने मिलापवाले तम्बू को बनाने और आराधना के लिए एकदम सटीक विवरण दिया है। यह निर्देश हमें सीखाते है कि हम कैसे परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित हो। यह निर्देश हमें यह भी सिखाते हैं कि परमेश्वर के लोग दूसरे लोगों से भिन्न है और उन्हें अलग जीवन जीना है। यह मसीही लोगों के लिए भी सत्य है, हमें ऐसा जीवन जीना है जिससे यह पता चले कि हम यीशु मसीह के है।

लोगों को यह अनुमति नहीं थी कि वे परमेश्वर से मिलने के लिए अति पवित्र स्थान में प्रवेश कर सके। वर्ष में एक बार महायाजक को अनुमति थी कि वो लहू बलिदान के साथि परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में जा सके और लोगों के पापों की क्षमा मांग सके। यह एक सम्पूर्ण बलिदान नहीं था इसलिए इसे बार–बार दोहराना पड़ता था। बाद में यीशु मसीह परिपूर्ण बलिदान बना और अब फिर किसी बलिदान की आवश्यकता नहीं है। हम मसीह लोग सौभाग्यशाली है कि हम किसी भी वक्त चाहे दिन या रात हो, परमेश्वर से मिल सकते है और स्वंय बात कर सकते है। हमें किसी महायाजक की आवश्यकता नहीं है, हमारे और परमेश्वर के मध्य क्योंकि यीशु हमारा महायाजक है। यीशु मसीह पाप रहित थे जिसका अर्थ है कि क्रूस पर उनका बलिदान सम्पूर्ण बलिदान था जिसे पिता परमेश्वर द्वारा हमारे पापों की छुड़ौती के लिए स्वीकार किया गया।

निर्गमन अध्याय–40 में समाप्त होता है। 34–38 आयते परमेश्वर की महिमा के मिलाप वाले तम्बू में भरने के विषय में बात करती है जिसे परमेश्वर ने लैव्यवस्था 1:1 में आगे कहा।

लैव्यवस्था का अवलोकन

लैव्यवस्था का विषय यह विचार है कि पवित्र बनो – 1पतरस 1:16 और लैव्यवस्था 11:44–45।

लैव्यवस्था सिनाई पर्वत पर निर्गमन में शुय कहानी को आगे जारी रखती है। परमेश्वर इब्रानियों को सिखा रहे है कि कैसे उसे प्रसन्न करने वाला जीवन जी सके, कैसे उसके लोग बन सके। इब्रानी लोगों को दूसरे लोगों से अलग किए हुओं के समान जीने की आवश्यकता है। हम मसीही लोगों को भी जगत से भिन्न जीवन जीने की आवश्यकता है। यूहन्ना 15:19 परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के लिए जीने पर ध्यान देना चाहिए। हम मसीही लोग इस वर्तमान संसार के लिए नहीं किन्तु अनन्तता के लिए जीने की ओर ध्यान लगाते है। हमारा वास्तिवक घर परमेश्वर के साथ स्वर्ग में है। एक मसीही व्यक्ति अपना पुरूस्कार स्वर्ग में पाता है जबकि गैर मसीही लोग इस जीवन में ही पायेंगे है।

नियम इसलिए दिए गए कि इब्रानी लोग उनसे परमेश्वर की अपेक्षा को जान सके। अगर वे पूरी रीति से नियमों का पालन करते है तो वे स्वर्ग में प्रवेश कर सकते है, अपने कार्यों द्वारा भी, उन्हें किसी भी छुड़ानेहारे की आवश्यकता नहीं है। फिर भी लोग पूर्ण रीति से परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं कर सकते इसलिए हमें यीशु की आवश्यकता है कि वह हमें हमारे पापों से छुड़ाये।

लैव्यवस्था पढ़ना उबाऊ हो सकता है परन्तु यहाँ हमारे लिए शिक्षाएँ है। हम सीखते है कि :
1) हमारे ऊपर परमेश्वर का साथ है, दूसरे शब्दों में हमारा परमेश्वर हमारे जीवन में कार्यशील है।
2) हमारा परमेश्वर इस बात का ध्यान करता है कि हम कैसे उसकी आराधना करें और लैव्यवस्था में हम बहुत से निर्देश पाते है कि कैसे हम उसकी आराधना करें।
3) वहाँ पर परमेश्वर के लोगों और दूसरे लोगों के बलिदान में अन्तर था।

A. दूसरे लोग भविश्य जानने और झूठे देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बलिदान चढ़ाते थे।
B. इब्रानी स्वंय को पवित्र रखने के लिए बलिदान पर जोर देते थे। यह पाप से क्षमा मांगने का एक तरीका था। पुराने नियम का बलिदान अंतिम, निर्णायक बलिदान जो यीशु है की ओर इशारा करती है।

4) लेवी लोग पुरान नियम के याजक के तौर पर कार्य करते हैं, केवल महायाजक ही पवित्र स्थान में परमेश्वर की उपस्थिति में जा सकता था। इब्रानियों 5:5 के अनुसार अब हमारे पास महायाजक यीशु है और अब हम मसीही लोग किसी भी समय परमेश्वर की उपस्थिति में जा सकते है इब्रानियों 4:14–16।

A. केवल हम मसीही लोगों के पास ही यह अवसर है कि हम परमेश्वर तक पहुँच सके इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर हर समय प्रार्थना में हमसे मिलने के लिए तैयार है। यह मूर्त्तिपूजकों के साथ सत्य नहीं है क्योंकि वे परमेश्वर के पास नहीं पहुँच सकते है देखे यशायाह 59:2 और यूहन्ना 9:31। मूर्त्तिपूजक केवल तभी परमेश्वर के पास पहुँच सकते है जब वे पश्चाताप करें और अपना भरोसा यीशु पर रखें।

5) अब बलिदान की आवश्यकता नहीं, लेकिन अध्ययन के द्वारा हम बलिदान के विषय सीखते है। लैव्यवस्था हमें पाप के लिए लहू के बहाये जाने की महत्वपूर्णता को सिखाती है। देखे लैव्यवस्था 17:11। नया नियम भी हमें इब्रानियों 9:22 और 1यूहन्ना 1:7 में सिखाती है कि बिना लहू बहाये पापों की क्षमा नहीं है। मसीहियों का यह क्षमा यीशु मसीह द्वारा क्रूस पर लहू बहाने के द्वारा प्राप्त हुई है।

इन नियमों का अध्ययन क्यों? बहुत से मसीही कहते है कि हमें इन नियमों का अध्ययन करने की आवश्यकता नहीं क्योंकि अब हम नियमों के अधीन नहीं है। यह सही है कि अब नियमों के द्वारा हमारा न्याय नहीं होगा परन्तु अभी भी हमें नैतिक नियमों को जैसे दस आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। हमें नियमों की शिक्षाओं को व्यापक रीति से देखना चाहिए और उनका पालन करते हुए अपने आधुनिक समाज में उन्हें उपयोग में लाना चाहिए। वे नियम जो समयहीन है जैसे व्यवस्थाविवरण 25:4 और 25:13–16, निर्गमन 23:5 और 1–9 और लैव्यवस्था 25:14।

लैव्यवस्था का मुख्य विषय है :–

1) परमेश्वर पवित्र है जबकि हम मनुष्य पापी है। हमारा पापीपन दूसरे मनुष्यों का सामना करने का प्रमुख कारण है। लैव्यवस्था का संदेश है कि पाप से क्षमा और शुद्धिकरण है जिससे हम परमेश्वर के साथ संगति आ सकते है।

2) विधिया–लैव्यवस्था बाईबल की सबसे सवैंधानिक पुस्तक है। यहाँ पर कई प्रकार की विधिया है जो परमेश्वर द्वारा हमें मसीह की ओर ले जाने के लिए निर्धारित किए गए है। ताकि हम विश्वास द्वारा धर्मी ठहराये जाए। गलतियों 3:24 परमेश्वर की विधियाँ मनुष्य की उसकी भ्रष्टता को दिखाती है और हमें हमारे पापों का बोध कराती है। परमेश्वर की विधियों का पालन करना जीने के लिए एक अच्छा तरीका है।

A. हम यहाँ इस्राएल के खान–पान सम्बंधी विधियों को देखते है। बाद में प्रेरितों के काम 10:10–16 हम देखते हैं कि अब मसीही लोग कुछ भी खाने के योग्य है।

3) पाँच भेटें। लैव्यवस्था 1–7 परमेश्वर के लिए भेंटों के विषय में बात करती है। यहाँ पर पाँच भिन्न भेटें है। ये इस प्रकार हैः–

A. होमबलि भेंट (अध्याय 1:3–17) लोगों ने अपने आप को शुद्ध करने वाली अग्नि द्वारा समर्पित किया परमेश्वर के प्रति।

B. अन्नबलि भेंट (2:1–16) परमेश्वर को उनके जीवन के लिए धन्यवाद देना और उसकी सेवा के लिए अपने जीवन को भेंट चढ़ाना।

C. मेलबलि (3:1–17) परमेश्वर के साथ सहभागिता की आशीषों में भागीदार होना।

D. पाप बलि (4:1–5:13) क्षमा किए गये क्योंकि वे पापी थे।

E. दोष बलि (5:14–6:7) एपके द्वारा किए गये पापों के लिए वे क्षमा किए गए।

4) अध्याय 6:8–7:36 याजकीय अध्याय है जो कि पुराने नियम के याजक के विषय में है।

A. पुराना नियमें में याजक का पद बहुत महत्वपूर्ण था क्योंकि याजक परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में मध्यस्थ थे। यही कारण है कि लैव्यवस्था में याजके के विषय विस्तृत निर्देश दिए गए है। आज मसीह हमारे लिए हमारे मध्यस्थ का कार्य करते है और वह हमें परमेश्वर के पास सीधे पहुँचने की अनुमति देते है।

B. इब्रानियों की पुस्तक पुराने नियम के याजकों की तुलना का एक अच्छा अध्ययन है। पुराने नियम के याजक पापी मनुष्य थे, जबकि नये नियम में यीशु मसीह जो परिपूर्ण महायाजक है।

C. लैव्यवस्था 7:31–36 परमेश्वर ने याजक के खाने का उपाय किया। हमें इसका अनुशरण करना चाहिए और यह सुतिनश्चित करना चाहिए कि हमारे पुराहित भोजन खाये।

D. अध्याय 10:1–2 हारून के पुत्रों को परमेश्वर ने मार डाला क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की आराधना में उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया था। हमें परमेश्वर के सम्मुख सही रीति से सम्मान और पश्चातापी हृदय के साथ आना चाहिए। यह एक अच्छी योजना है कि जब आप आराधना शुरू करें तो पश्चाताप की प्रार्थना के साथ करें।

5) पश्चाताप का दिन अध्याय–16

A. इस्राएल के लिए यह वर्ष का सबसे महत्त्वपूर्ण दिन था। क्योंकि यह दिन पापों की क्षमा का दिन था। यह वर्ष का केवल वही एक दिन था जब महायाजक मिलापवाले तम्बु के पवित्र स्थान में प्रवेश कर सकता था। यह एक पवित्र दिन था, उदाहरण के तौर पर, केवल यह दिन था जब उपवास करना जरूरी था

i. लैव्यवस्था 16 बताती है कैसे बकरों का चुनाव करना है। एक बकरे का वध होता है और दूसरे प्रतीकात्मक रीति से लोगों के पापों का भार डाला जाता है और उसे लोगों के पापों के साथ शिविर से बाहर भेज दिया जाता है। आयत 21–22 पापों को हटाने के विषय में बात करती है।

B. पश्चाताप का दिन यीशु मसीह के प्रायश्चित बलिदान के द्वारा बदल दिया गया जो कि हमारे पापों की क्षमा के लिए है।

6) पवित्र समय अध्याय 23–25

A. परमेश्वर ने पवित्र दिनों का अलग रखा ताकि उस समय लोग परमेश्वर पर ध्यान दे। अवकाश शब्द हमें यही से मिला है। बहुत से मसीह लोग क्रिसमस और ईस्टर के अवकाश को मनाते है। संयुक्त राज्य अमेरिका में लोग धन्यवाद दिन को मनाते है जो कि परमेश्वर को विशेष धन्यवाद देने के लिए एक अलग किया हुआ दिन है।

हमारे लिए यहाँ पर व्यवहारिक शिक्षाएँ है जैसे लैव्यवस्था 20:1–5। हम पढ़ते है कि परमेश्वर बच्चों के बलिदान से नफरत करते है। मृत्यु उसकी सजा है। ध्यान दे 4–5 आयत जो सिखाती है कि उस व्यक्ति के लिए जिसने इस बलिदान को देखा और रोकने की कोशिश नहीं की, को कठोर दण्ड दिया गया। में अचंभित होता हूँ कि परमेश्वर बच्चों के बलिदान के प्रति जो हमारे यहाँ युगांडा में है, कैसा महसूस करते है। क्या हम मसीही लोगों को इस भयानक पाप को बिना रोकने का प्रयत्न किए यूँ ही जारी रहने देना चाहिए? दूसरे पापों के विषय में क्या?

गिनती का अवलोकन

पुस्तक का वास्तविक नाम ''निर्जन प्रदेश में'' दिया गया था जहाँ पर इस कहानी की शुरूआत हुई। सैप्टूजीन्ट, जो कि इब्रानी से यूनानी भाषा में प्रथम अनुवाद था, उसमें इसका नाम लोगों की गिनती होने के कारण ''गिनती'' कर दिया गया।

यह मूसा और लोगों द्वारा उनकी अनाज्ञाकारिता के कारण निर्जन प्रदेश में घूमते हुए व्यर्थ में बिताए गए 40 वर्षों की कहानी है। गिनती हमें सिखाती है कि परमेश्वर पाप को दण्डित करेगा और केवल यहोशू और कालेब ही उस पीढ़ी में से प्रतिज्ञा के देश में जाने योग्य रहे।

इब्रानियों को सिनाई पर्वत तक पहुँचने में तीन महीनों की यात्रा करनी पड़ी। तब वे एक वर्ष तक वहाँ रहे, और तब मोआब और प्रतिज्ञा के देश तक की यात्रा के लिए 40 वर्षों तक यात्रा करते रहे। मिस्र से मोआब की यात्रा आमतौर पर कुछ ही सप्ताह का समय लेती है।

पुस्तक के तीन प्रमुख भाग

1) पहला सिनाई पर्वत पर है जैसे कि लोग तैयारी कर रहे थे कि वे वहाँ से जहाँ वे निर्गमन–18 से रहे थे, से निकल सके। गिनती 1:1–10:10।

i) लोगों की गिनती 1:1–54

ii) अध्याय 2:1–4:49 में परमेश्वर ने प्रत्येक गोत्र को उसका एक स्थान देते हुए उनका प्रबंध किया और बाद में प्रत्येक गोत्र को अलग क्षेत्र में उसका एक देश दिया गया। उसने लेवियों को प्रत्येक गोत्र का पुराहित होने के लिए नियुक्त किया। परमेश्वर लोगों को प्रतिज्ञा के देश में ले जाने की तैयारी कर रहे थे। वह साथ में उनके लिए धार्मिक निर्देशों को भी देता रहा।

गिनती 3:1–10 में पुनः हारून के पुत्रों की अनाज्ञाकारिता के कारण घात किए जाने की घटना को दोहराती है और कैसे परमेश्वर ने सभी लेवियों को शामिल करते हुए याजकों की संख्या को बढ़ाया, का भी वर्णन करती है।

iii) कानून का निर्माण 5:1–8:26

a) अध्याय 8:25, 26 में परमेश्वर ने सिखाया कि वे लेवी जो 50 वर्ष से अधिक है वे परमेश्वर की आराधना के कत्त्वर्यों को पूरा करने में सहायता तो कर सकते है परन्तु अब वे अगुवे नहीं है। हम कलीसिया के अगुवों को नौजवान लोगों को विकसित करना चाहिए कि वे हमारे अगुवाईपन के पद को ले सके। प्रत्येक पास्टर के पास यह समय आता है कि वह स्वेच्छा से अलग हो जाए।

iv) सिनाई पर्वत पर अंतिम घटना 9:1–10:10

2) दूसरा भाग गिनती का सिनाई पर्वत से एदोम की यात्रा की है अध्याय 10:11–20:21। जो यात्रा दो सप्ताह की होनी चाहिए थी उसे इब्रानियों द्वारा परमेश्वर के प्रति उनके बुरे व्यवहार के कारण चालीस वर्षों में पूरी हुई।

I. प्रथम कादेश की यात्रा 10:11–12:16

A. अध्याय–11 बताती है कि लोग मूसा और परमेश्पर के विरूद्ध शिकायत करते रहे। मूसा परमेश्वर से सहायता की प्रार्थना करता है। अध्याय 11:16 और 17 में परमेश्वर मूसा की सहायता करते

है। उसने 70 अगुवों को नियुक्त किया कि वे मूसा की सहायता करते है। बाद में नया नियम में परमेश्वर ने कलीसिया के कार्यों के लिए अगुवों और सेवकों को नियुक्त किया।

B. अध्याय–12 में हम देखते है कि कैसे हारून और उसकी बहन ने परमेश्वर के द्वारा नियुक्त किए गये अगुवे मूसा के विरूद्ध विद्रोह किया। आइए इस विद्रोह का अध्ययन करें।

i. 1–2 आयतें उस अपराध के विषय में बताती है परमेश्वर द्वारा चुने हुए अगुवे मूसा के विरूद्ध विद्रोह के द्वारा भी।

ii. 3–आयत बताती है कि मूसा बहुत ही नम्र पुरूष था और उसमें परमेश्वरीय अगुवा होने के बावजूद भी कोई घमण्ड नहीं था।

iii. आयतें 4–8 बताती है कि मूसा बहुत ही नम्र पुरूष था और उसमें परमेश्वरीय अगुवा होने के बावजूद भी कोई घमण्ड नहीं गिा।

iv. आयतें 9'10 परमेश्वर क्रोधित होते है और मरियम को दण्डित करते है।

v. आयतें 12–13 मूसा मरियम के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

vi. आयतें 14–15 परमेश्वर दयालु है और उसने मरियम के दण्ड को सर्वदा की बजाए कुछ समय का कर दिया।

II.दिव्तीय एक कहानी है जो कादेश में घटित हुई। यह लोगों द्वारा आनाज्ञाकारिता और भरोसा नहीं करने के विषय में है जिसके लिए उन्हें दण्डित भी किया गया। गिनती 13:1–2 परमेश्वर ने प्रतिज्ञा किए हुए का भेद लेने के लिए गुप्तचरों को भेजा। आयतें 3–16 तक पढ़े, परमेश्वर प्रत्येक बारह गोत्रों से लोगों को भेजा, जिन्हें वह देश अधिकार करने के लिए मिलने वाला था। आयतें 25–33 जासूसों द्वारा प्रस्तुत किया गया विवरण है। यहोशू और कालेब ने कहा कि उन्हें शीघ्र ही उस देश को जीत लेना चाहिए जबकि दूसरों ने संदेह किया कि शायद परमेश्वर उन्हें उस देश को देने का वायदा पूरा न करें। उन्होंने इस बात का भरोसा नहीं किया जब परमेश्वर ने उनसे कहा कि वह उन्हें उस देश को देगा। उन्होंने कहा कि वहाँ के निवासी बहुत ही शक्तिशाली है कि उन्हें जीता नहीं जा सकता। यह बात पूरी रीति से परमेश्वर पर भरोसे की कमी को प्रकट करती है। अध्याय–14 बताता है कि परमेश्वर लोगों के इस विद्रोह द्वारा क्रोधित हुआ। देखें आयतें 11–12। हम देखते है कि परमेश्वर ने सभी लोगों को समाप्त करने की धमकी दी। आयतें 13–19 में पाते है कि परमेश्वर से मूसा ने प्रार्थना की, परमेश्वर ने क्षमा किया परन्तु दण्डित करने का भी वायदा किया। आयतें 20–37 में परमेश्वर ने सभी व्यस्कों के लिए दण्ड की घोषणा की कि वे लोग प्रतिाा के देश में प्रवेश नहीं करेंगे। वे जंगल में चालीस वर्षों तक भटकते रहेंगे जब तक कि सभी व्यस्क लोग मर न जाए। आयतें 37–38 परमेश्वर ने तुरन्त ही उन दस जासूसों का मार डाला, जिन्होंने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया था।

III.मूसा के विद्रोह का विवरण। अध्याय 20:2–5 में पाते है कि कैसे लोगों ने परमेश्वर के विरूद्ध शिकायते करते हुए मूसा को क्रोध दिलायाद्य। आयतें 8–13 परमेश्वर ने मूसा को स्पष्ट निर्देश दिये कि मरीबा में चट्टान से जाकर बोले और वह पानी देगा, परन्तु ऐसा करने के बजाए मूसा ने चट्टान पर प्रहार किया और उसे इसके लिए दण्डित किया गया। उसकी इस अनाज्ञाकारिता के लिए उसे ''प्रतिज्ञा के देश'' में प्रवेश नहीं करने के द्वारा दण्डित किया गया। परमेश्वर प्रत्येक पाप को दण्डित करते है।

3) गिनती का तीसरा मुख्य भाग अध्याय 20:22–36:13 है। यहाँ हम पाते है कि चालीस वर्षों तक बिना किसी लक्ष्य के वे लोग निर्जन प्रदेश में भटकते रहे जब तक सभी व्यस्क लोग मर नहीं गये।

1. अध्याय 20:22–29 हारून की मृत्यु के विषय में बताती है।

2. अध्याय 21:4–9 में लोगों ने फिर से परमेश्वर के विरूद्ध बलवा किया और हमारे पास कांसे के सर्प की कहानी है। परमेश्वर ने जहरीले सर्पों को लोगों को डसने के लिए भेजा, यह उनके विद्रोह के लिए परमेश्वर ने उनके बचाये जाने के लिए एक उपाय दिया। मूसा ने एक कांसे के बने हुए सर्प को खम्भे पर लटकाया और लोगों को उसकी ओर देखने के लिए निर्देश दिया गया ताकि वे लोग बच सके। यूहन्ना 3:14–15 में यीशु को इसी प्रकार दिखाया गया जहाँ यीशु की ओर देखने से लोग बचाये जा सके।

3. अध्याय 22–24 हमें एक रूचिकर कहानी बताती है।

a. अध्याय 22–मोआब का राजा बालाक इब्रानियों से डर गया था। इसलिए उसने बालाम से इब्रानियों को श्राप देने के लिए कहा। परमेश्वर ने बालाम से कहा कि वह इब्रानियों को श्राप न दे। बालाक लगातार बालाम को मनाता रहा कि वो इस्राएलियों को श्राप दें और इसलिए परमेश्वर ने बिलाम को अनुमति दी कि वह बालाक से मिले। ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर नहीं चाहता था कि बालाम बालाक से मिलने जाए। प्रमाण के तौर पर वह कहानी जहाँ गदही बीच रास्ते में रूक गई और आगे नहीं जाना चाह रही थी। परमेश्वर ने बालाम से कहा कि वह जाये परन्तु वही बोले जो परमेश्वर उसे कहने के लिए कहे।

b. अध्याय 23–परमेश्वर ने बालाम से कहा कि वह इब्रानियों को शाप देने के बजाए आशीष दे। बालाक लगातार कोशिश करता रहा कि बालाम इब्रानियों को शाप दे परन्तु बालाम ने कहा कि वह ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि परमेश्पर उन्हें आशीष देना चाहता है।

c. अध्याय 24 में बालाम ने एक दर्शन में बताया कि कैसे परमेश्पर इस्राएल को आशीष देता आ रहा है। आयत 9 में बालाम उन आशीषों के वायदे को फिर से दोहराता है जिन्हें परमेश्वर ने अब्राहम से किया था।

i. परमेश्वर ने 15–25 आयतों में बालाम को बालाक से भविश्यवाणी को कहा। उसने इस्राएल के शत्रुओंमोआब और एदोम को नाश करने वाले राजा दाऊद के आगमन के विषय में कहा। यह भविष्यवाणी राजा दाऊद द्वारा इस्राएल के पृथ्वी पर शत्रुओं के विनाश के विषय है परन्तु उत्तराधिकार यीशु के आने और उसके लोगों को पाप की बंधुवाई से छुड़ाने के विषय की ओर देखती है।

4. गिनती 27:12–23 में परमेश्वर ने मूसा के स्थान पर यहोशू को अगुवा होने के लिए नियुक्त किया।

5. अध्याय 28:30 में और अधिक धार्मिक निर्देश दिए गए।

6. अध्याय 36 बताती है कि अन्त में वे मोआब की तराई में पहुँच गये जो कि परमेश्वर द्वारा इब्रानियों को प्रतिज्ञा किए हुए देश के प्रवेश पर था।

व्यवस्थाविवरण का अवलोकन

नाम– विधियों को दूसरी बार पढ़ना, इसे मूसा द्वारा अंतिम निर्देश भी कहा जा सकता है।

1) अध्याय 1–3 परिचय है। उनके मिस्र से निकलने के चालीस वर्ष बीत चुके थे और अब वे यरदन नदी के किनारे पर उसे पार करने के लिए तैयार थे। आमतौर पर सिनाई पर्वत से प्रतिज्ञा देश की यात्रा के लिए केवल ग्यारह दिनों का समय लगता। परन्तु लोगों की अनाज्ञाकारिता के कारण चालीस वर्षों का समय लगा। मूसा ने एक उत्साहित करने वाला होने के नाते ''प्रतिज्ञा देश'' में प्रवेश करने की तैयारी के लिए उत्साहवर्धक बातों को बोला। उसने होरेब पर्वत को छोड़ने से लेकर पूरे इतिहास का पुनः याद किया। मूसा ने लोगों को पाप और विद्रोह के परिणाम को भी याद करवाया। अध्याय 1:3 मूसा ने लोगों को याद दिलाया कि उसका अधिकार परमेश्वर की ओर से है और उसने उन्हें यह भी याद दिलाया कि उसके वचन परमेश्वर की ओर से है।
2) मूसा ने लोगों को दी गई विधियों को फिर से दोहराया।
   1) मूसा ने चौथे अध्याय में लोगों को याद दिलाया कि या तो वे परमेश्वर की आज्ञा मान कर आशीषें पा सकते है या फिर अनाज्ञाकारिता करके दण्ड भोग कर दुखी हो सकते है।
   2) पाँच अध्याय में दस आज्ञाओं को फिर से देखा गया। यह आज्ञाएँ संयुक्त राज्य के संविधान का आधार है।
   3) अध्याय 6 में 4–10 आयतों में बहुत ही महत्त्वपूर्ण शिक्षाएँ है, जो हमें अपने परमेश्वर को अपने सारे तन, मन, धन और बल से परमेश्वर की प्रेम करने का निर्देश देती है। यीशु ने मरकुस 11 में पुनः इन आज्ञाओं को बताया और कहा कि यह आज्ञाएँ बहुत महत्त्वपूर्ण है। यूहन्ना 14:5 कहता है हम आज्ञा मान कर परमेश्वर के प्रति प्रेम को दिखाते है। हमें निश्चय ही परमेश्वर की आज्ञा को मान कर अपने प्रेम को दिखाना चाहिए।
   4) अध्याय 7:6–8 हमें परमेश्वर के साथ हमारे प्रतिज्ञापत्र सम्बंध का आधार देती है। यह परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ पसंद है देखे रोमियों 8:29–30।
   5) अध्याय 14:21 में हम देखते है कि कैसे वचन का अनुवाद नहीं करना है, कैसे सिंद्धान्त को नहीं बनाना है। यहूदी इस आयत के अंतिम भाग का उपयोग यह सिखाने के लिए करते है कि आप मांस नहीं खा सकते है और नहीं दुग्ध उत्पादन का कोई भोजन ले सकते है।
   6) पढ़े अध्याय 18:15–22 जिसमें नबीयों के विषय में महत्त्वपूर्ण शिक्षा है। हम पढ़ते है कि मूसा एक सच्चा नबी है और आयत 15 यह वायदा करती है कि परमेश्वर एक अन्य नबी को खड़ा करेगें जो कि परमेश्वर ने यीशु के रूप में किया। आयत 20 में परमेश्वर ने कहा कि झूठे नबीयों को मार डाला जाए। आयत 22 हमें बताती है कि एक सच्चे नबी की पहचान उसके द्वारा कही हुई भविश्यवाणी के पूरे होने से होती हैं बाईबल में उल्लेखित प्रथम नबी कौन था? देखे उत्पत्ति 20:7।

3) अध्याय 27–30 मूसा द्वारा परमेश्वर की आज्ञा मानने के विषय में अंतिम टिप्पणी है।
   1. अध्याय 27:15–26 परमेश्वर की आज्ञा न मानने के कारण श्रापों की सूची है।
   2. अध्याय 28:1–14 परमेश्वर की आज्ञा मानने की आशीषों का वादा है देखें आयते 1–6 और बाकी अध्याय। पढ़े आयते 15–19 जो अनाज्ञाकारिता के लिए आशीष और शापों का वादा हैं देखे यशायाह 57 इसी विचार के लिए। आमतौर पर हम देखते है कि आशीषों की तुलना में श्रापों के विषय में अधिक लिखा गया है। एकसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर यह निश्चित करना चाहते है कि हमें सावधान किया है।

3. अध्याय 29 निर्गमन अध्याय 20–23 में सिनाई पर्वत पर दी गई वाचा नवीनीकरण है। जहाँ परमेश्वर ने विधि को दिया और आज्ञा के पालन करने के लिए आशीषों के वायेदा दिये।

a) अध्याय 29:29 और यशायाह 55:8–9 बहुत महत्त्वपूर्ण आयते हैं जो हमें यह समझने के लिए मदद करता है कि हम परमेश्वर के विषय में सब कुछ नहीं समझते है और हम उसके विषय में सब कुछ व्याख्या नहीं कर सकते है।

4. अध्याय 30 में परमेश्वर ने लोगों को याद दिलाया कि उनके पास जीवन और मृत्यु का चुनाव है। आयत–16 आज्ञाकारिता के लिए जीवन और आयते 17–19 अनाज्ञाकारिता के लिए मृत्यु की पेशकश करती है।

4) अध्याय 31–34 अगुवेपन को यहोशू को हस्तांतरित किया गया।

1. अध्याय 34 मूसा की मृत्यु के विषय में बताती है जब वह स्वस्थर है। परमेश्वर मूसा को पीसगाह पर्वत की चोटी पर ले गये और उसे ''प्रतिज्ञा के देश'' को देखने की अनुमति प्रदान की। परन्तु मूसा को प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश नहीं करने दिया गया।

यहोशू का अवलोकन

यह पुस्तक बाईबल के नये वर्ग की शुरूआत करती है। इस अंश को ऐतिहासिक खण्ड कहा गया है क्योंकि यह इस्राएल के इतिहास को ''प्रतिज्ञा के देश'' में प्रवेश करने से लेकर पुराने नियम के अन्त को समेटता हैं यह भाग यहोशू से प्रारम्भ होता है और ऐस्तर की पुस्तक के साथ अन्त होता है।

यह एक विजय, जीव और साथ ही मनुष्यों की असफलताओं दोनों की पुस्तक है।

यहाँ दो मुख्य भाग है।

1) अध्याय 1–12 लोगों ने कैसे देश को जीता, इस विषय में बताती है।

1. अध्याय–1 परमेश्वर ने यहोशू को जिम्मेदारी सौपी। 1–9 आयतों में हमारे लिए कुछ महत्त्वपूर्ण शिक्षाएँ है।

a. आयतें 5–7 और 9 देखें : हमें परमेश्वर की सेवा के लिए निडर होना चाहिए। उसने कहा है कि वह सदा हमारे साथ है।

b. 7–8 आयते हमें स्मरण दिलाती है कि हमें सदा परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहिए।

2. अध्याय 2 और 5:13–6:27 यरीहो पर कब्जे की कहानी को बतलाती है। अध्याय 5:13–15 मसीह के पूर्व प्रकार होने का आभास कराता है।

a. अध्याय–2 राहाब की कहानी है जिसमें उसने दो जासूसों को छुड़ाया और उन्हें यरीहो के ढाये जाने पर छोड़ दिया गया।

b. आयत 24–पहले के जासूसों की तुलना में इन जासूसों ने सकारात्म विवरण दिया।

c. एक परिचित कहानी के विषप में कि कैसे यरीहो को कब्जे में लिया गया। परमेश्वर ने सेना को आदेश दिया कि वह छहः दिनों तक प्रतिदिन नगर का एक चक्कर लगाये। सातवें दिन उन्हें सात बार नगर का चक्कर लगाने के लिए कहा गया और तब उन्हें ऊँचे स्वर से चिल्लाने को कहा गया और शहर की दीवार गिर गई। सभी खजाने परमेश्वर के है और प्रत्येक जीवित प्राणी, सभी मनुष्य और पशु मारे गए कवल राहाब के परिवार को छोड़ कर। यरीहो पर यह विजय परमेश्वर के लोगों के लिए एक महाने विजय की कहानी है।

3. अध्याय 3:1–17 बताती है कि कैसे उन्होंने यादन नदी को सूखे पैर पार किया ठीक ही जैसे लाल सागर को पार किया था। परमेश्वर ने अब्राहम से किए ह2ुए वादे को भी पूरा किया।

4. अध्याय 4:1–19 बताती है कि कैसे लोगों ने परमेश्वर के लिए पत्थरों से स्मारक बनाया।

5. अध्याय 7–8 में अगले नगर रेई को जीतने का विवरण है। अनाज्ञाकारिता की कहानी और बर्बादी के बाद आज्ञापालन और विजय की कहानी है।

a. पहले हम पढ़ते है कि परमेश्वर की आज्ञा का उल्लघंन करके आकान ने यरीहो से कुछ बहुमूल्य वस्तुओं को रख लिया और इस कारण से यहोशू और उसकी सेना को हार का सामना करना पड़ा। आकान के परिवार को दण्डित किया गया तब उन्होंने विजय पाई।

6. अध्याय 9 में कहानी बताती है कि इस्राएलियों को छला गया क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की इच्छा जाने बिना स्वंय ही गिबोन के लोगों का सामना किया। इसका अर्थ यह हुआ कि इस्राएलियों को गिबोन के साथ रहना पड़ा उन्हें नाश नहीं किया गया।

a. हमारे लिए शिक्षा कि कैसे हमें हमेशा परमेश्वर की सलाह को पूछना चाहिए और स्वयं का निर्णय नहीं लेना चाहिए देखे आयत 14 कि उन्होंने परमेश्वर की सलह को नहीं पूछा।

b. अगली शिक्षा अच्छे अगुवाईपन के विषय में है। यहोशू की भी कुछ कमिया थी।

7. अध्याय 10–12 बताती है कि कैसे परमेश्वर की सेना ने कई राज्यों को जीता और नाश किया।

2) यहोशू का दूसरा भाग अध्याय 13–24 देश के विभाजन के विषय में बताती है।
1. लेवी के गोत्र को छोड़ सभी गोत्रों को भूमि दी गई। क्यों लेवियों को कोई भूमि नहीं दी गई?
2. यहोशू 23 में यहोशू द्वारा इस्राएली अगुवों की विदाई है।
   A. यहोशू ने अपनी उपल्बधयों के विषय में बात की और प्रकट किया कि कैसे वह परमेश्वर का एक जन है। पढ़े आयत 3 और 5 जहाँ यहोशू ने सभी विजयों के लिए परमेश्वर को श्रेय दिया। परमेश्वर के सभी सच्चे सेवक हमेशा उनकी विजयों के लिए परमेश्वर को ही श्रेय देते है। हम मनुष्यों को यह याद रखना चाहिए कि हम स्वयं कोई भी युद्ध नहीं जीत सकते है। हम तभी विजय पा सकते है जब परमेश्वर कार्य करें।
   B. परमेश्वर ने हमें याद दिलाया कि कनानीयों के साथ अर्न्तजातिय विवाह जैसे विषयों में विशेष तौर से परमेश्वर के प्रति विश्वास योग्य रहे। परमेश्वर ने उन्हें चेतावनी दी कि यदि वे परमेश्वर की आज्ञा न माने तो परमेश्वर का क्रोध उनके प्रति प्रकट होगा। यही संदेश मूसा ने भी उन्हें दिया था।

3) यहोशू अध्याय 24:1–13 में यहोशू ने परमेश्वर के लोगों के प्रति परमेश्वर की विश्वास योग्यता के विषय में याद दिलाया। और कैसे उसने लोगों को उनके पूर्वजों से वायदे किए हुए देश को दिया (उत्पति 12:7)।

4) 14–28 आयतों में यहोशू ने अपना विदाई भाषण दिया और लोगों से कहा कि वे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहे और केवल उसकी ही सेवा करें। आयत–15 एक परिचित आयत है जो बाईबल में पाई जाती है जिसमें यहोशू ने अपने पूरे परिवार के साथ परमेश्वर के पीछे चलने का सर्मपण किया। सभी लोगों ने ऐसा ही करने का प्रण किया। न्यायियों की पुस्तक में हम यह अध्ययन करेंगे कि कितनी अच्छी रीति से वे इस वादे का पालन कर पाये।

5) यहोशू की मृत्यु 110 वर्ष की आयु में हुई और उसे परमेश्वर द्वारा दिए गए देश में दफनाया गया।

न्यायियों का अवलोकन

I. **परिचयः** लेखक और लेखन समय अज्ञात है परन्तु न्यायियों लगभग 400 वर्षों का समय है जिसे इस्राएल का काला युग (जैसे इदी आमीन के सम4य युगाण्डा) के तौर पर जाना जाता है। इस समय को पुस्तक के अंतिम अध्याय के अंतिम आयत में चित्रित किया गया है। परमेश्वर को छोड़कर लोगों द्वारा अपने रास्ते को चुनने की योजना को प्रारंभिक पुस्तकों में कई अवसरों पर उल्लेख किया है। यीशु ने इस विचार के विषय में कहाः यूहन्ना 14:15 ''यदि तुम मुझ से प्रेम करते हो, तो तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे।'' मैं ऐसा अनुमान लगाता हूं कि लोग वास्तव में परमेश्वर से प्रेम नहीं करते हैं। याद रखें उनका प्रारंभिक वायदा परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना था–उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानने का वादा किया परन्तु वे ऐसा नहीं कर पाये।

न्यायी लोग वास्तव में न्यायी नहीं हैं बजाए इसके वे सैनय अगुवे–युद्ध देवता है। न्यायियों का नमूना यह है कि लोगों ने पाप किया और मुसीबत में पड़ गए और उनके शत्रु को पीड़ा देने लगे। तब वे परमेश्वर की ओर मुड़े और परमेश्वर ने एक सहायक के तौर पर न्यायी को भेजा। वहां पर बारह न्यायी थे।

2. अध्याय 1–16 बारह न्यायियों के विषय बताती है।

1. यहोशू की मृत्यु के बाद अध्याय 1:1–2:5 में पहली समस्या का उल्लेख किया गया है। इस्राएल के लोग पूरी रीति से विजय नहीं पा सके और उन्होंने व्यवस्थाविवरण 20:16–18 में परमेश्वर की आज्ञानुसार सभी निवासियों को बाहर नहीं खदेड़ा। जब भी हम परमेश्वर के कहे अनुसार ठीक वैसा ही नहीं करते हैं तो वह परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारिता है। हमें परमेश्वर की आज्ञा को ठीक उसी प्रकार मानना चाहिए जैसा वह कहता है और हमें कभी भी समझौता नहीं करना चाहिए। न्यायियों की समस्या यह है कि प्रतिज्ञा देश के निवासियों को जीवित छोड़ दिया गया थ जिन्होंने इब्रानियों को बुरे तरीके से प्रभावित किया। बहुत सी पश्चिमी कलिसियाओं में समस्याएं इस कारण से है कि लोग समझौता करते हैं और परमेश्वर द्वारा दिए गए सभी नियमों का पालन नहीं करते हैं। एक उदाहरण मसीहियों के लिए यह है कि परमेश्वर ने हमें आज्ञा दी है कि गैर मसीही से विवाह नहीं करना है। अक्सर लोग समझौता करने का निर्णय लेते हैं जिसका अर्थ यह है कि वे इस नियम की अवहेलना करते हैं। कई अवसरों पर यह विवाह मसीहियों को सेवा करने से रोकती है अक्सर वह व्यक्ति कलीसिया जाना छोड़ देता है। अक्सर बच्चे मसीही होने के लिए नहीं बढ़ते हैं।
   2. पढ़े 2:1–5 इस्राएल की अनाज्ञाकारिता और भविष्य की परेशानियों की भविष्यद्वाणियां जो कि उनकी अनाज्ञाकारिता के कारण है। सम्पूर्ण बाईबल में यही कहानी है।

अध्याय 1:1 ईश्वरीय दर्शन है। देखें निर्गमन 3:2–6 भी
3. अध्याय 2:6–16:31 लगातार असफलता की कहानियां हैं। यहोशू की पीढ़ी मर चुकी है और अगली पीढ़ी ने परमेश्वर को नकार दिया।
2:10 पढ़े ।हम देखते हैं कि नई पीढ़ी परमेश्वर को नहीं जानती थी। कलीसिया में यह मुख्य समस्या थी और है। देखें व्यवस्थाविवरण 4:10 जो कि कई आयतों में से एक आयत है जहां परमेश्वर हमें अपने बच्चों को परमेश्वर के विषय में सिखाने के लिए कहती है– अपने बच्चों को यीशु के विषय में सिखाने के लिए हम जिम्मेदार हैं।
न्यायियों की पुस्तक में यही नित्नलिखित बात बार–बार दोहराई गई :
1. लोगों ने पाप किया जैसे इस्राएलियों ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई की।
2. न्याय के तौर पर युद्ध, परमेश्वर ने उन्हें शत्रु राष्ट के हाथें कई वर्षों के लिए बेच दिया और वे पंताड़ित हुए।
3. तब लोगों ने पश्चताप किया और परमेश्वर को उनकी समस्याओं से बचाने के लिए दोहाई दी।
4 तब परमेश्वर द्वारा एक न्यायी को खड़ा किया गया और छुटकारा आशा उस न्यायी के द्वारा। और देश में तब तक शांति रही जब लोगों ने पाप करना शुरु नहीं किया।
पाप करते रहने का यह चक्र, पश्चताप फिर छुड़ाया जाना फिर पाप करना 400 वर्षों तक बार–बार होता रहा।
कुछ न्यायी अच्छे थे और कुछ बुरे।
दबोरा अच्छी न्यायी थी और उसने अपनी विजय का पूर्ण श्रेय परमेश्वर को दिया 5:1–9
गिदोन एक अच्छा न्यायी थाजिसने कुछ अवसरों पर पाप की समस्या का सामना किया। जब हम गिदोन का अध्ययन करते हैं तो हम देखते हैं कि कैसे यह कथन कि ''परमेश्वर उन्ही की मदद करते हैं जो स्वयं की मदद करते हैं'' गलत है। हम देखेंगे किि परमेश्वर निर्बल व्यक्ति को लेते हैं और उसे सामर्थ देते हैं कि वो बड़े और सामर्थी कार्य कर सके।

गिदोन को परमेश्वर ने बुलाया ताकि वह लोगों को अगुवाई कर सके जो कि मिद्यानी लोगों द्वारा बुरी तरह समाए जा रहे थे। अध्याय 6:1–27 आयत 12 में परमेश्वर ने गिदोन को सामर्थी पुरुष कहा। गिदोन ने कहा कि वह सबसे तुच्छ है। आयत 16 में परमेश्वर गिदोन से कहता है कि वह मजबूत होगा क्योंकि स्वयं परमेश्वर उसे बल प्रदान करेंगे और परमेश्वर की महिमा होगी न कि गिदोन की।

परमेश्वर चाहते हैं कि मिद्यानी सेना के विरुद्ध गिदोन उसकी सेना का नेतृत्व करे। गिदोन ने दिखाया कि उसका विश्वास कमजोर है और उसने परमेश्वर को परखा न्यायियों 1:36–40

गिदोन अब परमेश्वर की सेना की अगुवाई के लिए तैयार है। अध्याय 6:1–18 बताती है कि कैसे परमेश्वर ने केवल 300 सैनिकों के अलावा सभी को घर वापस भेज दिया क्यों कि परमेश्वर यह दिखाना चाहते थे कि यह मनुष्यों की ताकत नहीं है जिससे युद्ध जीता जाएगा परन्तु यह परमेश्वर की सामर्थ है जो विजय प्रदान करेगी।

300 सैनिकों ने 135,000 शत्रु सैनिकों का सामना किया और परमेश्वर ने उन्हें मिद्यानी सेना का नाश करने दिया। न्यायियों 7:19–25 यह स्पष्ट करती है कि परमेश्वर ने युद्ध जीता न कि लोगों ने।

देखें अध्याय 11:1–12:7 एक बुरा न्यायी था। उसकी प्रतिज्ञा की कहानी को देखें11:29–40

आयत 30–31 में क्या उसकी प्रतिज्ञा एक अच्छी प्रतिज्ञा थी? निसंदेह यह एक बुरी प्रतिज्ञा थी। 30–34 आयतों में उसकी पगतिज्ञा कापरिणाम देखिए। क्या आप ऐसा सोचते हैं कि परमेश्वर किसी से अपने बच्चों को बलिदान की इच्छा करते हैं? लैव्यवस्था 20:1–4 में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर कठोर रीति से इस प्रकार के व्यवहार की मनाही करते हैं। हमारे लए यह शिक्षा दी है कि हमें वाचा बांधने में सावधानीपूर्वक देखना चाहिए कि क्या इस वाचा से परमेश्वर प्रसन्न होंगे, हमारी वाचा परमेश्वर को प्रसन्न करनी चाहिए।

1. अंतिम भाग पहले भाग से भिन्न है– भीतरी समस्याएं बाहरी शत्रुओं की तुलना में इस्राएलियों के लिए बड़ी समस्या है।इस्राएल का खुद का ही सबसे खराब शत्रु था जैसे कि आज कलीसिया है। कलीसिया के भीतर ही लड़ाई, यह आज हमारी कलीसियाओं की एक सामान्य समस्या है।

   अध्याय 17–18 मीका की कहानी को बताती है, दान गोत्र के एक लेवी की मूर्तिपूजा में संलिप्तता। यह उसी प्रकार है कि आप के पुरोहित मूर्तिपूजा का हिस्सा है।

अध्याय 19–21 एक भयानक कहानी है जिसमें बेंजामिन गोत्र के लोगों द्वारा एक लेवी की रखैल का बलात्कार और हत्या की गई। इस कारण बेंजामिन गोत्र और बाकी इस्राइलियों के मध्य युद्ध छिड़ गया। यह दिखाता है कि परमेश्वर के चुने हुए लोग कैसे नीचे स्तर तक गिर गये–जैसे सदोम और गोमरा के लोग।

2. न्यायियों 21:25उन दिन का कथन है कि वहां कोई राजा नहीं थाऔर प्रत्येक जन अपनी दृष्टि में जो ठीक था हमें यह बताती है कि हमें नियमों द्वारा जीना चाहिए और सही या गलत का पैमाना होना चाहिए। परमेश्वर यह नियम हमें बाईबल में देते हैं।

रुत –महिलाओं के नाम पर रखी दो पुस्तकों में से एक

यह परमेश्वर द्वारा विश्वासयोग्य दासों को आशीषित करने की आकर्षक कहानी है। हम प्रथम अध्याय में यह देखते हैं कि यह कहानी न्यायियों के समय में घटित हुई।

रुत, नाओमी और बोआज मुख्य चरित्र है। रुत एक इब्रानी नहीं है परन्तु वह नाओमी की बहु है। वे दोनों विधवा है– युगाण्डा के समान गरीब, रुत अपनी सास नाओमी से प्रेम करती है और उसके साथ इस्राएल लौटती है। बोआज का ध्यान रुत की ओर जाता है और अंत में वह उससे विवाह करता है। विश्वासयोग्य कार्य जो कि सही और नियम अनुसार था बोआज के लिए िकवह रुत को अपनी पत्नी बना ले। बोआज और रुत राजा दाउद के परदादा–परदादी हुए और यीशु की वंशावली में राहाब वेश्या है।

यह पुस्तक न्यायियों की पुस्तक के ठीक बाद आती है जो कि इस्राएल राष्ट की अविश्वासयोग्यता को न्यायियों के दौर में प्रकट करती है, और यह भी कैसे परमेश्वर ने उनकी अविश्वासयोग्यता के कारण उन्हें दण्डित किया। अब रुत की पुस्तक हमें तीन लोगों की विश्वासयोग्यता के पुरस्कृत किए जाने की कहानी कहती है। रुत बोआज से है और यह कहानी यह साबित करती है कि परमेश्वर की वाचा केवल एक लोगों के समूह के लिए नहीं है परन्तु दूसरों के लिए भी है जो परमेश्वर के लोग होने के द्वारा परमेश्वर की आशीषों का आनन्द ले सकते हैं और परमेश्वर की वाचा के अनुसार जीवन जीने के द्वारा भी।

1. रुत अध्याय 1 हमें बताती है कि रुत और उसकी सास नाओमी ने अपने पतियों को ,ो दिया और दोनों रुत के घर मोआब में विधवा है। नाओमी इस्राएल लौटती है और रुत उसके साथ जाती है।
2. 2. रुत अध्याय 2 में बोआज से मिलती है जो उसके प्रति दयालुह।
3. 3. अध्याय 3–4 रुत और बोआज विवाह करते हैं और वे राजा दाउद के परदादा परदादी हैं जो उन्हें यीशु का पूर्वज बनाते हैं।मत्ती 1:5, 6, 23

1और 2 शामूएल का अवलोकन

शामूएल, शाउल ओर दाउद तीन मुख्य चरित्र हैं। शामूएल परमेश्वर का एक सच्चा पुरुष है। उसके नाम के साथ कोई विवाद नहीं जुड़ा है जैसे कि बाईबल के अन्य पुरुषों के साथ जुड़ा है उदाहरण के लिए राजा दाउद।

1 शामूएल

1. उसका जन्म हमारे लिए शिक्षा है। 1 शामूएल1:1–8 बताती है कि कैसे हन्ना का विवाह एक पुरुष जिसकी अन्य पत्नी है, के साथ हुआ। हन्ना बांझ है और वह चाहती है कि उसकी एक संतान हो। 1:6 वह दूसरी पत्नी जिसकी संतान है, के द्वारा सतायी जाती है।
2. 9–18 आयतों में हन्ना परमेश्वर की ओर फिरती है और उससे प्रार्थना करती है कि यदि उसे एक पुत्र देंगे तो वह वायदा करती है कि वह उस पुत्र को जीवन भर परमेश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर देगी। आयत 18 की ओर ध्यान दें कि कैसे हन्ना को प्रार्थना के बाद शांति मिलती है। वह वाचा बांधती है कि उसका पुत्र एक नाजीर होगा। क्या यह एक अच्छी वाचा थी। यिप्ताह की वाचा को याद करें। लूका 1 में पवित्र आत्मा आज्ञा देती है कि यूहन्ना बपतिस्मादाता एक नाजीर होना चाहिए। हम गिनती ':2–8 में प्रथम बार नाजीर होने की सोच को सुनते हैं। यह जीवन भर या कुछ ही समय के लिए अलगाव की एक वाचा है।
3. अध्याय 1:20 बताती है कि परमेश्वर ने उसे एक पुत्र दिया और हन्ना ने अपनी वाचा को पूरा करते हुए अपने पुत्र को परमेश्वर की सेवा के लिए दे दिया। जैसे ही शामूएल बड़ा हुआ उसे एली याजक के पास सेवा के लिए पहुंचा दिया गया। हन्ना ने स्वेच्छा से अपने पुत्र को परमेश्वर को देने के द्वारा अपने पुत्र को पालने के

आनन्द को त्याग दिया। अक्सर परमेश्वर की सेवा के लिए एक कीमत है जिसे चुकाया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए मिशनरियों को अपने परिवारों को छोड़ना चाहिए।

यीशु के शब्द मरकुस 4:34 में याद रखें ''तब यीशु ने भीड़ और चेलों से कहा, ''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो वह स्वयं का इंकार करे और अपना क्रमस उठाकर मेरे पीछे हो ले।'' परमेश्वर ने लोगों कोअक्सर बलिदान देकर उसकी सेवा के लिए बुलाया गया है।

4. अध्याय 2: 1–11 हन्ना का गीत– वह प्रार्थना में परमेश्वर की महिमा करती है। इसकी तुलना मरियम और अन्य लोगों द्वारा परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के लिए प्रार्थना और स्तुति से की जा सकती है। हमें इसका अनुसरण करना चाहिए और परमेश्वर की स्तुति के लिए समय को बढ़ाना चाहिए।
5. अध्याय 2–3 एली याजक के पुत्रों की दुष्टता के विषय में बात करती है और परमेश्वर द्वारा दण्ड की घोषणा जो एली के परिवार में मृत्यु लेकर आई। जिसे हम 1 राजा 2:27 में देखते हैं।
6. अध्याय 3:1–10 शमूएल की बुलाहट के विषय में बताती है और कैसे परमेश्वर उसके साथ था। शमूएल न्यायियों में अन्तिम था। आइए परमेश्वर की बुलाहट की चर्च करें।
7. अध्याय 4:10–11 इस्राएलियों ने कैसे वाचा के संदूक को खोया, उस विषय को बताती है। वाचा का संदूक बहुत महत्वपूर्ण था और यह परमेश्वर की उपस्थिति को दर्शाता था। उन्होंने इसे खो दिया क्योंकि उन्होंने इसका उपयोग युद्ध में ले जाकर भलाई या एक मूर्ति समान ले जाकर युद्ध में विजय पाने की मनसा की। इसप्रकार मूर्तिपूजन के विषय में अब बात करें तो वह क्रूस पहनना या खुशकिसमती के लिए कोई चिन्ह है।
8. अध्याय 8 इस्राएल ने राजा की मांग की। हम देखते हैं कि शमूएल के पुत्रों को न्यायियों के तौर पर नियुक्त किया गया, परन्तु उसके पुत्र दुद्वट मनुष्य थे और वह घूस लेते थे आयत 3। इस कारण इस्राएल के पुरनियों ने उन्हें ठुकरा दिया और एक राजा की मांग की। शामूएल नाराज हुआ, आयत 7 में परमेश्वर ने उससे कहा कि उन्होंने शामूएल को नहीं परन्तु परमेश्वर को ठुकराया है। परमेश्वर ने अध्याय 8:10–18 में शमूएल द्वारा राजा के होने से होने वाली समस्याओं के विषय में चेताया। 19–22 आयतों में परमेश्वर ने उनकी इच्छा को पूरा किया। जैसे हम राजाओं के प्रभाव को लोगों पर देखते तो हम परमेश्वर की चेतावनियों की सच्चाई को देख पाते हैं। लोगों को अपने अगुवों का अनुसरण करना पड़ा और एक बुरा राजा लोगों को परमेश्वर के साथ समस्याओं में ले गया।
9. अध्याय 9 में परमेश्वर ने बिन्यामीन गोत्र से शाउल को राजा नियुक्त किया। आयत 2 में शाउल की कदकाठी का विवरण देखें। इसे याद रखें जब हम दाउद की ओर आते हैं।

दाउद के राजा होने से पूर्व राजा शाउल की कहानी। हम यहां यह भी देखते हैं कि राजा किस प्रकार का राजा है।

1. अध्याय 10 शाउल के अभिषेक का विवरण है जो बिन्यामीन गोत्र से था।
2. अध्याय 12 में शामूएल ने उनके अगुवे पद को छोड़ दिया और उन्हे परमेश्वर की आज्ञा मानने को कहा। आयत 13:25 ऐसा प्रतीत होते हैं जैसे मूसा द्वारा लोगों को अंतिम निर्देश हो।
3. कुछ विजयों के पश्चात् शाउल ने अपना वास्तविक दृष्य दिखाया। अध्याय 13:8–14 कैसे शाउल ने बलिदान भेंट चढ़ाया। परमेश्वर के लिए जिसे केवल शामूएल द्वारा किया जाना चाहिए था। शाउल के लिए क्यों यह गलत था िकवह बलिदान चढ़ाये? इस कारण शामूयल को राजा शाउल से कहना पड़ा कि उसका राज्य आगे नहीं जा सकेगाऔर परमेश्वर ने उसके स्थान पर राजा होने के लिए दूसरे को राजा नियुक्त कर लिया है। एक राजा जो परमेश्वर के हृदय के अनुसार हो।
4. अध्याय 13–14 में शाउल के विजयों का सिलसिला जारी रहता है बावजूद इसके कि शत्रुओं के पराजित होने से पूर्व किसी के द्वारा कुछ नहीं खाने जैसे कठोर वाचाएं कि यदि कोई खाए तो वह श्रापित ठहरेगा। फिर भी वह परमेश्वर द्वारा विजय रहा।
5. अध्याय 15 में बताया गया है कि कैसे दूसरी और अंतिम बार शाउल को राजा होने से इंकार किया गया। शामूएल द्वारा शाउल को शत्रुओं और उनके सभी पशुओं का विनाश करने का निर्देश दिया गया था। शाउल ने परमेश्वर की इस आज्ञा का पालन नहीं किया और परमेश्वर ने उससे कहा कि उसे राजा बनाकर परमेश्वर पछताया। शाउल ने पश्चताप किया परन्तु बहुत देर हो चुकी थी, और शामूएल ने उसे हमेशा के लिए त्याग दिया।

1 शामूएल अध्याय 16–31 राजा शाउल और दाउद दोनों के विषय में बात करती है। हमारे पास इस अध्ययन के लिए पर्याप्त समय नहीं है इसलिए मुझे इस कहानी को बहुत संक्षिप्त रुप में बताने दीजिए। परमेश्वर ने दाउद को अगला राजा होने के लिए नियुक्त किया। अध्याय 16:7 में उसकी योग्यताएं देखिए, यह उसका हृदय था। किसी व्यक्ति को उसके हृदय के अनुसार न्याय करना महत्वपूर्ण है, परमेश्वर भी यही करते हैं देखे लूका11:3 और मती 23:27

1. शामूएल में एक विस्तृत कहानी है जो पुस्तक के अन्त तक जारी रहती है। कहानी बताती है कि कैसे शाउल ने ईर्ष्यावश दाउद को बार बार मारने का प्रयास किया, परन्तु दाउद ने अवसर होने के बावजूद भी परमेश्वर के अभिषिक्त की हानि करने से इंकार किया। हम कुछ कहानियों को देखेंगे।
2. अध्याय 17 दाउद और गोलियत की परिचित कहानी के विषय में है। यह कहानी दाउद के महान विश्वास के विषय में है जैसे उसने अपने जीवन के साथ परमेश्वर पर भरोसा किया। दाउद ने राजा शाउल के लिए एक बड़ी विजय को प्राप्त किया।
3. अध्याय 18:1–16 शाउल द्वारा दाउद के कार्य की प्रसंशा की कहानी है।
   परन्तु शीघ्र शाउल ने दाउद से नफरत करनी शुरु कर दी और उसे मार डालने का प्रयत्न किया। 1 शामूएल 18:7–9 शाउल की ईर्ष्या का कारण बताती है। ईर्ष्या बहुत लोगों को बरबाद कर देती है।
4. हम अध्याय 18 :10 में देखते हैं कि परमेश्वर ने हानि पहुंचाने वाली आत्मा को शाउल के पास भेजा जिसने शाउल को पागल व्यक्ति के समान बना दिया। पीछे अध्याय 16: 13–14 की ओर देखें। हम देखते हैं कि परमेश्वर ने अपनी आशीषों को शाउल से हटा लिया और दाउद को आशीषित किया।
5. आयत 11 बताती है कि शाउल का क्रोध इतना बढ़ गया कि उसने कई बार दाउद की हत्या का प्रयत्न किया परन्तु वह परमेश्वर की आशीषों पर जयवन्त न हो सका।
6. अध्याय 24:1–7 दाउद शाउल को मार सकता था लेकिन उसने ऐसा नहीं किया इसका कारण हम देखते है कि उसने महसमस किया कि ''शालउ परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त किया गया था।''2 शामूएल अध्याय 2 बताती है कि दाउद ने शाउल को घात करने वाले की हत्या कर देने का हुक्म दिया।
7. अध्याय 29 हमें यह उदाहरण देता है कि कितना अधिक दाउद दुष्ट होकर परमेश्वर से दूर हो चुका था कि उसने जादू का सहारा लिया। शाउल ने जो किया उसे व्यवस्थ्ज्ञज्ञथ्ववरण 18:10–12 में मना किया गया है। 1 इतिहास 10:13–14 हमें बताती है िकइस कारण शाउल की मृत्यु हुई और उसके परिवार का राज्य समाप्त हो गया।

2 शामूएल

यह आधारभूत रीति से दाउद के राज्य की कहानी है। वह एक ऐसे व्यक्ति` तौर पर जाना गया, जिसने कई गलतियां की परन्तु उसे परमेयवर को प्रेम करने वाले व्यक्ति के तौर पर भी जाना गया। क्योंकि उसने पश्चताप करने में विलम्ब नहीं किया। उसे प्राथमिक रीति से एक योद्धा राजा के तौर पर जाना गया। वह निरन्तर युद्ध करता रहा और उसने सीमाओं का विस्तार किया और लगभग परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञा किए हुए देश के सभी भागों को शामिल किया। पहले दाउद को यहूदा को सुरक्षित करना पड़ा पत्पश्चात उसने इस्राएल को सुदृढ़ किया। अन्त की अधिकतर लड़ाईयां उसे बेत्शेबा के साथ पाप करने के कारण लड़नी पड़ी जिस कारण उसके पुत्र ने भी उससे विद्रोह किया।

1. अध्याय 1–10 पहला भाग जो दाउद द्वारा उसके राज्य को सुदृढ़ करने के लिए लड़ाईयों के विषय में है।
1. दाउद को अपने राज्य का सुदृढ़ करने में छह वर्षों का समय लगा। कुल मिलाकर दाउद ने साढ़े सात वर्षों तक यहूदा और तैंतीस वर्षों तक पूरे इस्राएल पर शासन किया।
2. अध्याय 5 बताती है कि कैसे उसकी सेना ने यरुशलेम जिसे सियोन भी कहा जाता है, पर विजय प्राप्त की। इसे दाउद नगर भी कहा गया। यह इस्राएल की राजधानी इना और यह उनकी आराधना का मुख्य केन्द्र था। वह आज भी राजधानी है।
3. अध्याय 6 बताती है कि कैसे वाचा का संदूक यरुशलेम में आया। 6–7 आयतें हमें बताती है कि परमेश्वर यह अपेक्षा करते हैं कि उनकी आज्ञा का पालन किया जाए। यह आयतें दो अपराध प्रकट करती है। एक तो यह है कि वे परमेश्वर के संदूक को उस प्रकार नहीं ला रहे थे, जैसी आज्ञा इसके लिए पिर्गमन 25:12–14 में दी गई है। दूसरा उज्जाह एक लेवी नहीं था और उसे संदूक को छूने की आज्ञा नहीं दी गई थी। यह एक मुसीबत लाने वाली कहानी है परन्तु हमें शिक्षा देती है कि परमेश्वर उसकी आज्ञाओं का पालन करने के प्रति कितना गंभीर है और इस विषय में भी कि कितनी गंभीरता से वह पाप के साथ व्यवहार करता है।

A- दाउद और इस्राएल वाचा के संदूक को यरुशलेम में लाने पर आनन्दित हुए 2 शामूएल 6:13–21 ।2शामूएल 6:13–15 तक खुशी के उल्लास के विषय में बताती है। यह अच्छा है कि हम वास्तव में परमेश्वर का उल्लास मनाए।

B- 16,20–23 आयतों में ध्यान दें कैसे दाउद की पत्नी मिकाइल ने दाउद के आनन्द मनाने पर प्रतिक्रिया दी। य आप इस की बेटी थी।आप इस विषय में क्या सोचते हैं।

4. अध्याय 7 दाउद की श्रद्धापूर्वक परमेश्वर की आराधना के लिए एक भवन बनाने की इच्छा करना। लेकिन हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने उसे ऐ करने से मना किया। 1इतिहास 22:8 में हम पढ़ते हैं कि यह दाउद की संतान

द्वारा बनाा जाना था क्योंकि दाउद के हाथों पर बहुत सी हत्याओं का खून था। परमेश्वर ने दाउद की सोच को सम्मानित किया और उसने दाउद से वाचा बांधते हुए कहा कि:

A- 10–11 आयत में परमेश्वर इस्राएल के सदा निवास के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान करेगा।

B- 12–13 आयतें परमेश्वर दाउद के बेटे को मंदिर निर्माण के लिए खड़ा करेगा।

C- आयत 13 परमेश्वर दाउद के सिंहासन को सदा स्थिर करेगा।

D- आयत 14 परमेश्वर दाउद की पीढ़ी से पिता पुत्र के समान संबंध स्थापित करेगा। हम आज इस रिस्ते का आनन्द लेते हैं जबकि हम परमेश्वर की गोद ली हुई संतानें हैं।

E- आयतें 14–15 परमेश्वर की दयालुता शाउल के घराने के समान दाउद के घराने से नहीं हटेंगी। इसे दाउदीय वा के तौर पर जाना जाता है जो यीशु में पूर्ण हुई। आयत 18–19 दाउद की कृतज्ञता की प्रार्थना है।

5. अध्याय 8–10 और महान विजयों को दर्ज करती है और शाउल के नाती पर दयालुता को भी बताती है।

2 अध्याया 11–19:8 दाउद का पाप और पारिवारिक समस्याएं

1. सभी अच्छी बातों के बाद दाउद द्वारा व्यविचार औरहत्या की भयावह कहानी है और जब बेतशेबा गर्भवती हो इई तो दाउद ने बेतशेबा के पति की हत्या करवा दी। इसलिए राजा दाउद ने व्यभिचार और हत्या की।
2. अध्याय 12 बताता है कि कैसे नातान नबी ने दाउद के पाप के साथ सामना किया और आयत 13 दाउद के हृदय को दिखाती है कि जैसे ही उसका उण्ड बताया गया, दाउद ने तुरन्त पश्चताप किया। 15–22 आयतें बताती है कि बेतशेबा से उत्पन्न उसका पुत्र मर गया। दाउद ने उपवास के साथ बच्चे की रक्षा के लिए प्रार्थना की परन्तु वह मर गया। हमस ीखते हैं कि दाउद को क्षमा कर दिया गया उस पाप के लिए जो उसने किया था परन्तु उसे दण्डित किया गया। 23 आयत में हम देखते हैं कि यहां जीवन के बाद मृत्यु है और हम यह भी देखते हैं कि दाउद ने परमेश्वर की इच्छा को स्वीकार किया।
3. अध्याय 13–18 दाउद के पाप के कारण उसकी कीमत चुकाने के विवरण को ही आगे बढ़ाता है, उसके बेटे अम्मोन ने अपनी सौतेली बहन तामार का बलात्कार कियाजिसकी वजह से उसके भाई अबशालोम ने अम्मोन की हत्या कर दी। इसके बाद अबशालोम ने पूर्ण रुप से विद्रोह कर दिया जिससे दाउद को शहर छोड़ कर भागना पड़ा। अबशालोम ने लोगों के देखते अपने पिता की पत्नियों और रखैलों के साथ शारीरिक संबंध बनाये। अन्त में अबशालोम मारा गया और दाउद सबके सामने अपने पुत्र के लिए रोया। एक व्यक्ति पश्चताप कर सकता है परन्तु उसके पापों के लिए इस पृथ्वी पर उसे दण्डित किया जाता है।

3 अध्याय 19 – 24 इस पुस्तक का अन्त दाउद की और अधिक समस्याओं के साथ होता है।

1. अध्याय 20 बताती है कि बिन्यामीन गोत्र के एक अयोग्य व्यक्ति शीबा द्वारा राजा दाउद के विद्रोह राजद्रोह की अगुवाई की।
2. अध्याय 21 की शुरुआत तीन वर्ष के आकाल के साथ होती है जिसका कारण परमेश्वर नेदाउद को बताया कि राजा शाउल द्वारा गिबोनियों के साथ अन्याय के कारण है
3. अध्याय 21 का अन्त फिलिस्तयों के साथ युद्ध है।
4. अध्याय 22 जा दाउद का छुटकारे का गीत है। पढ़ें आयत 1–7 ।
5. अध्याय 24 2 शामूएल की पुस्तक का अन् दाउद की औरा अधिक समस्याओं में पड़ने के साथ है। हम यह भी पढ़ते हैं कि यरुशलेम में परमेश्वर के लिए बलि चढ़ाने के लिए एक स्थान खरीदा गया। इस अन्तिम अध्याय में दोनों अच्छी और बुरी बातें पाई जाती है जो यह बताती है कि दाउद ने कैसे जावन जीया।

   A- हम पहली आयत में पढ़ते हैं कि कैसे शैतान ने दाउद को उभारा कि वह गिनती करने का हुक्म दे जो कि परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध था।

   B- हम नहीं जानते कि यह क्यों गलत था, आयत 10 दिखाती है कि दाउद यह जानता था कि गिनती की आज्ञा देकर वह पाप का दोषी था और उसका विवके उसे परेशान करता है और वह पाप के सम्मुख प्रयश्चित के लिए गया।

   C- 11–17 आयतें परमेश्वर द्वारा दाउद को दण्डित करने की कहानी है। परमेश्वर ने उसे तीन दण्डों का चुनाव दिया। दाउद ने चुना और परमेश्वर ने महामारी भेजी जिससे 70,000 पुरुष मार डाले गये। 1शामूएल 8:9–18 शामूएल सही था राजा समस्या का कारण होते हैं। किसे राजा की आवश्यकता है।

   D- 2 शामूएल 24:18–25 पुस्तक में अंतिम कहानी है कि जो यह बताती है कि कैसे दाउद ने वेदी के लिए स्थान खरीदा। और यह वह स्थान है जहां पर बाद में मंदिर बनाया गया। ध्यान दें आयत 24 यहां हमारे लिए एक शिक्षा है कि हमें परमेश्वर की सेवा के लिए कीमत चुकाने के लिए तैयार रहना चाहिए। हम

जानते हैं कि दुनिया में कई देशों में आज हजारों मसीही लोग सताए जाते हैं क्योंकि वे परमेश्वर की आराधना और सेवा करते हैं।

नीचे हाल में युगाण्डा में सताव के विषय एक आलेख हैः

हाल के वर्षों में अधिकतर सताहट मुस्लिम बहुल राष्टों में घटित हुए हैं। ईदी अमीनजिसने स्वयं को राष्टपति घोषित किया, एक मुस्लिम जिसने 1971 ई0 मेंयुगाण्डा में सत्ता पर अधिकार किया और शीघ्र ही उसके क्रूर अनुयायियों ने सउदी अरब और लीबिया कीआर्थिक मदद द्वारा युगाण्डा में मुस्लिम राष्ट्र की स्थाप्ना के लिए कार्य करना शुरु कर दिया।जिस समस्या का उन्होंने सामना किया वह यह थी कि उनके बहुत से लोग भक्तिपूर्ण मसीही थेइसलिए उन्होंने हत्याओं की प्रथा को शुरु किया जो विश्वास से परे है.....1979 तक उसके भय के शासन काल में जब तक तन्जानिया सैनिकों द्वारा पद से हटाया गया, तब तक लगभग 500000 युगाण्डा वासियों का कत्ल किया जा चुका था, 300000 उनमें से विश्वासी थे।

हम मसीहियों को दाम चुकाने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

1 और 2 राजा का अवलोकन

जैसे कि शीर्षक हवाला देता है, यह राजा दाउद के पश्चात्यरुशलेम के ढाए जाने और स्वतंत्र राजशाही के अन्त तक इस्राएल के सभी राजाओं की कहानी है। यह एक दुःखित कहाली है जो बताती है कि कैसे सुलेमान एक ऐसे समय राजा बना जब इस्राएल धनी और शक्तिशाली राष्ट था। अधिकतर यह कहानी परमेश्वर के लोगों द्वारा परमेश्वर की आज्ञा पालन करने में असफलता की है, जिससे उनका राष्ट शीघ्रता से पतन की ओर जाने लगा। राजा सुलेमानसिंहासन पर एक महान राजा होने के वायदे के साथ बैठा, परन्तु उसने इब्रानी समुदाय से बाहर विवाह किया और उसकी पत्नियों ने उसे मूर्तिपूजा की ओर अग्रसर किया। इतिहास पुनः इस्राएल की कहानी को दोहराता है, परन्तु यह एक भिन्न दृष्टिकोण से है जो कि याजक के लिए है।

हम पहले राजा कोदो भागों में बांटते हैं। पहला भाग अध्याय 1–12 है जो राजा सुलेमान और उसके सयुंक्त राज्य के विषय बताता ह।, और दूसरा भाग विभाजित राज्य के पहले भाग के विषय में बताता है। राजा की दोनों पुस्तकें वास्तव में एक है और पहला राजा से कहानी आगे जारी रहती है। यह परमेश्वर के लोगों द्वारा उससे पीठ फेरने की कहानी है। यहां वे लोग झूठे देवताओं की ओर फिर गये जबकि परमेश्वर ने कई तरीकों से उन्हें वापस उसकी ओर लाने का प्रयत्न किया। यहां तक कि भविष्यवक्ताओं को भेजने के द्वारा भी।

1. राजा सुलंमान सयुंक्त राज्य पर शासन करता है।

1. अध्याय 1: 1–5 इससे पहले कि राजा दाउद की मृत्यु दो परिवार में राजा होने के लिए एक लड़ाई होने लगी। अदोनियाह जो दाउद की प्ररंभिक पत्नियों में से एक का बेटा था, उसने स्वयं को अपने उस अधिकार से राजा घोषित कर दिया जो वास्तव में उसके पास नहीं है। जब राजा दाउद ने यह सुना तो उसने बेतशेबा के पुत्र सुलेमान के राजा होने की घोषणा कर दी। अन्त में अदोनियाह को मार डाला गया और सुलेमान ने अपने भाई की हत्या करवाकर अपने राज्य को मजबूत किया।

2.अध्याय 2:14 राजा दाउद द्वारा सुलेमान के साथ अंतिम वचन है जहां उसने अपने पुत्र को परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने के लिए कहा। यहां पर आशीष का वादा है।

3.अध्याय 3:1–2 बताती है कि इस्राएल के पतन का बीज सुलेमान द्वारा फिरौन की बेटी के साथ विवाह द्वारा बोया जा चुका था। इसके बाद हम सुलेमान के शासन की शीर्ष बिन्दु के विषय में पढ़ते हैं। 5–14 आयतें बताती है कि कैसे परमेश्वर ने सुलेमान से पूछा कि वह क्या चाहता है, स्वयं के लिए मांगने के बजाय उसने परमेश्वर से एक अच्छा शासक होने के लिए बुद्धि मांगी। परमेश्वर इससे प्रसन्न हुआ और उसने सुलेमान की बिनती को पूरा किया और 12–14 आयतों में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने उससे बढ़कर उसे दिया। 16–18 आयतें हमे सुलेमान द्वारा लिए गए निर्णय के विषय में बताती है ि कवह कितना बुद्धिमान था। हम देखते हैं कि निसंदेह सुलेमान ने एक महान राजा के तौर पर शुरुआत की परन्तु हम देखेंगे परमेश्वर के प्रति उसकी अविश्वासयोग्यता के कारण वह एक महान शासक के तौर पर असफल होने के द्वारा अन्त कर सका न कि एक महान शासक कके समान।

4 .अध्याय 4 बताती है कि परमेश्वर की आशीषों के साथ कैसे राज्य भरपूरी से पूर्ण था। आयत 20–23 और 25–26 देखें। 29 – 31 आयतों में देखें कि सुलेमान कितना आशीषित राजा था।

5.अगली कहानी दूसरी आशीष के विषय में है – मंदिर का भवन जो कि अध्याय 5 से शुरु होकर अध्याय 8 तक इसके समर्पण के साथ जारी रहती है। मंदिर वह स्थान बन गया जहां परमेश्वर अपने लोगों के साथ निवास करते थे और जहां वे परमेश्वर की आराधना करते थे। मंदिर बहुत ही विशाल और महंगा था। उदाहरण के लिए इसके निर्माण के लिए बहुत सोना उपयोग किया गया था। मंदिर का निर्माण सुलेमान के शासन काल केस्वर्ण युग में हुआ था। अध्याय 8:63 को देखें कि मंदिर के समर्पण के लिए कितना अधिक खर्च किया गया था। सैकड़ो वर्षों के लिए यहूदी जीवन मंदिर पर केन्द्रित था। अभी उनके पास पापों की क्षमा के लिए बलिदान चढ़ाने के लिए स्थान नहीं है।

6. अध्याय 9:1–9 हमें बताती है कि जैसे ही मंदिर का निर्माण पूरा हुआ तो फिर परमेश्वर ने सुलेमान को दर्शन दिया। परमेश्वर ने फिर से आज्ञाकारिता के लिए आशीषों और अनाज्ञाकारिता के लिए दण्ड का वादा किया।

7.अध्याय 9:10–11:13 सुलेमान के राजा होने के स्वर्ण युग के विषय में बताती है। वह ऐसी धन सम्पदा द्वाराआशीषित किया गया जो किसी अन्य राजा के पास नहीं थीं दूसरे शासकों द्वारा उसका सम्मान किया गया। हम यह भी देखते हैं कि उसकी 700 पत्नियां और 300 रखैल थें। अध्याय 11:2–8 बताती है कि कैसे परमेश्वर इस वजह से क्रोणित हुआऔर इन पत्नियों ने सुलेमान को सच्चे आराधना से भटका कर मूर्तिपूजा की ओर ले जाने में अगुवाई की।

8. अध्याय 11:9–13 बताती है कि क्यों परमेश्वर सुलेमान से क्रोधित थे और कैसे परमेश्वर का दण्ड सुलेमान के लिए मुसीबतें लेकर आया, यारोबाम भी इसमें शामिल था जिसने सुलेमान के पुत्र से अधिकतर राज्य ले लिया था। परमेश्वर ने सुलेमान के पिता दाउद के कारण सुलेमान की मृत्यु तक दण्ड को टाले रखा।

9. सुलेमान के जीवन से सीखने के लिए शिक्षाएं हैं। सुलेमान के समान धन और बुद्धि से आशीषित कोई दूसरा नहीं था। उसके पास परमेश्वर द्वारा दिया हुआ वो सब था जो एक व्यक्ति चाह सकता है। तब उसने परमेश्वर की ओर से मुंह फेर लिया और उसके जीवन के अन्त में यह महसूस किया कि उसका जीवन कैसा व्यर्थ रहा। सभोपदेशक की पुस्तक पढ़कर देखें कि कैसे उसने यह महसूस किया कि उसने अपना जीवन कैसे व्यर्थ किया।

बहुत से लोग देरी से महसुस करते हैं कि उन्होंने धन का पीछा किया और अकेलेपन के जीवन को खुद ही खुशी के लिए जीया, परन्तु उन्होंने अपने जीवन को व्यर्थ ही किया। हमारे पास जीने के लिए केवल एक ही जीवन है। प्रश्न यह है कि क्या इसे मह स्वयं लिए जीयेंगे या परमेश्वर के लिए।

राजा सुलेमान का शासन इस्राएल के इतिहास के चरम पर था। हम पढ़ते हैं राज्य कितना विशाल और सम्पन्न था। इस्राएल को शेष इतिहास उसके पतन की कहानी ही है। उत्तरी राज्य के संघर्ष में उसका पतन निरंतर था। जबकि यहूदा से संदर्भ में उतार चढ़ाव थे। उतरी राज्य के राजा पापी थे, परन्तु यहूरा राज्य में कुद राजा परमेश्वर का भय मानने वाले थे जिस कारण परमेश्वर का दण्ड देरी से आया।

2 प्रथम राजा का अगला भाग विभाजित राज्य के विषय में बात करता है।

1. अध्याय 12: 4–14 सुलेमान का वारिश उसका पुत्र रहूबियाम था जो लोगों के साथ बहुत कठोर था जिस कारण अधिकतर लोगों ने उसके विरुद्ध विद्रोह किया। रहूबियाम के उतावलेपन ने उसके राज्य को बर्बाद कर दिया। हम 18–19 आयतों में देखते हैं कि उतरी राज्य ने विद्रोह किया। वे लोग यारोबाम के साथ चले गये जिसने अलग एक राज्य की सीाप्ना की जिसे उतरी राज्य इस्राएल या एप्रैम के नाम से जाना गया। वास्तविक राज्य के साथ केवल यहूदा और बिन्यामीन गोत्र का कुछ ही भाग रह गया।
2. रहूबियाम की पहली प्रतिकिया सेना लेकर वापिस लाने की थी, परन्तु परमेश्वर ने दूसरा निर्देश दिया। अध्याय 12:21–24 क्यों? शायद यहूदा को विनाश से बचाने के लिए? याद रखें रहूबियाम दो गोत्रों ाके साथ लेकर दस गोत्रों के साथ युद्ध करना चाहता था। बाद में इतिहास में दोनों राष्टों के मध्य युद्ध हुआ।
3. अध्याय 12:25–35 में यारोबाम ने इस्राएल में दो आराधना स्थल नियुक्त किये जिसने इस्राएल को लम्बी अवधि के लिए प्रभावित किया। उसने अपने लोगों के लए आराधना करने के लिए दो सोने के बछड़ों को बनवाया। इस प्रकार उसने अपने लोगों को सच्चे परमेश्वर से दूर ले गया और स्वयं लोगों को मूर्तिपूजा की ओर ले गया। उसने ऐसा इसलिए किया कि लोग यरुशलेम न जाएं और सच्ची आराधना न करें, जहां वे लोग अपने भाइयों के साथ यहूदा में फिर न मिल जाएं। यारोबाम परमेश्वर की दृष्टि में एक दुष्ट राजा था। हर बार जब बाईबल में इस्राएल चाहे यहूदा के राज्य के विषय में बताया गया तो यह बताया गया किनया राजा परमेश्वर की दुष्टि में अच्छा था या दुष्ट था। इस्राएल के सभी राजा बुरे थे। यहूदा के कुछ राजा अच्डे थे और कुछ बुरे जो शायद यह व्याख्या करने के लिए है कि क्यों यहूदा उतरी राज्य की तुलना में अधिक समय बचा रह पाया।
4. अब तक इस्राएल के राजा आहाब की ओर आते है। जिसके विषय में हमें 1 राजा 16:30 में बताया गया है कि वह सबसे दुष्ट राजा था। उसने इजाबेल नामक स्त्री से विवाह किया जो इतनी दुष्ट थी कि इन दिनों में भी बुराई के साथ उसके नाम का पर्याय जाना जाता है। हम 31–38 आयतों में देखते हैं कि आहाब द्वारा इस्राएल

में बाल की उपासना शुरु करने के कारण ही उसके पूर्वजों से भी बुरा कहा गया। आयम 33 बताती है कि उसने यह सब किया जो परमेश्वर को क्रोधित काता था।

5. अध्याय 17 में हम बाईबल की एक जबरदस्त शख्शियत से परिचित होते हैं। एलियाह नबी उतरी राज्य की घटना में प्रवेश करता है। परमेश्वर ने यहूदा और इस्राएल दोनों ही राज्यों में कई नबियों को भेजा। उसने लोगों के व्यावहार को सही करने के लिए ऐसा किया– ताकि वे अपने पापों से प्रयश्चित करें और जिस प्रकार उन्हें परमेश्वर की आराधना करनी थी वैसी आराधना वे करें।

इस्राएल के पापों के कारण अध्याय 17:1 में एलियाह ने यह भविष्यवाणी की कि जब तक वह अनुमति नहीं देगा तब तक वर्षा नहीं होगी। ऐसा ही हुआ भी। एक सच्चे भविष्यवक्ता की पहचान उसकी भविष्यवाणी के पूर्ण होने से होती है और अ7 हमें बताती है कि सूखा आया। परमेश्वर ने सूखा आने दिया क्योंकि वक लोग पापी थे।

इस कारण एलियाह का जीवन राजा आहाब के हमलों से खतरे में था इसलिए आयत 2–6 बताती है कि कैसे परमेश्वर ने अपने नबी की सुरक्षा और भरण पोषण किया। हम सीखते हैं कि यदि परमेश्वर के पास आपके लिए कार्य है तो वो आपकी आवश्यकताएँ पूरी करेगा और आप की सुरक्षा करेगा।

आयत 7 हमें बताती है कि यह समय था कि एलियाह परमेश्वर द्वारा उसके लिए रखे गए अन्य काम के लिए आगे बढ़ें। 8–24 आयतों में नबी सारपत में गया जहो उसने एक विधवा और उसके पुत्र के जीवन की रक्षा की। पहली बात उसने यह की कि उनके लिए भोजन को उपलब्ध किया क्योंकि देश में आकाल होने के कारण भूखे थे। अगला अध्याय 17:17–23 बताती है कि उसने एक मरे हुए बेटे को फिर से जिंदा किया। यह महत्वपूर्ण था कि यह सब कुछपराए देश में किया। बाद में लूका 4:26 में यीशु ने इस कहानी को बताया ताकि वह यह बात रख सके कि वह सिर्फ यहूदियों के लिए नहीं भेजा गया परन्तु सभी लोगों के समूह को छुड़ाने के लिए आया। क्यों यहूदी लोग बहुत जलन रखने वाले थे? ईर्ष्या एक भयानक पाप है जो आमतौर पर भयानक परिणाम लाती है, और यह समस्या कलीसिया में भी है।

अध्याय 18 में एलियाह इस्राएल वापिस लौटता है जो एलियाह द्वारा की हुई भविष्यवाणी के कारणपिछले तीन वर्षें से सूखे से गुजर रहा था।

अध्याय 18:23 बाईबल में मेरी पसंदीदा कहानियों में से एक से शुरु होती है, एक असाधारण कहानी। यह कहानी एलियाह द्वारा सूखा होने की भविष्यवाणी के तीन वर्षों बाद घटित हुई। एलियाह ने बाल के नबियों को चुनौती दी कि प्रतियोगिता द्वारा यह जान लिया जाए कि कौन सच्चे परमेश्वर की सेवा करते हैं। आयत 29–30 पढ़िए कि कैसे एलियाह बाल के नबियों को अपमानित करता है। एलियाह ने बाल के नबियों को पूरी तरह अपमानित किया और आयत 40 में उसने झूठे नबियों को मार डाला। क्या आप 46 आयत पर विश्वास कर सकते हैं कि एक मनुष्य एक घोड़े से अधिक तेज दौड़ सकता है? इन घटनाओं ने लोगों को पूरी तरह आयवस्त किया कि वे झूठे देवताओं को त्याग दें और सच्चे परमेश्वर की आराधना करें।

अध्याय 19 बताती है कि कैसे भय ने एलियाह को जकड़ लिया और वह राजा आहाब के क्रोध से भागा। यह आयत साबित करती है कि हम सभी के साथ ऐसा समय आता है जब हमारा विश्वास विचलित होता है। देखें मती 14:28–31 और ध्यान दें कैसे यीशु ने पतरस की सहायता की ज बवह असफल हुआ। आयत 5–6 में पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने एलियाह की सहायता की ज बवह निराश झिा और कैसे परमेश्वर ने एलियाह को सेवकाई के लिए फिर से स्थापित किया। आयत 18 बताती है कि परमेश्वर हमेशा अपने लोगों को बचाये रखता है।

अध्याय 19:16–21 एलिशा के बुलाहट के विषय में बताती है। एक जबरदस्त नबी जिसने एलियाह का स्थान लिया। परमेश्वर कलीसिया के अगुओं को सिखाता है कि वेनिश्चय ही सेवकों को तैयार करे ताकि उनकी सेवकाई उनके बाद के समय भी जारी रहे। यह महत्वपूण। है कलीसिया के अगुवों के लिए कि वे किसी को प्रशिक्षित करे कि वो उनकी सेवकाई का दायित्व ले सके और उसे आगे बढ़ा सके। मैं आशा करता हूं कि जिस वर्तमान सेवकाई में मैं शामिल हूं वह मेरी मृत्यु के पश्चात् भी स्थिर रहेगी।

2 राजा 2:1–12 बताती है कि कैसे एलियाह स्वर्ग में उठा लिया गया। एलियाह और हनोक देखें उत्पति 5:24 केवल वे ही दो लोग हैं बाईबल में जिनकी मृत्यु नहीं हुई। हम पढ़ते हैं कि कैसे परमेश्वर ने एक ''अग्निमय रथ'' भेजकर एलियाह को सीधे स्वर्ग उठा लिया। जो मसीही लोग जीवित हैं वे मसीह के दुबारा आगमन पर शारीरिक मृत्यु को न देखेंगे। थिस्सलुनीकियो 4:16–17 एलियाह और हनोक विशेष व्यक्ति थे जिन्होंने मृत्यु की पीड़ा नहीं सही।

1राजा की कहानी आगे जारी रखते हुए बताती है कि आहाब और इजेबेल कितने दुष्ट थे। अध्याय 21 में हम षड्यंत्र द्वारा नाबोत की भूमि को चुराने की कहानी को पढ़ते हैं। आयत 9–10 में हम पढ़ते हैं कि इजेबेल ने नाबोत को मारने की योजना बनाई ताकि वे उनकी सम्पति को चुरा सके।

1राजा 21:17 बताती है कि कैसे परमेश्वर ने एलियाह को वापस जाकर आहाब को उसके पाप पाप के विषय में करने के लिए कहा।21–24 आयतों में एलियाह ने आहाब और उसके परिवार पर परमेश्वर के दण्ड की घोषणा की। आयत 23 बताती है कि किस प्रकार कुत्ते इजेबेल का मांस खायेंगे। 2राजा 9:33–37 इस भविष्यवाणी के पूर्ण होने की कहानी को बताती है।

1राजा 21:27–29 बताती है कि राजाआहाब ने स्वये को परमेश्वर के सम्मुख पम्र किया जिस कारण परमेश्वर का उण्ड अगली पीढ़ी तक के लिए देरी से आया। 2इतिहास 33 राजा मन्नशै की उसी प्रकार की कहानी को दर्ज करती है। राजा मन्नशै यहूदा का एक बहुत ही दुष्ट राजा था उसने भी परमेश्वर द्वारा न्याय की घोषणा किए जाने के पश्चात् पश्चताप किया और परमेश्वर ने उसकी मृत्यु तक उण्ड को टाल दिया।

अंतिम कार्य जो आहाब ने किया वह यह था कि उसके परमेश्वर द्वारा भेजे गए नबी की बात को कि यदि वह युद्ध में गया तो उसका विनाश होगा, को नहीं सुना।

7. एलीशा की सेवकाई एलियाह के समान ही लोगों को उनकी मूर्तिपूजा से फिरने की पुकार की ताकि परमेश्वर अपने लोबों को आशीष दे सके।

एलीशा ने भी कई चमत्कार किए 2राजा 2:8–21 बताती है कि उसने किस प्रकार यरीहो शहर के लिए पानी को शुद्ध किया।

अध्याय 4:1–7 एलीशा द्वारा निर्धन विधवा की सहायता की घटना को बताती है। परमेश्वर द्वारा विधवाओं और अनाथों के प्रति विशेष प्रेम पर टिप्पणी करें। याकूब 1:27 सिखाती है कि हम मसीहियों को किस प्रकार विधवाऔं और अनाथों के प्रति व्यवहार करना चाहिए वे परमेश्पर की नजरों में विशेष है।

अध्याय 4:8–36 बताती है कि एलियाह के समान एलीशा ने भी एक स्त्री के पुत्र को जीवित किया। यहां पांच लोग हैं जिन्होंने लोगों को मृतकों में से जिलाया। ये लोग हैं एलियाह, एलीशा जो पुराने नियम में है और नया नियम में यीशु, पतरस और पौलुस है।

अध्याय 13 एलीशा की मृत्यु का विवरण देती है।अध्याय 20–21 बताती है कि मृत्यु के पश्चात् भी वह परमेश्वर की सामर्थ द्वारा एक व्यक्ति को फिर जीवित कर सका। यह आश्चर्यकर्म परमेश्वर द्वारा किया गया था न कि मृत एलीशा द्वारा।

8.बाईबल में आश्चर्यकर्मों का उद्देश्य क्या है, दया का कार्य? वे यीशु और एलीशा के समान लोगों की सेवकाई की विश्वसनीयता के लिए थी।

इस्राएल का सारांश – उत्तरी राज्य

1.वहां पर 19 राजा थे और वे परमेश्वर की दृष्टि में अच्छे नहीं थे। उमरी राज्य लगभग 280 वर्षों तक बना रहा इससे पहले कि अशीरिया ने इस राज्य पर कब्जा किया और तब से यह सदा के लिए खत्म हो गया। उन दिनों में यह दस्तूर था कि जीतने वाला राजा लोगों को उसके देश से बंधुवा बनाकर अपने देश में लेजाकर फिर से बसाते थे। ऐसा करने से वे सोचते थे कि उनके द्वारा बंधुवा बनाए गए लोग फिर से एकजुट और विद्रोही नहीं होंगे। तब वे दूसरे बंधुवे लोगों को उस देश में जिसे उसी समय खाली किया गया हो वहां बसा देते थे।

यहूदा के लोग और यीशु के समय के लोग सामरियों जिन्होंने पुराने उतरी राज्य पर कब्जा कर लिया था, उनसे वे घृणा करते थे क्योंकि उन्होंने उनके रिस्तेदार लोगों के देश को चुरा लिया था। आप इस घृणा का `नये नियम में पढ़ेंगे। असीरिया द्वारा जो दस गोत्र बंधुआ बनाकर ले जाये गये तब से उनके विषय में नहीं सुना गया और सामुदायिक रुप से उन्हें इस्राएल के खोए हुए गोत्रों के तौर पर जाना जाता है।

2.इस्राएल के राजाओं की कहानी एक दुःखमय कहानी है जैसे वे परमेश्वर से फिर गए और दण्ड पाने तक अपनी राह पर चले गए। वे आशीष और भरपूरी से विनाश की ओर चले गउ।

3.आइए 814 इ.ब. में इस्राएल के एक प्रतीकी राजा को देखें– यहोयाज पढ़ें 2राजा 13:1–9 वह दुष्ट था और परमेश्पर ने उनके शत्रुओं को उसे दण्डित करने दिया। तब आयत 4 में राजा ने परमेश्वर से प्रार्थना की और परमेश्वर ने उन्हें बचाया ताकि वे पुनः सुरक्षा में रह सके। तब 6–7 आयतें बताती है कि उन्होंने फिर से परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया और परमेश्वर ने फिर से राज्य को दण्डित किया। यह राजा सीरिया की सेना द्वारा उसकी सेना के विनाश के 17 वर्ष

पूर्व शासक रहा। क्या यहां कोई प्रश्न है कि क्यों परमेश्वर अपने लोगों को दण्डित करते हैं? हम यहा एक और शिक्षा देते हैं कि कैसे एक खराब अगुवाई लोगों को मुसीबत में डाल देती है।

4. यहूदा को देखें। उनके कुद राजा अच्छे और कुद दुष्ट। अच्छे राजाओं के कारण ही शायद परमेश्वर ने दक्षिएाी राज्य को अधिक समय तक स्थिर रहने दिया।

1.2राजा 18:1–8 हिजिक्याह राजा को एक अच्छे राजा के तौर पर वर्णित करता है जिसने परमेश्वर का सम्मान किया। लब उत्तरी राज्य को असीरिया द्वारा जीता गया तो वह राजा था। इस्राएल के पतन के कुद वर्षों पश्चात् अशीरिया ने यहूदा पर बाक्रमण किया। यरुशलेम को छोड़कर सम्पूर्ण यहूदा को असीरियर द्वारा जीत लिया गया।

2.अध्याय 18:19–35 यह बताती है कि किस प्रकार असीरिया सेना ने यरुशलेम की दीवार को घेर लिया था, सेनापति ने यरुशलेम को अपमानित किया और उन्हें समर्पण करने के लिए कहा।

3.अध्याय 19 बताता है कि किस प्रकार हिजिक्याह बहुत भयभीत हो गया था और वह मंदिर में जाकर परमेश्वर के सम्मुख अपने हृदय को उड़ेला और परमेश्वर से क्षमा की याचना करने लगा। यशायाह नबी ने उससे कहा कि परमेश्वर उसकी रक्षा करने जा रहा है और उसने असीरिया के सैनिकों की पराजय के साथ घर लौटने की भविष्यवाणी की। 35–36 आयत 185,000 असीरिया सैनिकों की मृत्यु का विवरण देती हैं इस कारण असीरिया पराजय के साथ अपनी राजधानी पहुंचे और यह उनके साम्राज्य के अन्त की शुरुआत थी। संसार के उस भाग में नयी महाशक्ति बेबीलोन था।

4. हिजिक्याह राजा की मृत्यु हो गई और उसका पुत्र मनश्शे राजा बना। अध्याय 21:1–2 हमें बताती है कि अपने पिता के समान नहीं कर,वह एक बुरा राजा था। उसके समय से ही आयते 10–15 में यह भविष्यवाणी हुई कि उनके बुरे कार्यों के कारण, परमेश्वर यहूदा के राज्य को इस्राएल के समान ही बन्दी बनाया जाएर्गा बाद में उसके जीवन में बंधुवाई के समय जब मनश्शे अपने बंदी बनाने वालों द्वारा सताया गया तो उसने पश्चताप किया और परमेश्वर ने राज्य को और 50 वर्ष तक स्थिर किया।

5.अध्याय 25 बताती है कि राजा नबूकदनेस्सर के द्वारा बेबीलोन ने यरुशलेम को जीत लिया और लोगों को बंधुवाई में ले गया। यह बहुत ही बुरा परिणाम था और बहुत से यहूदी गुलाम के तौर पर पीड़ित हुए। परमेश्वर लोगों के साथ धीरज रखते हैं, परन्तु जब वह अपनी धीरज खो देता है तो उनका न्याय भयानक होता है।

1 और 2 इतिहास

1 और 2 इतिहास राजाओं की पुस्तक के समान एक ही पुस्तक है। जब प्रथम बार मैं पुराना नियम पढ़ रहा था तो मैं आश्चर्यचकित था कि क्यों यह उस इतिहास को दोहरा रहा है जिसे मैं पढ़ चुका हूं। यह सत्य है कि यह यहूदियों के इतिहास को दोहराता है, परन्तु यह भिन्नता से लिखा गया है कि लोगों को परमेश्वर के साथ संबंध को याद दिला सका। दूसरे शब्दों में यह धार्मिक दृष्टिकोण से लिखा गया थौ यह पुराने नियम के ऐतिहासिक काल के अन्त में प्रवासन के बाद लिखा गया था।

ग्लेसन आरचा नामक ब्यक्ति ने लिखा कि यह पुस्तके''एक निशचित उद्उेश्य के साथ यहूदियों को, यहोवा के वाचा किए हुए लोगों के तौर पर उनके धर्मतुत्र का सच्चा आत्मिक आधार प्रदान करने के लिए रची गई थी। इतिहासकारों का उद्देश्य यह दिखाना था कि इब्रानी राष्ट की सच्ची महिमा परमेश्वर के साथ वाचा के संबंध पर आधारित है।'' परमेश्वर उन्हें दूसरा मौका देते हैं।

दूसरे शब्यों में, इतिहास की पुस्तकें लोगों के लिए एक स्पष्ट चेतावनी है कि लोग परमेश्वर के मंदिर और आराधना को न त्याग दें। उन्हें परमेश्वर द्वारा कठोर दण्ड दिया गया और अब उन्हें शिक्षा मिल जानी चाहिए और परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए तैयार रहना चाहिए।

यद्यपि यहूदियों को उनका देश वापिस तो मिल गया, परन्तु दाउद और शाउल के समय में वे स्वतंत्र राष्ट नहीं थे। फारसी लोगों द्वारा उन पर शासन किया गया और यीशु के समय में रोमन लोगों द्वारा। सुलेमान के समय में बनाए गए मंदिर की तुलना में उनके द्वारा बनाया गया मंदिर बहुत ही साधारण था।

1. 1.इतिहास के पहले कुछ अध्याय वंशावलियों के विषय में है, यहूदियों के पुरखों से लेकर प्रवास से लौटने तक को शामिल किया गया है। यही कारण है कि इतिहास की पुस्तके प्रवास काल के पश्चात् लिखी गई।

II इतिहास की अधिकतर पुस्तकें दाउद और सुलेमान के शासन के विषय में हैं।

1.अध्याय 10 शाउल के राज्य की समाप्ति के बारे में बताती है। आयत 13 राजा शाउल की मृत्यु किस प्रकार हुई, इस कात को बताती है। यह परमेश्वर के प्रति उसकी अविश्वासयोग्यता के कारण था यहां तक कि परमेश्वर की अगुवाई पाने के लिए उसने जादू–टोने का सहारा लिया।

2. अध्याय 11 दाउद की कहानी के साथ शुरु होता है कि किस प्रकार दाउद सम्पूर्ण इस्राएल का राजा बना और हम उसके शासन के विषय में पढ़ते हैं।

3. अध्याय 16 8–36, पढत्रे 8–17 यह दाउद द्वारा धन्यवाद और स्तुति के महान गीतों के विषय में बताता है जब वह वाचा के संदूक को यरुशलेम में प्रवेश करते समय उत्सव मना रहा था। इसे पढ़े और आपकी प्रार्थना के लिए प्रार्थना निर्देश के समान उपयोग करें। परमेश्वर का वचन जो बाईबल में पाया जाता है उसे अपनी प्रार्थना में उपयोग करें।

4. अध्याय 17 में परमेश्वर द्वारा दाउद के साथ उसके राज्य के सर्वदा ठहरे रहने की वाचा को दोहराया गया है।

5. दाउद को मंदिर बनाने की अनुमति नहीं दी गई, लेकिन मंदिर बनाने की तैयारी के लिए परमेश्वर ने उसे सहायता करने की अनुमति दी। अध्याय 22, 28, और 29 बताते हैं कि उसने क्या किया। अधिकतर उसने तंदिर के निर्माण की सामग्री को इकट्ठा किया। अध्याय 22:14 बताती है कि कैसे उसन सोना–चांदी इकट्ठा किया। अध्याय 28 में दाउद ने सुलेमान को मंदिर के निर्माण के लिए निर्देश दिए। आयत 8–9 में दाउद ने अपने पुत्र को अच्छी सलाह दी कि वह परमेश्वर को जाने और विश्वासयोग्यता से उसकी सेवा करे। आयत 20 सुलेमान के लिए उत्साहवर्द्धक वचन है। यह निर्देश हमारे लिए भी है।

6. अध्याय 29 में परमेश्वर के लिए दाउद के हृदय को देखते हैं जैसे दाउद ने मंदि के निर्माण के लिए अपना सब धन दे दियाक्योंकि आयत 3 कहती है कि दाउद मंदिर को उसके परमेश्वर को समर्पित करना चाहता था। तब आयत 6–9 में हम देखते हैं कि लोगों ने भी स्वतंत्रतापूर्वक मंदिर निर्माण के लिए अपना योगदान दिया और वे इस बात से प्रसन्न हुए कि वे परमेश्वर के लिए देने के योग्य हो पाये।एक उदाहरण कि हमारा हृदय किस प्रकार होना चाहिए हमारी धन सम्पति और हमारी प्राथमिकताओं के लिए।

7. अध्याय 29:10–19 एक अच्डा उदाहरण है कि किस प्रकार प्रार्थना की जानी चाहिए।

8. हम दाउद के जीवन के अन्त की ओर हैं और ध्यान दें कि यहां दाउद द्वारा बेतशेबा के साथ पाप और अदोनियाह के विद्रोह का जिक्र नहीं है। 2 राजा11:9–13 की कहानी को भी छोड़ दिया गया है। इतिहास का केन्द्र सकारात्मक है। यहां इतिहास और उद्धार पर ध्यान केद्रित है। लेखक लोगों को कह रहा है कि उनके बड़े पापों और दण्ड के बावजूद भी वाचा की प्रतिज्ञाएं मान्य है और सभी नहीं खोयी गई।

III इतिहास में उत्तरी राज्य के विषय में बहुत कम ही लिखा गया है, अधिकतर जोर मंदिर और राजाओं के सकारात्मक पहलू पर दिया गया है। यहां अराधना के विषय अधिक बताया गया है।

iv 2 इतिहास अध्याय 36 यरुशलेम के अंतिम परिणाम

1. 11–16 आयतों में हम देखते हैं कि यहूदा के अंतिम राजा को बुरा कह कर वर्णित किया गया है। तब हम देखते हैं कि याजकों के सभी अगुवे और लोग अविश्वासयोग्य थे। आगे हम देखते हैं कि अपने लोगों के प्रति तरस होने के कारण परमेश्वर ने नबियों को उन्हें चेतावनी देने के लिए भेजा, लेकिन लोगों ने चेतावनियों से घृणा की और यह परमेश्वर से घृणा के समान है।
2. 2. 17–20 आयतें लोगों के लिए भयानक दण्ड का वर्णन करती है। गरीबों को छोड़ युद्ध में बचे हुए सभी यरुशलेमवासियों को बेबीलोन में बंधुवाई में ले जाया गया। 2राजा 25:12

3. लोगों को दण्डित करने के साथ परमेश्वर द्वारा उनके लिए भविष्य में आशा प्रदान करने के द्वारा परमेश्वर का प्रेम प्रदर्शित होता है। (यिर्मयाह 35:11–12, 29:10) में यिर्मयाह द्वारा यह वादा किया गया कि बंधुवाई 70 वर्षों तक होगी। उत्तरी राज्य के समान, यहूदा की बंधुवाई सदा के लिए नहीं थी।

4. सकारात्मक रहते हुए आयत 22–23 क्षर्यष को परमेश्वर के लिए अभिषिक्त छुड़ानेवाले के तौर पर परिचय करवाती है। यशायाह 44:28, 45:2 को देखें कि क्षयर्ष के विषय में भविष्यवाणी घटित होने से सौ वर्ष की गई थी।

एज्रा, नहेम्याह और एस्तेर

यह पुस्तकें पुराने नियम के ऐतिहासिक भाग को पूर्ण करती है। एस्तेर की पुस्तक प्रवास के दौरान जबकि अन्य दोनों पुस्तकें प्रवास से लौटने के पश्चात लोगों के यरूशलेम में रहने के समय लिखी गई। अब हम यह आशा करते हैं कि यहूदियों ने शिक्षा पा ली है और वे विश्वास योग्यता से परमेश्वर की आज्ञा पालन और आराधना करेंगे। इस पुस्तक को आइए पढ़ें और देखें कैसा चल रहा है या यरूशलेम में। यशायाह, यिर्मयाह और दानिएल पूर्व में की गई भविष्यवाणी 70 वर्षों के पश्चात् लौटने के द्वारा पूर्ण हुई।

एज्रा की पुस्तक

एज्रा की पुस्तक मुख्य तौर से यरूशलेम लौटने के विषय में है।

1. प्रथम वापसी की अगुवाई में 536 बी.सी. में हुई। प्रवास के दौरान दो भविष्यवक्ता और प्रवास के बाद तीन भविष्यवक्ताओं को परमेश्वर ने लोगों को अगुवाई करने के लिए भेजा।

2. अध्याय–1 हमें बताता है कि कैसे परमेश्वर ने क्रूस को नियंत्रित किया कि वह न केवल लोगों को वापिस जाने दे, परन्तु उनकी जरूरतों की पूर्ति के लिए भी सहायता को देखें आयत 1–8। कुस्रू एक उदार व्यक्ति नहीं था, इतिहास के अनुसार यह प्रकट है कि यह परमेश्वर का ही कार्य था, कुस्रू के जीवन में।

3. अध्याय–2 यह बताती है कि जरूब्बाबेल की अगुवाई में कौन लोग वापिस लौटे। जरूब्बाबेल सीधी रीति से दाऊद का वंशज था। यहूदियों में से बहुत कम लोग ही इस्राएल लौटे।

4. अध्याय–8 बताती है कि लोगों ने मन्दिर का पुनर्निर्माण शुरू किया, फिर भी विरोध के कारण 534 बी.सी. में 14 वर्षों के लिए कार्य को रोक दिया गया। उन्होंने वेदी से प्रारम्भ किया और तब मन्दिर को बनाया। उन्होंने वेदी को पहले बनाया ताकि वे फिर से बलिदान चढ़ाना प्रारम्भ कर सके।

मन्दिर का कार्य रूकने के कई कारणों में से एक शत्रुओं का विरोध था, परन्तु हाग्गै 1:4 में हम एक दूसरा कारण पाते हैं कि लोगों ने पहले स्वयं का ही ध्यान दिया। हमें परमेश्वर को ही प्रथम स्थान देना चाहिए। अन्यथा परमेश्वर को देने के लिए पर्याप्त नहीं होगा। यह समय या धन हो सकता है।

5. अध्याय 4:1–3 में हम देखते हैं कि यहूदियों के शत्रु लोग यरूब्बाबेल के पास मदद का प्रस्ताव लेकर पहुंचे, परन्तु यहूदियों ने बुद्धिमानी से उनकी मदद को अस्वीकार कर दिया और कुस्रू की आज्ञा का पालन किया। इस से हम कई बातें सीख सकते हैं।

पहली बार यह कि कभी भी परमेश्वर का कार्य आगे बढ़ने लगता है तो शत्रु द्वारा मजबूत विरोध की अपेक्षा कर सकते हैं।

दूसरी बात यह कि हमें शत्रु के साथ न जुड़ने के लिए सचेत रहना चाहिए। शत्रु कौन है? कोई भी गैर–मसीह हमारा शत्रु है क्योंकि कोई भी गैर–मसीह परमेश्वर के साथ युद्ध पर है, देखें रोमियों 5:10। इसलिए जो लोग यरूब्बाबेल के पास सहायता के लिए पहुंचे वे वास्तव में मित्र नहीं थे। आयत 2 हमें बताती है कि ये वो लोग थे जो सामरिया (उत्तरी राज्य) से लाये गये थे और ये वो लोग थे जो बहुत से अन्य देवी देवताओं की आराधना करते थे। साथ में थोड़ी बहुत आराधना सच्चे परमेश्वर के लिए भी करते थे। सच्चे परमेश्वर की आराधना के साथ मूर्ति पूजा को सम्मिलित करने का अर्थ यह नहीं है कि आप एक मसीही हैं। इस सामान्य व्यवहार का वर्णन करने के लिए यहाँ रूचिकर शब्द है। इसे सामन्वयता कहा जाता है, और इसका अर्थ है कि विभिन्न धर्मों को एक साथ मिलाना। उदाहरण के तौर पर मसीहीयत को अंधविश्वास, ज्योतिष विद्या या जादू–टोना के साथ मिलाना। एक अन्य उदाहरण यह हो सकता है कि गैर मसीही व्यक्ति जो राजनीतिज्ञ हो उसे कलीसिया में प्रचार करने की अनुमति देना।

अ. यह महसूस करना अति महत्वपूर्ण है कि मसीही लोग जगत में रहते हैं, और हमें इस जगत में व्यवहार भी करना है, परन्तु हमें अलगाव को बनाये रखना चाहिए।

6. जब तक फारस का नया राजा शासन में नहीं आया तब तक इन शत्रुओं ने मन्दिर निर्माण के कार्य को रोके रहने में सफलता प्राप्त की। राजा दारा ने मन्दिर के निर्माण की आज्ञ दी और शाही खजाने से आर्थिक मदद देने के लिए भी कहा। अध्याय 6:8, कार्य फिर से 520 बी.सी. में शुरू हुआ और चार वर्षों में पूर्ण भी हो गया। हाग्गै और जकर्याह इन दो नबीयों ने लोगों को प्रोत्साहित होने में मदद किया।

7. हमें फारस के राजा द्वारा यहूदियों को यरूशलेम में फिर से बसने में की गई मदद के लिए टिप्पणी करनी चाहिए। ये राजा मूर्तिपूजक थे और वे अपने धन के साथ उदार नहीं थे। परन्तु उन्होंने यरूशलेम और मन्दिर देखे, हम पाते हैं कि राजा ने धन के द्वारा कार्य में सहयोग किया और याजकों और मंदिर में कार्य करने वाले लोगों को कर चुकाने में छूट भी

दी। परमेश्वर यह दिखाता है कि दुनिया के घटनाचक्रों पर उनका नियंत्रण है और यह चीज उन राजाओं के उदार होने के द्वारा प्रकट होती है। कर के व्यवहार या अभ्यास का प्रकार आज भी संयुक्त राज्य अमेरिका के कानून का हिस्सा है। वहाँ कलीसियाओं पर कोई भी कर नहीं है।

8. अध्याय 7 में एज्रा का परिचय होता है, जो 6 आयत के द्वारा एक याजक जान पड़ता है जो कि संहिता का कुशल ज्ञानी था और वह यरूशलेम के निवासियों को सही आराधना के लिए अगुवाई और निर्देश दे सके।

9. अध्याय 9 में हम देखते हैं कि लोगों ने अपने लिए कोई सबक नहीं लिया और वे परमेश्वर की आज्ञाएं नहीं मान रहे हैं। एज्रा ने परमेश्वर के सम्मुख अपने हृदय को बाईबल की एक महान प्रार्थना में उण्डेल दिया पढ़ें अध्याय 9:2–15। जहां लोगों के पापों को स्वीकार किया गया। यह अध्याय हमारे लिए परमेश्वर की ओर व्यवहार के प्रति निर्देश देता है कि हमें किस प्रकार पश्चाताप करना चाहिए। हम देखते हैं कि उपवास उसके अंगीकार का हिस्सा था। उस देश के लोगों के साथ अंतर्जातीय विवाह सबसे बड़ा पाप था।

10. अध्याय–10 लोगों के अंतर्जातीय विवाह के पाप के लिए अंगीकार के साथ यह पुस्तक समाप्त होती है। और वे लोग अपनी विदेशी पत्नियों को अलग करने के लिए तैयार हो गये। हमें इन पत्नियों और बच्चों की किस्मत के बारे में कुछ नहीं पता।

नहेम्याह

नहेम्याह की पुस्तक यहूदियों के यहूदा में फिर से बसने की कहानी को जारी रखती है। नहेम्याह एक प्राथ्रना करने वाला व्यक्ति था जो कि परमेश्वर का जन होने का एक चिन्ह है। परमेश्वर के कार्य के प्रति हमारा उत्साह को प्रकट करने के लिए नहेम्याह का जीवन एक उदाहरण है और यह भी कि परमेश्वर की विश्वासयोग्यता से सेवा करने के लिए कुछ भी कीमत चुकानी पड़े। नहेम्याह एक उच्च राजपद धारी व्यक्ति था और राजा अहर्षश द्वरा कृपा दृष्टि पाया हुआ व्यक्ति था। नहेम्याह अपने उच्च पद और अपने जीवन को भी खतरे में डालने के लिए तैयार था – क्या आप हैं?

1. अध्याय –1 में नहेम्याह यहूदा से एक विवरण पाता है कि सब कुछ सही नहीं है। यह जरूब्बाबेल की अगुवाई में यरूशलेम लौटने के 90 वर्षों के बाद की घटना है, और अभी तक शहर की सुरक्षा के लिए चारदीवारी नहीं बनी थी। याद रखे उन दिनों में दीवार शहर की सुरक्षा के लिए होती थी।

2. अध्याय 1:4–11 नहेम्याह के परमेश्वरीय प्रतिक्रिया को दर्ज करता है। यद्यपि समाचार बुरा था। यहाँ हमारे लिए एक शिक्षा है। हमें उसकी प्रार्थना का अध्ययन करना चाहिए और उसका अनुसरण करना चाहिए और यह भी ध्यान दे कि उपवास एक अच्छा अभ्यास है।

3. अब उसने स्वयं को पूर्ण रीति से तैयार कर लिया था, अध्याय–2 में वह कुछ खतरनाक कार्य करने के लिए तैयार हैं जैसे कि राजा से यरूशलेम जाने की आज्ञा मांगना। यरूशलेम में उसने दीवार का निरीक्षण किया और एक अच्छे अगुवो के नाते उसने बताया कि केसे वह दीवार का फिर से निर्माण कर सकते हैं, और यह भी कि वे निराशन हो। हम आयत–19 में देखते हैं कि इस कार्य में लोबियाह और सानबालत शत्रु थे।

4. अध्याय–4 में नहेम्याह ने कार्य के लिए श्रमिकों का प्रबंध किया, और कार्य निरन्तर होने लगा। इस अध्याय में हम विरोध को भी देखते हैं। इस अध्याय में हम यह भी देखते हैं कि कैसे कार्य बढ़ता चला गया और इमारतों को बनाने वाले श्रमिकों की सुरक्षा के लिए पहरेदारों को भी नियुक्त किया गया।

5. अध्याय–5 में हम नहेम्याह के हृदय को देखते हैं जैसे 1–13 आयतें बताती हैं कि नहेम्याह केवल निर्माण की देख रेख करने वाला नहीं था, वह एक आत्मिक अगुवा भी था। यहां एक आकाल था जिस कारण बहुत से लोगों को अपनी भूमि बेचनी पड़ी, और बहुतों को अपने धनी यहूदी भाईयों को स्वयं को गुलाम के तौर पर बेचना पड़ा। इस बात से नहेम्याह बहुत ही क्रोधित हुआ और उसने धनी लोगों द्वारा अपने गरीब भाईयों को सताये जाने को समाप्त करने और उन्हें उनकी सम्पति लौटाने के लिए कहा।

अ. आयत 14–19 बताती है कि किस प्रकार नहेम्याह ने उच्च वेतन को अस्वीकार कर दिया जो उसे यहूदा प्रदेश का राज्यपाल बनने के द्वारा प्राप्त हो सकता था। यह सभी अच्छे अगुवों के लिए एक अच्छा उदाहरण है – अपने लोगों के लिए बलिदान।

6. अध्याय–6 हमें कई असफल विरोध के विषय में बताती है जो कार्य को रोकने के लिए किए गये। आयत 15 हमें बताती है कि अद्भुत रीति से 52 दिनों के भीतर दिवार निर्माण का कार्य पूर्ण हो गया। यह एक बहुत बड़ी विजय थी, क्योंकि अब यरूशलेम अपने शत्रुओं से सुरक्षित था।

7. अध्याय 8–10 यरूशलेम में आत्मिक जागृति के समय को बताता है। पढ़ें अध्याय 8:1–3 और 5–8 जहां हम पढ़ते हैं कि लोग परमेश्वर के वचन को पढ़ने के लिए इकट्ठे हो रहे थे। ध्यान दे िकवे लोग दिन भर वचन के पढ़े जाने को सुनने के लिए खड़े थे और वहां पर लेवी लोग भी लोगों को समझाने के लिए उपलब्ध थे। हमें इसे बहुत ही सम्मान के साथ समझना चाहिए ताकि हम इसे ऊँचा उठा सकें। हमारी सभी शिक्षाएं और प्रचार बाईबल के आधार पर ही बनाये जाएं।

अध्याय 9:1–3 लोग आराधना के समय के लिए इकट्ठे होते थे। उन्होंने उपवास रखा और पश्चाताप किया। 6–37 आयतें पश्चातापी लोगों द्वारा की गई एक लम्बी प्रार्थना है। आयत 32–37 में लोगों ने परमेश्वर के द्वाा किए गये कार्य

को धार्मिकता और विश्वासयोग्यता के तौर पर स्वीकार किया। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि वे परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य थे और उनका दण्ड उचित था। वे बताते हैं कि दण्ड किस प्रकार कठोर था।

अध्याय 9:38 और अध्याय 10:1–39 में लोगों ने वाचा को लिखित और हस्ताक्षर कर के परमेश्वर की सभी संहिताओं का पालन करने का वादा किया। जागृति का कदम यहां पर उपवास और पश्चाताप था, और उन्होंने परमेश्वर से दण्ड को समाप्त करने की गुजारिश की, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा पालन करने का वादा किया। मैं उम्मीद करता हूँ कि मेरा मातृदेश भी इसी प्रकार करें

इस समय के बाद लोग मूर्तिपूजा और अन्तर्जातीय विवाह से फिरकर विधि पालन करने के लिए कट्टर हो गये और यीशु के समय में हम पाते हैं कि फरीसी और सदूकी लोग थे।

अध्याय 12 हमें बताती है कि लोगों ने नयी दीवार को समर्पित किया और मंदिर में आराधना हो रही थी। यहूदियों के लिए चीजें अच्छी दिखाई दे रही थीं।

9. अध्याय 13 बताती है कि नहेम्याह ने राजा के पास जाने के लिए फिर से यात्रा की। और ज बवह दूर था तो फिर से समस्याएं उत्पन्न हुईं। आयत 4–5 यहूदियों के शत्रु तोबियाह के विषय में बताती है। देखें नहेम्याह 2:10 और 4:7–8 उसे मन्दिर में रहने के लिए एक कमरा दिया गया। आयत 1 में हम पढ़ते हैं कि यह सीधी तौर पर नियम का उल्लंघन था। देखें 6– 9 आयतें, जैसे ही नहेम्याह लौटा तो उसने इस समस्या का हल निकाला। हम देखते हैं कि तोबियाह जो शत्रु था उसके सामान को मंदिर से जहां वह रहता था, फेंक दिया गया।

अध्याय 13 में हम यह भी पढ़ते हैं कि लोगों ने परमेश्वर की आज्ञा मानने की अपनी वाचा को तोड़ दिया। नहेम्याह ने अपना बाकी समय लोगों को सही करने में बिताया जब भी वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने में असफल रहे। 30–31 आयतों में हम नहेम्याह के अन्तिम शब्दों को पाते हैं।

परमेश्वर हर समयों में विश्वासयोग्य है।

एस्तेर

एस्तेर बाईबल में एक अद्भुत पुस्तक है। यह अन्य पुस्तकों के समान नहीं है, पुराना नियम में महिला के नाम पर यह दूसरी पुस्तक है। एस्तेर इतिहास में नहेम्याह से पहले घटित हुई है। यह फारस में बंधुवाई के समय की घटना है जहां हम पढ़ते हैं कि कैसे एक यहूदी लड़की ने उसके लोगों को नाश करने वाले षड़यंत्र से बचाया। इस पुस्तक में परमेश्वर शब्द का उपयोग नहीं किया गया है, परन्तु हम परमेश्वर के कार्य को स्पष्ट रीति से देखते हैं। हम सभी एस्तेर की पुस्तक से आत्मविश्वास पा सकते हैं क्योंकि हम देखते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों को पूरी रीति से नाश नहीं होने देते हैं, और उसकी कलीसिया कभी भी बर्बाद नही होगी। मैं एस्तेर के विषय में अधिक नहीं कहने जा रहा हूं जैसे कि यह एक सुखद और हर्षित करने वाली कहानी है जो पढ़ने में और समझने में सरल है।

1. कहानी का मुख्य भाग यह है कि यहूदियों को समाप्त कर दिये जाने का भय था। यह कुछ ऐसा था जो इतिहास में लगातार हुआ। यह उन भरमाये गये मसीहियों द्वारा समय समय पर किया गया जिन्होंने यहूदियों को सताया। कैथोलिक कलीसिया दोषी रही है। परीक्षण याद करें? द्वितीय विश्व युद्ध के समय जर्मनीयों ने सभी यहूदियों को समाप्त कर देने का प्रयत्न किया। उन्होनं 60 लाख से अधिक यहूदियों को मार डाला। आज भी कई मुस्लिम सभी यहूदियों को मार डालना चाहते हैं। परमेश्वर के इन सभी शत्रुओं को उत्पति 12 को पढ़ना चाहिए और उन्हें यहूदियों को प्रेम और उनकी सुरक्षा करनी चाहिए और यह जानना चाहिए कि वे कभी भी सभी यहूदियों को नहीं मार पायेंगे।

2. हम सीखते हैं कि यहूदियों का भाग्य सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर द्वारा निर्धारित किया गया है। यह रूचिकर है कि एक बार फिर परमेश्वर ने अपने लोगों को आशीषित करने के लिए एक महिला का उपयोग किया।

3. यहूदियों द्वारा आज भी मनाया जाने वाला उत्सव पूरिम का पर्व कहलाता है। यह चिट्ठी डाल कर यहूदियों के सर्वनाश की तारीख को निश्चित करने के बारे में हवाला देता है। यहूदी लोग इस पर्व को इसलिए मनाते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें नाश नहीं होने दिया परन्तु उनके शत्रु मार डाले गये।

पुराने नियम में यह इस्राएल के इतिहास का समापन करता है। पुराने नियम की शेष पुस्तकें जिनका हम अध्ययन करेंगे वे उन पुस्तकों के समय की है जिनका हम अध्ययन कर चुके हैं।

एस्तेर की पुस्तक के चार भाग हैं।

1. बुराई की योजना का पुर्वानुमान 1:1–2:23। परमेश्न ने ऐसे घटनाक्रम का प्रबंध किया जहां एस्तेर एक यहूदी रानी बनी और इस पद पर पहुंची की बाद में यहूदी लोगों की रक्षा कर सके।

2. बुराई की योजना का रचा जाना 3:1–4, 17। दुष्ट हामान ने राजा को इस प्रकार चलाया कि उसने सभी यहूदियों को समाप्त करने का आदेश दिया। ध्यान दें उपवास और प्रार्थना प्रारम्भ हो गई।

3. अध्याय 5 बुराई की यह योजना असफल हो गई।

4. अध्याय 9:18, 10:3 विजय उत्सव मनाया गया। पुरीम पर्व जो यहूदियों द्वारा आज भी मनाया जाता है।

अय्युब, भजन संहिता, नीतिवचन, सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत

हमने इतिहास की पुस्तकों का अध्ययन समाप्त किया है और अब हम आगे ''कविताओं की पुस्तकों'' की ओर बढ़ेंगे। जैसे हम देखेंगे यह विभिन्न पुस्तकें हैं। कुछ अवसरों पर इन पुस्तकों को ''ज्ञान साहित्य या लेखनी'' भी कहा जाताहै, क्योंकि इन पुस्तकों में बहुत अच्छी सलाह है। भजन संहिता का अध्ययन करने का एक अच्छा तरीका यह है कि प्रतिदिन एक भजन संहिता पढें। मैं और मेरी पत्नी रात को सोने से पहले एक भजन संहिता पढ़ते हैं।

अय्युब

- प्रोटेस्टेंट कलीसिया के द्वारा पुराना नियम का चार वर्गों में विभाजन किया गया है। कविता की पुस्तकों में प्रथम पुस्तक अय्युब की पुस्तक है। बाईबल के इस भाग में अय्युब, भजन संहिता सभोपदेशक और श्रेष्ठगीत है।
- हम सोचते हैं कि अय्युब अब्राहम के समय या उससे पहले जिया। जब आप समस्याओं में हो तो अध्ययन के लिए यह एक अच्छी पुस्तक हैं। आपको यह समझने के लिए कि मुसीबतें सभी लोगों के लिए सामान्य बात हैं, मदद करती है। जब आप मसीही बन जाते हैं तो मुसीबतें समाप्त नहीं हो जाती हैं। बाईबल में हम बहुत से परमेश्वर के लोगों को जानते हैं जिन्हें समस्याए भी हुई। युसूफ, दाऊद, यिर्मयाह और पौलुस कुछ नाम है। यहाँ तक की यीशु को भी पीड़ा सहनी पड़ी।
- अय्युब की पुस्तक यह प्रमाणित करती है कि सम्पन्नता का सुसमाचार गलत है। परमेश्वर अपने विश्वासयोग्य सेवकों को केवल इसलिए सम्पन्नता प्रदान नहीं करते हैं कि वे विश्वासयोग्य है। हम इस पुस्तक में पढ़ते हैं कि अय्युब ने अपनी सारी सम्पति को खो दिया और वह शारीरिक रीति से भी पीड़ित हुआ।फिर से अय्युब 1:1 बताता है कि अय्युब एक धार्मिक पुरूष था। और वह परमेश्वर का भय मानता था और वह निर्दोष था।

यह हमें सिखाता है कि :

1. परमेश्वरीय लोग शारीरिक और सामान की भी पीड़ा से भी गुजरती है। परमेश्वर कई बार अपने लोगों के लिए पीड़ा का आदेश देता है और यह बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के होता है।

2. निर्दोष लोग पीड़ित होते हैं। कई बार एक मसीही को पीड़ित होना पड़ता है यद्यपि उसके पीड़ा सहने के लिए कोई कारण भी न हो। कई बार हम कारण नहीं जान पाते हैं लूका। 13:1–5

कई बार व्यक्ति को जानने वाले पाप के कारण पीड़ित होना पड़ता है। उदाहरण के लिए : एक एडस संक्रमित व्यक्ति के साथ व्यभिचार करने के कारण एड्स की बीमारी से पीड़ित होकर मृत्यु तक पहुंच जाना।

बहुधा एक व्यक्ति पीड़ा सहता है ओर उसकी पीड़ा का कोई सटीक कारण नहीं मालूम पड़ता है।

परमेश्वरीय लोग पीड़ा सहते हैं फिर भी वे परमेश्वर की प्रशंसा करते हैं। वे केवल जीवन में अच्छा होने पर ही परमेश्वर से प्रेम नहीं करते हैं। अय्युब 1:10–11 में शैतान ने परमेश्वर से कहा कि अय्युब परमेश्वर से प्रेम इसलिए करता था क्योंकि उसका जीवन अच्छा था। अय्युब ने यह सिद्ध किया कि परमेश्वर के लोग यद्यपि चीजें बुरील हो तो भी वे परमेश्वर से प्रेम करते हैं।

अय्युब की पुस्तक की रूपरेखा

अय्युब का परिचय 11:1–5

1. अय्युब उज में रहता है जो इस्राएल के उत्तरी भाग में है। (1:1)
2. अय्युब पारीवारिक रीति से ओर धन–सम्पदा से भी आशीषित था। (1:2–4)
3. अय्युब वास्तव में एक परमेश्वर का जन था। (1:1–5)

2. स्वर्गीय प्रांगण (1:6–12)

1. स्वर्ग में दूत लोग इकट्ठे हुए थे। इस एकत्रीकरण में शैतान भी था जिसने परमेश्वर को अय्युब के ऐ परमेश्वरीय जन होने के विषय में चुनौती दी।
2. परमेश्वर ने शैतान से कहा कि अय्युब वास्तव में एक धर्मी पुरूष है। (1:8)

3. शैतान ने कहा कि अय्युब की सांसारिक आशीषों ही उसके धर्मी होने कारण है। (1:9–11)
4. परमेश्वर ने शैतान को अनुमति दी कि वह अय्युब की सारी सांसारिक सम्पति को समाप्त कर देने के द्वारा उसकी परीक्षा करे, सब कुछ लेकिन उसका स्वास्थ्य नहीं। ध्यान देः शैतान केवल वही कर सकता है जिसकी अनुमति परमेश्वद देते हैं। (1:12
3. संकट का प्रहार (1:13–22)
1. चार संदेशवाहकों ने अय्युब को उसकी धन सम्पति के नाश होने और उसकी संतानों की मृत्यु का सुाचार दिया। ये संदेश शीघ्रता से एक के बाद एक पहुंचे और थोड़े समय के अंतराल में अय्युब धनी से निर्धन और संतानहीन हो गया।
2. अय्युब ने स्वयं को दीन किया औरयह माना कि यह बात परमेश्वर के नियंत्रण में है कि हजारो पास धन सम्पति हो या नही ंहम इस संसार में बिना धन सम्पति के आये हैं और हम इस संसार से बिना धन सम्पति के जायेंगे। यह प्रकट करता है कि हमें अपनी सम्पति पर कितनी कम निर्भरता रखनी चाहिए। (1:21)
3. अय्युब ने परमेश्वर को कुछ भी गलत करने के लिए दोषी नहीं ठहराया, अय्युब ने अपनी सम्पति के नुकसान को स्वीकार किया और फिर भी वह परमेश्वर के विरूद्ध नहीं हुआ (1:22)
4. पुनः स्व्रर्गीय प्रांगण (2:1–6)
1. परमेश्वर और शैतान फिर मिले। परमेश्वर ने गर्व किया और शैतान को दिखाया कि संकट की पीड़ा आने पर भी वह परमेश्वर के विरूद्ध नहीं गया। (2:1–3)
2. शैतान ने परमेश्वर से कहा कि यह इस कारण है कि उसके शरीर पर कोई हमला नहीं किया गया केवल उसकी सम्पति को ही नुकसान पहुंचा है। यदि अय्युब को शारीरिक पीड़ा मिले तो वह परमेश्वर के विरूद्ध हो जाएगा। (2:4–5)
2. परमेश्वर ने पुनः दिखाया कि सभी घटनाओं को नियंत्रित करते हैं और परमेश्वर ने शैतान को अय्युब के शरीर पर हमला करने की अनुमति दे दी, परन्तु यह भी कि शैतान अय्युब के प्राण नहीं ले सकता। (2:6)
5. संकट का प्रहार पुनः हुआ। (2:7–10)
1. अय्युब की शारीरिक पीड़ा भयावह थी। (2:7–8)
2. अय्युब की पत्नी ने उसे बुरी सलाह दी कि वो परमेश्वर के विरूद्ध हो जाए। (2:9)
3. सब कुछ होने पर भी अय्युब परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहा (2:10)
4. अय्युब अपनी पीड़ा के कारणों से अनजान था। वह नहीं जानता था कि परमेश्वर उसे देखता है और अनुग्रह तथा सराहना की दृष्टि रखता है। परमेश्वर ने भरोसा से उसके परीक्षा से सफलतापूर्वक बाहर आने के विषय में पहले ही बता दिया।
6. अय्युब के मित्र उसकी भयानक पीड़ा को देखकर अचम्भित थे। उन्होंनें अपने मित्र को नहीं पहचाना और वे एक सप्ताह तक कुछ नहीं बोल सके। अय्युब 7:5 हमें यह उदाहरण स्वरूप बताता है कि अयुब कितना बुरा दिखाई दे रहा था।
7. अय्युब अपना धैर्य खोता है (3:1–26)
1. अय्युब र्धय खोकर शिकायत करता है। वह यह प्रश्न करता है िकवह क्यों पैदा हुआ, और वह मृत्यु की आशा करता है।
8. अय्युब के तीनों मित्र एक के पश्चात एक करके उस से बात करते हैं और अय्युब उन्हें उत्तर देता है। अय्युब के मित्र उसे कोई सांत्वना नहीं देते हैं। वे तीनों गलत रीति से यही कहते हें कि अय्युब स्वयं के पापों कारण पीड़ा भोग रहा है। वे कहते हैं कि अय्युब की भयानक पीड़ा उसके बड़े पापी होने के कारण हैं।
9. एलीहू, एक और मित्र बातचीत में जुड़ता है (32:1–37:24)
1. वह अय्युब से क्रोधित होता है क्योंकि वह परमेश्वर के बजाए स्वयं को उचित ठहराता है। 32:2
2. वह अय्युब के मित्रों से भी क्रोधित था क्योंकि उन्होंने कहा कि अय्युब गलत था परन्तु उन्होंने अच्छे उत्तर नहीं दिये थे। कुछ अवसरों पर हमें कुछ नहीं कहना चाहिए। 32:5
3. एलीहू टिप्पणी करता है कभी–क्वी पीड़ा अनुशासन के लिए है। और जो शरीर के लिए बुरा है वह आत्मा के लिए अच्छा है। 33:19–30
10. परमेश्वर बोलते हैं 38:1–41:43
परमेश्वर ने जोर देते हुए अय्युब को यह तर्क दिया कि सभी मनुष्य ब्रम्हाण्ड से अनजान हैं। यहां तक कि हम यह भी नहीं समझ पाते हैं कि प्राकृतिक चीजें किस प्रकार कार्य करती हैं। इसलिए हम यह अपेक्षा भी कर सकते हैं कि हम यह समझ सकें कि परमेश्वर अपनी रचना के साथ किस प्रकार कार्य करता है। हम मनुष्य घटनाओं को नियंत्रित करने में सीमित सामर्थ रखनेवाले हैं। यहां तक कि हम इतने सीमित हैं कि हम घटने वाली बातों को भी समझ सकें।
1. अध्याय 38, 39 में परमेश्वर अय्युब से कहते हैं कि उनके सब चीजों को नियंत्रित करने की सामर्थ है और वह कई देते हैं कि कैसे प्राकृतिक चीजें कार्य करती हैं और कैसे उसने सभी चीजों की रचना की है, और कैसे उसने चीजों को व्यवहार का नियम बनाया है। यशायाह 45:7 सिखाती है कि परमेश्वर ही है जो सभी संकट उत्पन्न करते हें जैसे भूस्खलन।
11. अय्युब परमेश्वर को उत्तर देता हे। (42:1–6)

अय्युब परमेश्वर द्वारा दीन किया गया और उसने स्वीकार किया कि वह गलत है। उसने यह स्वीकार किया कि परमेश्वर के पास सम्पूर्ण ज्ञान है जबकि वह यह नहीं समझ पाया कि क्यों उसे पीड़ा सहनी पड़ी, अय्युब जानता है कि 'क्यों महत्वपूर्ण नहीं है। अय्युब स्वीकारता है कि परमेश्वर सिंहासन पर विराजमान है और यह भी कि जो परमेश्वर करेंगे वह उत्तम होगा। दूसरे शब्दों में अय्युब ने परमेश्वर पर पूरी रीति से भरोसा किया और परमेश्वर के विरूद्ध प्रश्न करने के लिए पश्चाताप किया।

12. परमेश्वर ने अय्युब को फिर से सम्पन्न किया। 42:7–17

परमेश्वर ने एलीपज बिलदद और सोपर को फटकार लगाई। परमेश्वर ने न केवल अय्युब को फिर से दिया अपितु यह दुगुना था जो पहले अय्युब के पास था।

1. अय्युब का परिवार आया और उसे परमेश्वर द्वारा बुराई जो उसे मिली थी कि लिए सांत्वना दी। 42:11

मसीह और उसकी कलीसिया

1. पीड़ा का रहस्य या क्यों पीड़ा है।

1. पीड़ा संसार में पाप के कारण है। इसलिए सभी कोई यहां तक की पशुओं को भी पीड़ा होती है, क्योंकि संसार में पाप है।

2. कुछ अन्य कारण जिनसे एक व्यक्ति पीड़ा का अनुभव करता है।

कई बार पीड़ित होना व्यक्ति के व्यक्तिगत चुनाव के कारण होता है।

एक उदाहरण है कि जब एक व्यक्ति धुम्रपान का चुनाव करता है ओर फेफड़ों का कैंसर विकसित करता है और पीड़ा भुगते हुए मर जाता है।

बहुधा हम बिना कारण जाने कि क्यों पीड़ा भुगतते हैं।

1. अय्युब के मित्रों ने कहा कि वह अपने पापों के लिए दण्डित किया गया है। अय्युब 4:7–8 तथा 8:4। हम जानते हैं कि यह एक गलत कारण था। अय्युब 1:8 में बताती है कि अय्युब एक अच्छा और धर्मी पुरूष था और उसका पीड़ा भुगतना इस कारण नहीं था कि उसने कुछ गलत किया था।

कभी भी अय्युब के मित्रों के समान न बनें, जिन्होंने कई बार अय्युब से कहा कि वह अपने पापों के कारण पीड़ा भाग रहा है।(अय्युब 8:4–6, 5:7, 11:14) बहुत बार हम यह नहीं जान पाते हैं कि एक व्यक्ति के पीड़ित होना का सही कारण क्या है। ध्यान दें युहन्ना 9:1–3 में यीशु ने क्या कहा एक व्यक्ति के पीड़ित होने का कारण उसके व्यक्तिगत पाप ही है ऐसा शायद हर बार नहीं है।

अ. यद्यपि हम एक व्यक्ति के पीड़ित होने के कारण को पहचान भी लें तो भी हमें उस व्यक्ति को वह कारण बता कर उसकी पीड़ा को और नहीं बढ़ाना चाहिए। एक सच्च मित्र सांत्वना देने की पेशकश करेगा और टिप्पणी करने से बचेगा। केवल सांत्वना दीजिए बिना न्याय किये।

ब. अय्युब 19:13–19 बताती है कैसे उसके परिवार ने भी उसे त्याग दिया और उसकी पीड़ा को बड़ा दिया।

3. एलीहू ने एक अच्छा उत्तर दिया कि क्यों हम कई बार पीड़ा भोगते हैं जैसे उसने कहा कि यह परमेश्वर का तरीका है सिखाने, अनुशासित करने और अय्युब को शुद्ध करने का, हालांकि इस दशा में यह कारण सही नहीं है।

अ. इब्रानियों 12:5–11 हमें सिखाती है कि अनुशासन इस बात का प्रतीक है कि परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं।

1. परमेश्वर ने एकदम सही उत्तर दिया कि पीड़ा भुगतना परमेश्वर पर भरोसा रखने की परीक्षा है किवह कौन है न कि इस बात पर किवह क्या करता है।

यीशु ने यह साबित किया कि एक व्यक्ति बिल्कुल निर्दोष होने के बाद भी पीड़ा से गुजर सकता है। यीशु ने कभी भी पाप नहीं किया था फिर भी किसी अन्य पापी की तुलना में यीशु ने क्रूस पर चढ़ाये जाने के द्वारा भयंकर पीड़ा को सहा। वह शारीरिक दर्द से भी गुजरा और परमेश्वर द्वारा उस क्षण अलग होने की पीड़ा से भी गुजरा।

5. अय्युब भी हमें मसीह और उसकी कलीसिया के जी उठने के विषय में स्पष्ट भविष्यवाणी बताता है। अय्युब 19:25–27 यह एक कथन जो अय्युब के गहरे दुख भोग के बावजूद भी परमेश्वर पर उसके भरोसे को प्रकट करता है।

उपयोग

1. परमेश्वर शासन करते हैं। जब तक वह अनुमति प्रदान न करे कुछ नहीं होता। (दानिएल 4:34–35, भजन 115:3)

2. शत्रु शैतान बहुत ही शक्तिशाली है। (1 पतरस 5:8), परन्तु उसकी ताकत परमेश्वर द्वारा सीमित की गई है। (अय्युब 1:8, अय्युब 2:6)

हमें कभी भी शैतान को कमतर नहीं आंकना चाहिए।

3. परमेश्वर की इच्छा पहचानना

अय्युब के मित्रों ने परमेश्वर की इच्छा को पहचानने के लिए गलत मार्गों का चुनाव किया। एलीपज ने स्वप्नों और दर्शनों का उपयोग किया। (अय्युब 4:12–16) बिलदद ने पूर्व की पीढ़ीयों से चले आ रहे रीति रीवाजों का उपयोग किया। (अय्युब 8:8–10) जोफर ने कारण और अनुभवों का उपयोग किया। (अय्युब 20:2–3)

चार हजार वषों के पश्चात् भी जब हमारे पास परमेश्वर का पूर्ण वचन है तब भी लोग गलत तरीके जैसे स्वप्नों, दर्शनों, रीति रीवाजों, रीवाजों और कारणों का उपयोग करके लोगों को अगुवाई देने का प्रयत्न करते हैं।

हमें यह निश्चय ही समझना चाहिए कि परमेश्वर हमसे स्वप्नों और दर्शनों द्वारा अब बात नहीं करता है क्योंकि बाईबल पूर्ण हो चुकी है। (प्रकाशित 22:18) रीति रीवाज जैसे जादू–टोना हमें राह से भटकाता है। आधुनिक संसार अनुभवों और कारणों का उपयोग करता है, जिसे वे विज्ञान कह कर लोगों को भरमाते हैं।

परमेश्वर की इच्छा को पहचानने का सही तरीका बाईबल का मनन और प्रार्थना करना है।

सभी बातें मिलकर भलाई उत्पन्न करती है यहां तक कि हमारा पीड़ा उठाना भी। रोमियो 8:28। मसीही लोगों को निश्चय ही यह याद रखना चाहिए कि वर्तमान की पीड़ा आने वाली आशीषों की तुलना में कुछ भी नहीं है। इफिसियों 1:3, 2 कुरि. 4:17

हम मसीही लोगों को यह अहसास रहना चाहिए कि हमें इस जीवन को अनन्तता की तैयारी के लिए जीना है। हमारी पीड़ा केवल एक मिनट की है जबकि स्वर्ग सदा के लिए है।

निष्कर्ष :

1. अय्युब की पुस्तक की मुख्य शिक्षा यह है कि परमेश्वर जानता है कि वह क्या कर रहा है और क्यों। हमें निश्चय ही विश्वास द्वारा चलना चाहिए न कि दृष्टि द्वारा। हमें निश्चय ही परमेश्वर यह भरोसा रखना चाहिए कि परमेश्वर जानते हैं कि हमारे लिए क्या अच्छा है चाहे जीवन की कोई भी परिस्थिति क्यों न हो। हमें यह याद रखना चाहिए कि परमेश्वर सब बातों पर नियंत्रण रखते हैं।

2. पीड़ा जीवन का भाग है और यह सदा हमारे साथ है।

3. परमेश्वर हमें कोई व्याख्या देने के लिए ऋणी नहीं है किसी भी बात के लिए जो हमारे जीवन में उसकी अनुमति द्वारा घटित होती है।

भजन संहिता

"परमेश्वर की कलीसिया को उसका प्रेम पत्र"

दाऊद सहित कई लेखक हैं जिन्होंने इस पुस्तक को लिखा है। भजन संहिता के भीतर लोगों के गहरे दुख से लेकर आनन्द की चरमसीमा जैसी भावनाओं को सम्मिलित किया गया है। नया नियम में भजन संहिता को बहुत अधिक संख्या में उद्धृत किया गया है, 116 बार। कई भजन संहिता हमें सही आराधना के लिए निर्देश देते हैं। यहां दस प्रकार देखे जा सकते हैं। भजन संहिता के लिए :

1. शिक्षात्मक, उपदेशात्मक – औपचारिक शिक्षाओं के भजन संहिता

जैसे 1,5,7,15,17,50,73,94,101

2. इतिहास – 78, 105, 106, 136

3. हाल्लेलुयाह या स्तुति – 106, 111, 112, 113, 115, – 17, 135, 146, 50

4. पश्चातापी या स्वीकार करना – 6, 32, 38, 51, 102, 130, 143

5. प्रार्थना या विनती – 86

6. धन्यवाद देना – 16, 18

7. मसीह संबंधित – 2, 20,–24, 41, 68, 118

प्रकृति – 8, 19,28, 33, 65, 104

9. तीर्थयात्रा के समय तीर्थयात्री, जैसे आराधना के उद्देश्य के लिए यरूशलेम की यात्रा – 32–140

10. श्राप – 35, 52, 58, 59, 69, 83, 103, 137, 140

आईए हम कुछ उदाहरण देखें :

1. शिक्षा, पढ़ें भजन संहिता 15। आयत–1 बताती है कि किसको परमेश्वर द्वारा स्वागत किया जाता है। आयत 2–5 हमें सही व्यवहार के विषय में बताती है, खासतौर से आयत–2

2. हाल्लेलुयाह पढ़ें भजन संहिता 113, परमेश्वर की महिमा के लिए अद्‌भुत निर्देश।

3. पश्चाताप पढ़ें भजन संहिता 32, आयत 1–4 हमें बताती है कि क्षमा किए गए लोग ही सच में प्रसन्न होते हैं। आयतें 5–11 पश्चाताप के विषय हमें सिखाती है और आयत 11 सच्चे आनन्द के विषय में।

4. भजन संहिता 86 हमें सिखाती है कि परमेश्वर से सही रीति से हम कैसे मांगे।

5. भजन संहिता 16 सिखाती है कि कैसे सही रीति से परमेश्वर को धन्यवाद दिया जाए।

6. कई अवसरों पर भजन संहिता किसी मानवीय राजा को सम्बोधित करने के तौर पर शुरू करती है, परन्तु केवल यीशु में ही पूर्ण होती है जैसे भजन संहिता 2। इनमें से कुछ राजा दाऊद का हवाला देती है परन्तु कुछ जैसे आयत 7। निश्चय ही यीशु के विषय में है। भजन संहिता 22 एक और मसीही भजन संहिता है अर्थात यह एक भविष्यवाणी का भजन संहिता है जो भविष्य में यीशु के विषय में बताती है। इस भजन संहिता है, जो भविष्य में यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने के समय का स्वष्ट वर्णन है। आयत 1 में उन शब्दों को देखें जो यीशु द्वारा हजार वर्षों पश्चात क्रूस पर बोले गये, देखें जिसमें यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने के समय का स्पष्ट वर्णन है। आयत 1 में उन शब्दों को देखें जो यीशु द्वारा हजार वर्षों पश्चात् क्रूस पर बोले गये, देखें : मत्ती 27:46।

7. भजन संहिता 109 कोसने वाले भजन संहिता के तौर पर जाना जाता है। यह हमें विचलित करती है जैसे किसी श्राप का उच्चारण करती है जिस प्रकार जादू टोना करने वाला करता है। आयत 6–11 पढ़ें और देखें कि कैसे कोई परमेश्वर से उसके शत्रुओं को नाश करने के लिए मांग कर रहा हैं। कई मसीही इन भजनों की कठोरता से विचलित होते हैं। मेरे तरीके से इसे सम्भालने के लिए व्यक्ति के पश्चाताप के लिए प्रार्थना करनी चाहिए ताकि वह प्रभु के पास आ सके या फिर परमेश्वर उस व्यक्ति के स्थान पर किसी और को रखे।

आइए संकट की घड़ी में सांत्वना के लिए भजन संहिता को देखें। संयुक्त राज्य अमेरिका में वर्षो पूर्व यह भजन संहिता काफी प्रसिद्ध था। जब स्कूल में बाईबल पढ़ने की अनुभूति थी। कई विद्यार्थी इस भजन संहिता को समरण कर लिया करते थे।

स्कूल में बाईबल पढ़ने को गैर कानूनी किए हुए अधिक वर्ष हो चुके हैं, और चालीस वर्षों से नैतिक स्तर पतन शुरू हो गया है। आइए भजन संहिता 23 पढ़े।

नीतिवचन

अधिकांश भजन संहिता राजा सुलैमान द्वारा कुछ राजा हिजिक्याह और कुछ अन्य लेखकों के द्वारा लिखे गए हैं। नीतिवचन की परिभाषा समझाने वाले कथन है जो सत्य को सीखाते हैं। यह नीतिवचन या कथन संसार की सब बातों को सम्मिलित करते हैं। यह नीतिवचन अच्छी सलाह है, परन्तु वायदे नहीं है। इनका उद्‌देश्य हमें परमेश्वर के सम्मुख धर्मी जीवन जीने के लिए उत्साहित करना है। अधिकतर सरलता से समझने योग्य है, परन्तु कुछ समझने के लिए कठिन है।

नीतिवचन सभी आयु वर्गों के लिए अच्छे हैं और खास तौर से कुछ युवा लोगों के लिए अच्छी सलात है जैसे 1:8–10, 3:11, 5:20, 10:5 और अन्य। इनमें वे अच्छे निर्देश दिए गए हैं जिनके द्वारा एक युवा व्यक्ति जीवन जीने के कारण जीवन की कई समस्याओं से बच सकता है। नीतिवचन के विषय पाप, ईमानदारी, बुरे लोग, सामाजिक संबंध, वास्तव में हमारे जीवन में होने वाली किसी भी बात का सामना हो सकता है।

नीतिवचन के पाँच उद्‌देश्य हैं :

1. देखें नीतिवचन 1:2, ज्ञान और निर्देश प्राप्त करने के लिए। बाईबल हमें बताती है कि ज्ञान और निर्देश परमेश्वर की ओर से मिलती है अय्युब 28:12–18 और 23।

2. नीतिवचन 1:2 बताती है कि नीतिवचन हमें शब्दों की अर्न्तदृष्टि को समझने के लिए मदद करती है। वे हमें सत्य कहने के लिए मदद करती है जैसे जब लोग हमें मूर्ख बनाने का प्रयत्न करते हैं। उदाहरण के लिए वे हमें सत्यों को

सावधानीपूर्वक परखने के लिए सहायता करते हैं जिससे हमारे लिए जो लाभदायक हैं उन बातों को बता सकें। एक उदाहरण के लिए हम किसी व्यक्ति द्वारा बाईबल के विषय में बोले गए सत्य को तब तक नहीं मानते जब तक हम उसे बाईबल में न देख लें। बहुत से झूठे शिक्षक आपको कहेंगे कि परमेश्वर ने वादा किया है कि मसीही लोग समृद्ध होंगे या ''परमेश्वर उन्हीं की मदद करते हैं जो स्वयं की मदद करते हैं।'' जैसे आप सत्य को जानने या बोलना सीखाते हैं, तो आप बाईबल में देखते हैं इससे पहले कि आप यह निर्णय ले सकें कि क्या सही है।

इब्रानियों 5+14 हमें बताती है कि परिपक्व मसीही बुराई और भलाई के विषय में समझाने के लिए अधिक योग्य है। अगुवों की बातों को सुनना अच्छा है, परन्तु आपको यह समझना चाहिए कि अगुवे लोग सत्य बोल रहे हैं।

3. नीतिवचपन 1:3 कहता है नीतिवचन अनुशासित बनने और सही गलत को पहचानने की योग्यता को सीखने के लिए है। वे हमें उस प्रकार का जीवन जीने के लिए मदद करते हैं जिससे परमेश्वर प्रसन्न होते हैं। हम सीखते हैं कि नीतिवचन 11:1 में परमेश्वर हमसे हमारे व्यापार में ईमानदारी पूर्वक व्यवहार करने की इच्छा करते हैं और वे चाहते हैं कि हम किसी को धोखा न दें।

4. नीतिवचन 1:4–5 हमें बताती है कि वे हमारे ज्ञान को बढ़ाने के लिए शिक्षाएं हैं। आयत 4 कहती है कि ये युवाओं को सीखाती हैं, परन्तु आयत 5 बताती है कि यह बड़े और ज्ञानी लोगों को भी निर्देश देती है। हम चाहे कितने भी व्यस्क हो जाएं हमें हमेशा सीखने के लिए तैयार रहना चाहिए। कोई भी व्यक्ति सीखने के लिए बुढ़ा नहीं होता है। समझदार व्यक्ति यह जानता है परन्तु मूर्ख व्यक्ति यह सोचता है कि वह सब कुछ जानता है और उसे कुछ नहीं जानना है।

5. नीतिवचन 1:6 हमें बताती है कि यह पुस्तक हमें सीखने और सोचने के लिए मदद करती है और बाईबल की सच्चाईयों जैसी बातों को गहराई से समझने के लिए मदद करती है। बहुत से लोग जल्दी से आयतों को पढ़ लेते हैं और वे केवल बाईबल की सतही सच्चाईयों को देखते हैं। बाईबल से बहुत अधिक सीखने की आवश्यकता है और यह केवल अधिक अध्ययन और प्रार्थना के द्वारा ही हो सकता है। उदाहरण के लिए युहन्ना 3:16 का सतही संदेश किसी के लिए भी समझना सरल है। परन्तु हम इन आयतों को बार–बार पढ़ सकते हैं और हर बार हम परमेश्वर के प्रेम के विषय में सीख सकते हैं।

नीतिवचन हमें कई क्षेत्रों में सिखाते हैं जैसे :

1. क्रोध ' नीतिवचन 14:17, 29, 15:18, 16:32, 19:11 यह क्रोध को नियंत्रित करने के विषय में बात करती है। बहुत से लोग बन्दीगृह में हैं क्योंकि उन्होंने क्रोध में आकर किसी को नुकसान पहुंचाया या हत्या कर दी और ऐसा उनके द्वारा क्रोध को नियंत्रित करने में असफल रहने के कारण हुआ।

2. दया ' नीतिवचन 3:9–10, 11:24–26, 14:21, 19:17, 22:9 हमें दयालु होने के विषय में सिखाती है। मसीह लोगों को तरस के कार्यों को करने के लिए जाना जाता है।

3. अनुशासन – नीतिवचन 13:24, 17:6, 19:18, 22:6, 15, 23:13–14 हमें बच्चों और अनुशासन के विषय में सिखाती है, बच्चों को छड़ी लगाना भी उनके लिए भला है। हम यह इसलिए करते हैं क्योंकि हम उनसे प्रेम करते हैं। नीतिवचन 3:11–12 हमें सिखाती है कि यदि हम परमेश्वर से सम्बंध रखते हैं, तो वह हमें अनुशासित करेगा क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है देखें इब्रानियों 12:5–11 और अधिक योजना के लिए इस विषय पर।

4. परमेश्वर का भय : नीतिवचन 1:7, 3:7, 9:10, 14:26–27, 15:16, 33, 16:6, 19:23, 23:17, 24:21 सभी वचन परमेश्वर का भय मानने के विषय में सिखाते हैं। परमेश्वर के लिए हमें सम्मान और आदर प्रकट करना चाहिए और यह जानना चाहिए कि परमेश्वर भययोग्य हो सकते हैं। गैर मसीही लोग परमेश्वर की सामर्थ और न्याय के विषय में अंजान हैं।

5. मूर्ख : नीतिवचन 10:18, 21:23, 12:15–16, 14:9, 16, 15:2, 17:10,12, 24, 20:3, 23:9, 27:22, 28:26 हमें मूर्खों के विषय में सिखाती है।

6. मित्रों– नीतिवचन 17:17, 18:24, 19:4, 27:10, 17 हमें मित्रों के विषय में सिखाती है।

7. कार्य – नीतिवचन 6:6–11, 10:4–5, 26:12–27, 13:4, 15:19 18:9, 19:1, 24, 20:4, 13, 24:30–34, 26:13–16 हमें आलसी नहीं परन्तु कठोर मेहनत करने के लिए कहती है।

8. दूसरें से व्यवहार करना – नीतिवचन 14:31, 22:22, 28:16, हमें सिखाती है कि दूसरों को सताना नहीं चाहिए, हमें लोगों को दया तरस के साथ व्यवहार करना चाहिए।

9. घमण्ड– नीतिवचन 6:17, 11:2, 13:10, 15:25, 16:18–19, 18:12, 21:4, 24, 29:23, 30:13, हमें घमण्ड के खतरों के विषय में सिखाती है।

10. शांति बनाए रखना – नीतिवचन 3:30, 10:12, 15:18, 16:28 17:1, 14, 19, 18:6, 19, 20:3, 22:10, 25:8, 30:33 हमें बताती है कि समस्या पैदा करने वाला होने की अपेक्षा हमें शाति स्थापित करने वाला व्यक्ति होना चाहिए।

11. जीभ का उपयोग : 4:24, 10:11–14, 17–21, 31–32, 12:17–19, 22, 13:3, 14:3, 15:1–2, 4–5, 7, 23 16:13, 23, 27, 17:4, 18:6–7, 21, 19:1 हमें अनियंत्रित जीभ के खतरों के विषय में सिखाती है। पढ़ें याकूब 3:1–10, जीभ के विषय में और अधिक जानने के लिए।

12. धन – नीतिवचन 10:2, 15, 11:4, 28, 13:7, 11, 15:6, 16:8, 18:11, 19:4, 27:24, 28:6, 22 हमें धन सम्पदा के विषय में अकि ज्ञान देती है।

13. बुरी स्त्री – नीतिवचन 2:16–19, 5:3–14, 20, 6:24–35, 7:5–27, 9:13–18, 23:27–28 हमें बुराई और खतरनाक स्त्रीयों से दूर रहना सिखाती है।

14. पत्नी : नीतिवचन 5:18–19, 11:16, 18:22, 19:14, 31:10, 31 सिखाती है कि परमेश्वर का भय मानने वाली पत्नी परमेश्वर की ओर से उपहार है और हृदय में बसाया जाना चाहिए।

14. बुद्धि – नीतिवचन 1:7, 20–22, 2:6–7, 10–11, 3:13–18, 19, 21, 4:5–9, 8:1–16, 12:8, 18:4, 19:8 24:3 हमें सिखाती है कि बुद्धि परमेश्वर की ओर से प्राप्त होती है। हम बाईबल का अध्ययन करने से अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। परमेश्वर का भय मानने वाले अभिभावक भी हमें अधिक ज्ञान सिखा सकते हैं।

नीतिवचन की पुस्तक याकूब की पुस्तक के समान ही हमें एक अच्छी मसीही जीवन को व्यवहारिक सलाह के साथ जीने के लिए अच्छा निर्देश देती है।

सभोपदेशक

यह बुद्धिमानी या विवेक की एक और पुस्तक है। यह निश्चित नहीं है कि किसने यह पुस्तक लिखी है, परन्तु अधिकतर लोग यह सोचते हैं कि राजा सुलैमान इसका लिखने वाला है। उसने अपना जीवन इस प्रकार जीया कि पुस्तक उसके जीवन के अन्तिम दिनों में महसूस किए गए बातों को व्याख्या करती है। हम एक पुरूष के विषय में पढ़ते हैं जिसने अपने बिताये हुए जीवन पर निराशा व्यक्त की।

हम जानते हैं कि सुलैमान ने अपना जीवन महान वादे के साथ आरम्भ किया, हम याद करते हैं कि परमेश्वर ने उसे बुद्धि और बहुत अधिक धन भी दिया। सुलैमान इतने में संतुष्ट नहीं हुआ और उसने और अधिक धन की इच्छा की, और उसने अन्य देवताओं की आराधना की। अब उसके जीवन के अन्तिम दिनों में उसने यह महसूस किया कि सच्चे परमेश्वर के बिना जीवन अर्थहीन है यदि वह हमारे जीवन के केन्द्र में नहीं है। केवल वही चीजें स्थिर रह पाती हैं। जो हम परमेश्वर के लिए करते हैं। सुलैमान निराश था क्योंकि उसने महसूस किया कि उसने परमेश्वर की सेवा और आराधना के बजाए सुख विलास का पीछा करने से अपने जीवन को व्यर्थ किया।

यह एक ऐसी शिक्षा है जिसे कई लोग बहुत देर होने पर ही समझ पाते हैं। जिन चीजों को जैसे हमारा घर, जीवन में ओहदा जैसे राजा या बहुत धनी होना जैसी बातों को हम अपने पीछे छोड़ देते हैं। हम अपने साथ क्या ले जा सकते हैं? 2 तिमु. 4:8 हमें धार्मिकता के मुकुट के विषय में बताता है जिसे हमें परमेश्वर यीशु द्वारा स्वर्ग में प्रवेश के समय उसके विषय में लोगों को बताने के लिए दिया जाएगा। हम स्वर्ग में उन लोगों के साथ सर्वदा संगति करेंगे क्योंकि हमने उनसे परमेश्वर के उद्धार की योजना को बांटा और वे स्वर्ग में हैं। आईए संक्षेप में सभोपदेशक की पुस्तक को देखें :

1. यहां पर जीवन के प्रति दो दृष्टिकोण है। एक लोगों का दृष्टिकोण जैसे प्राकृतिक, अपरमेश्वरीय व्यक्ति करता है। एक दूसरा दृष्टिकोण जो एक व्यक्ति परमेश्वर को जानता है। सभोपदेशक का उद्देश्य, भौतिकता की पीछे दौड़ने की व्यर्थता को प्रकट करना है, और परमेश्वर की ओर इशारा करना है जो सभी भली बातों का स्रोत है।

1. मनुष्य का प्रत्येक बातों का अनुसरण परमश्वेर के बिना व्यर्थ है। जब परमेश्वर हमारे जीवन का अंग है तभी जीवन जीने का मूल्य है।

2. केवल परमेश्वर का कार्य स्थिर रहताहै, ताकि केवल वही मनुष्य के जीवन और सेवकाई का सच्चा मूल्य प्रकट कर सकता है।

2. घमण्ड / मिथ्याभिमान

1. दस मिथ्याभिमान

मानवीय बुद्धि 2:15–16,

मानवीय परिश्रम 2:19–21

मानवीय यश 4:16

मानवीय अतृप्तता 5:10

मानवीय उद्देश्य 2:26,

मनवीय प्रतिद्वन्दता 4:4

मानवीय कंजूसी 4:8

मानवीय लोभ 6:9

मानवीय तुच्छता 7:4

मानवीय पुरस्कार 8:10, 14

पुस्तक अध्याय 12:9–14, पर इस विचार के साथ समाप्त होती है कि मानवता परमेश्वर पर निर्भर है। आयत 13 यहां कुंजी है। सभोपदेशक 12:13, विषय की समाप्ति, प्रत्येक ने सुना। परमेश्वर का भय मानो और उसकी आज्ञाओं का पालन करो, क्योंकि मनुष्य का यही कर्तव्य है। उसकी आज्ञा मानना ताकि हम वास्तविक मनुष्य बनें और सृष्टि के भाग में हम अपनी महान क्षमता तक पहुंच सकें। दूसरे शब्दों में परमेश्वर के साथ सम्बंध होने में ही हम मनुष्यों का वास्तविक मूल्य है।

श्रेष्ठगीत

यह एक प्रेम गीत है, और पहली आयत हमें बताती है कि यह राजा सुलैमान के विषय में है। कुछ लोग इसे परमेश्वर और इस्राएल के मध्य प्रेम गीत के तौर पर देखते हैं। अन्य इसे युवा प्रेमी जोड़े के मध्य प्रेम बांटने के तौर पर भी देखते हैं। बाईबल में इस प्रकार की पुस्तक रखने के द्वारा यह प्रकट होता है कि परमेश्वर हमारी प्रत्येक मानवीय गतिविधियों में रूचि रखते हैं। यहां पर पति और पत्नी के मध्य सम्बंध को दूसरा सबसे महत्वपूर्ण सम्बंध दर्शाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण संबंध क्या है? एक अच्छा विवाह परमेश्वर का आदर करना है और अगली पीढ़ी को बढ़ाने के लिए अच्छी स्थापना है।

कुछ अभिव्यक्ति हमें आश्चर्यजनक जान पड़ती है जैसे 4:1–5,। पूर्वी रिवाजों के समय यह एक सही तरीका था जिससे एक युवा महिमा का आदर किया जा सके। बहुत से लोग पुस्तक में यौनिक बातों से असहज हो जाते हैं। परमेश्वर स्पष्ट करते हैं कि पति और पत्नी के मध्य यौनिक प्रेम एक अच्छी बात है।

धर्मविज्ञानी विषय : हमारा समाज काम क्रिया के दुरूपयोग से प्रेरित है जिस कारण आमतौर पर गलत यौनिक क्रियाओं मं शामिल लोगों के लिए त्रासदी का लाता है। यह पुस्तक मानवीय प्रवृति के संवेधानिक पहलू को परमेश्वर की अद्भुत रचना के तौर पर पहचान देती है। परमेश्वर ने हमें नर और नारी कर के बनाया है और हम में से अधिकतर इस विषय में प्रसन्न हैं। विवाह का बंधन मानवीय रिश्तों में नजदीकता की संभवता को प्रदान करती है। (उत्पति 2:24) और वहां किसी के लिए शर्म की आवश्यकता नहीं। (उत्पति 2:25)। बाईबल इस बात को प्रमाणित करती है पति और पत्नी के रिश्तें में पुरूष और स्त्री एक दूसरे के पूरक हैं। यह विवाह की पवित्रता को मान्यता देता है और वैवाहिक बंधन के प्रेम की स्वीकृति देता है। ध्यान दें : बाईबल किसी भी अविवाहित या समान लिंग के साथ काम क्रिया को स्वीकार नहीं करता है।

भविष्यवक्ताओं का अवलोकन

पुराने नियम का अंतिम मुख्य भाग भविष्यवक्ताओं का है। इन पुस्तकों का प्रबंधन वंशागत तरीके से नहीं किया गया जिसका अर्थ है इन्हें घटित होने के क्रमानुसार नहीं रखा गया है। उनकी सेवकाई आगे इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं। जब मनुष्य ने पाप का चुनाव किया तभी से वह परमेश्वर के साथ युद्ध में था और उसे नरक की सजा दी गई। परमेश्वर ने मनुष्य की शीघ्र बचाना प्रारम्भ किया। मनुष्य स्वयं इस योग्य नहीं था कि वह अच्छा कर सके इसलिए परमेश्वर ने नबीयों को भेजा ताकि वे मनुष्यों को उनके पापों से दूर होने में सहायता कर सके, और परमेश्वर की ओर वापिस आ सके। हालांकि यह प्रयत्न सफल नहीं हो सकता और मानव जाति के लिए एकमात्र उम्मीद हमारे उद्धारक यीशु मसीह ही है।

एक नबी क्या करता है

1. आगे घटने वाली बातें बताना – एक बाईबल शिक्षक जैसा कि मैं अभी हूं, औरयह उनकी अत्यन्त सामान्य भूमिका थी। कुछ बाईबल के नबी जेसे योना ने भविष्य नहीं बताया।

2. सामने आने वाली बातें – भविष्य बताना। एक सामान्य भविष्यवाणी थी कि यीशु की ओर देखें। याद रखें कि उन्होंने पूर्ण भविष्य नहीं देखा था और सामान्य तौर पर उन्होंने स्वयं की भविष्यवाणियों को नहीं समझा। दानिएल 12:8–9

बाईबल में नबीयों की पुस्तकें कम से कम पढ़ी जानेवाली पुस्तकें हैं। बहुत से पासवान और बाईबल शिक्षक कभी भी नबीयों की पुस्तकों से नहीं सिखाते हैं। मैं विश्वास करता हूं कि यह दो कारणों सह है। प्रामि यह कि नबी का संदेश स्वीकार करना कठिन है क्योंकि यह लोगों के पाप करने के कारण सजा की चेतावनी है। दूसरा कारण यह कि कई नबीयें का संदेश समझ पाना अत्यंत कठिन है। उनके संदेशों का मूल्य उनका अध्ययन करने पर ही है। वहां हमारे लिए कई व्यवहारिक शिक्षाएं हैं।

जैसे आप नबीयों का अध्ययन करते हैं तो इतिहास में समय को जानने का प्रयत्न करे, वे किस विषय में बोल रहे हैं और स्थान तथा वे किन से बात कर रहे हैं। कई अवसरों पर समय और स्थान निश्चित कर पाना कठिन है। कुछ नबी जेसे यिर्मयाह के विषय में हम जानते हैं कि यहूदा के लिए नबी था और बाबुल द्वारा यहूदा पर विजय प्राप्त करने से पूर्व और उस दौरान भी वह बोलने वाला था।

नबीयों के विषय सत्य

1 वहां पर कई हैं जिनके विषय में हम अंजान हैं, बाईबल में उनके विषय में नाम नहीं बताये गये हैं, उनके विषय में 1 शमुएल 10:5 उल्लेख किया गया है। वहां बहुत से ओर भी हैं।

2. कुछ नबीयों के विषय में अलग अलग पुस्तकों में जिक्र किया गया है। एल्लियाह को हम 1 राजा में पाते हैं, एलिशा नातान और मूसा सभी का उल्लेख बाईबल की विभिन्न पुस्तकों में किया गया है, इनमें से किसी ने भी स्वयं अपनी पुस्तक नहीं लिखी।

3. कुछ ने पुस्तकें लिखी जो उनके नाम से जानी जाती हे जैसे यशयाह, यिर्मयाह, आमोस।

4. कुछ को मुख्य नबी कहा जाता हे, क्योंकि उन्होंने यशायाह और यिर्मयाह जैसी दीर्घ पुस्तकें लिखीं।

5. कुछ को छोटा नबी कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने लघु पुस्तकें लिखी जैसे योना और मीका।

6. प्रत्येक नबी का संदेश महत्वपूर्ण है इस से फर्क नहीं पड़ता है कि उनका लेख कितना बड़ा या छोटा है।

7. आप कैसे जानते हैं कि कोई नबी झूठा है? हम उसे उसकी कही हुई बात के पूरा होने के आधार पर परखते हैं।

अ. क्या उसका संदेश बाईबल से है? एक सच्चा नबी ऐसा कोई भी संदेश नहीं देता है जो बाईबल के विरूद्ध हो। उदाहरण के लिए, एक सच्चा नबी कभी भी इस प्रकार नहीं कहेगा कि उसके पास बाईबल की आज्ञा की अनदेखी करने का दर्शन है।

क्या उसकी भविष्यवाणी सच में पूर्ण हुई? व्यवस्थाविवरण 15:5 या 18:20 में झूठे नबी के लिए भयानक दण्ड को दर्शाता गया है।

नबी के कई अवसरों पर समझना कठिन है और कभी–कभी तो पूर्ण रूप से समझ पाना असीाव है। आमतौर परी इस कारण से मसीहियों द्वारा उन्हें नहीं पढ़ा जाता है। उन्हें समझ पाने के लिए अतिरिक्त प्रयत्न की आवश्यकता होती है। लेकिन प्रयत्न उस योग्य होना चाहिए। उन्हें बार–बार पढ़ कर धीरे से समझने की अपेक्षा करनी चाहिए और यह अपेक्षा न करें कि आप उनकी कही बातों को शीघ्रता से समझ जायेंगे। जैसे आप वचन का अध्ययन करते हैं, आपको पवित्र आत्मा की सहायता के लिए प्रार्थना करनी चाहिए ताकि आप संदेश को समझ सकें। अब परमेश्वर हमसे किस प्रकार बातें करते हैं? आज परमेश्वर हमसे उसके लिखित वचन से बातें करते हैं जो बाईबल में है। भविष्य के विषय में हम केवल यह कह सकते हैं जो बाईबल से है कि यीशु पूर्ण विजय के लिए फिर से आने वाले हैं।

अब आगे की बातों को बताने वाले नबी नहीं है। प्रकाशित वाक्य 22:19–19 या व्यवस्थाविवरण 4:2

नबीयों के सामान्य विषय

1. वाचा का कर्त्तव्य – परमेश्वर की आज्ञा पालन करना– याद रखें परमेश्वर कौन है और उसने क्या किया है – जैसे वे जीते हें उन्हेंपरमेश्वर को याद रखने के लिए कहा गया है। यह आगे के विषय में कहना है।

अ. नबीयों ने लोगों को उनके पाप को त्याग कर परमेश्वर की ओर फिरे जैसे मूर्तिपूजा त्याग कर परमेश्वर के वचन को सुने और माने।

ब. नबीयों ने लोगों से यह स्मरण रखने के लिए कहा कि परमेश्वर ने उन्हें अलग किया है और उन्हें पवित्र जीवन जीने की आवश्यकता है। उन्हें गवाही का जीवन जीने के लिए कहा गया।

स. लोगों को एक दूसरे के साथ शांतिपूर्वक रहने के लिए कहा गया। वर्तमान में कलीसिया को भी।

2. दूसरा विषय है परमेश्वर का दिन। यह परमेश्वर द्वारा भविष्य में या अन्त के दिनों के न्याय को दर्शाता है।

अ. अविश्वासियों पर परमेश्वर का न्याय –इस बात पर जोर दिया गया कि बिना पश्चाताप पाप को अनन्त दण्ड भोगना पड़ेगा।

ब. परमेश्वर के लोगों के लिए उद्धार जो शुद्ध किये जायेंगे। परमेश्वर का दिन पापियों के लिए न्याय और विश्वासयोग्यों के लिए ईनाम का दिन होगा।

3. अन्य महत्वपूर्ण विषय मसीहा (आने वाले उद्धारक) का विचार है – इब्रानी शबद का अर्थ है अभिषेक किया गया। अर्थात अलग किया हुआ है जैसे अगुवा।

अ. नबीयों के लेख में मसीहा के विषय में भविष्यवाणीयां और वर्णन हैं। हम नबीयों के लेख में यीशु के विषय में स्पष्ट विवरण पा सकते हैं।

मसीहा की भविष्यवाणी – एक परिभाषा

''मसीहा की भविष्यवाणी'' शब्द सैकड़ों भविष्यवाणियों का संग्रह है (रूढ़ीवादी अनुमान) जो पुराने नियम में मसीह के विषय में है। उनकी प्रामाणिकता अकाट्य है यद्यपि ये भविष्यवाणीयां 1000 वर्षों में विभिन्न लेखकों द्वारा विभिन्न पुस्तकों में संग्रहित हैं। हम आश्वस्त हैं कि ये भविष्यवाणियां मृत सागर पंजी और सेप्टूयाजिंट के कारण उनके विरूद्ध नही कही जा सकती हैं। यह बस्तुएं यीशु के पृथ्वी पर के समय से पहले ही अस्तित्व में थी।

मसीहा की भविष्यवाणी : पूर्णता

यीशु मसीह ने पुराने नियम के लेखकों द्वारा कही गई मसीहा के विषय भविष्यवाणी को पूर्ण किया। भविष्यवाणियों का स्वयं अध्ययन करें और संभावना पर ध्यान दे कि केवल एक व्यक्ति ने इन भविष्यवाणियों को पूर्ण किया। देखें लूका 24:44।

पुराने नियम की भविष्यवाणियों पर ध्यान दे और नया नियम में जो भविष्यवाणियां मसीह द्वारा पूर्ण की गई।

बैतेलहेम के जन्म (मीका 5:2, मत्ती 2:1, लूका 2:4–7)

कुंवारी से जन्म (यशायाह 7:14, मत्ती 1:21–23) अब्राहम के वंशज के समान (उत्पति 12:1–3, 22:18) मत्ती 1:1, गलतियों 3:16 यहुदा के गोत्र से (उत्पति 49:10, लूका 13:23, 33, इब्रानियों 7:14) दाऊद के घराने से (2 शमुएल 7:12–16, मत्ती 1:1)

हेरोद द्वारा नवजात शिशुओं की हत्या (यिर्मयाह 31:15, मत्ती 2:16–18)

मिस्र में ले जाना (होशे 11:1, मत्ती 2:14–15)

परमेश्वर के संदेशवाहक द्वारा पूर्व घोषणा (युहन्ना बपतिस्मा) यशायाह 40:3–5, मलाकी 3:1, मत्ती 3:1–3

पवित्र आत्मा द्वारा अभिषेक (यशायाह 1:2, मत्ती 3:16–17)

सुसमाचार प्रचार (यशयाह 61:1, लूका 4:14–21)

चमत्कारों का प्रदर्शन (यशायाह 35:5–6, मत्ती 9:35)

मन्दिर की सफाई (मलाकी 3:1, मत्ती 21:12–13)

गलील में सेवा (यशायाह 9:1, मत्ती 4:12–16)

राजा के समान गधे पर यरूशलेम में प्रवेश (जकर्याह 9:9, मत्ती 21:4–9)

प्रथम बार स्वयं को राजा के समान प्रस्तुत करना यह 173, 880 दिनों के पश्चात हुआ जब यरूशलेम को पुनः बनाने की आज्ञा हुई (दानि 9:25, मत्ती 21:4–11)

यहूदियों द्वारा त्याग दिया जाना (भजन संहिता 118:22, 1 पतरस 2:7)

शर्मनाक मौत द्वारा मृत्यु (भजन संहिता 22, यशायाह 53,) इसमें निम्न बातें सम्मिलित थीं, ठुकाराया जाना। ()यशायाह 53:3, युहन्ना 1:10–11, 7:5, 48 एक मित्र द्वारा धोखा दिया जाना। (भजन संहिता 41:9, लूका 22:3–4, युहन्ना 13:18) चाँदी के 30 सिक्कों के लिए बेच दिया जाना (जकर्याह 11:12, मत्ती 26:14–15) उसके दोष लगाने वालों के सम्मुख मौन (यशायाह 53:7, मत्ती 27:12–14) मजाक उड़ाया गया। (भजन संहिता 22:7–8, मत्ती 27:31) पीटा गया। (यशायाह 52:14, मत्ती 27:26) थूका जाना (यशायाह 50:6, मत्ती 27:30) उसके हाथों और पैसे को छेदा गया। (भजन संहिता 22:16, मत्ती 27:31) चारों के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया। (यशायाह 53:12,मत्ती 27:38) अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना किया। (यशायाह 53:12, लूका 23:24) उसकी पसली को छेदा गया (जकर्याह 12:10, युहन्ना 19:34) पीने के लिए सिरका दिया गया (भजन संहिता 69:21, मत्ती 27:34, लूका 23:36) हड्डियों को तोड़ा नहीं गया (भजन संहिता 34:20, युहन्ना 19:32–36) एक धनी व्यक्ति की कब्र में गाड़ा गया (यशायाह 53:9, मत्ती 27:57–60) उसके कपड़ों के लिए पर्ची डाली गई (भजन संहिता 22:18, युहन्ना 19:23–24)

मृतकों में से जी उठना (भजन संहिता 19:10, मरकुस 16:6, प्रेरितों के काम 2:31)

स्वार्गारोहण (भजन संहिता 68:18, प्रेरितों के काम 1:9)

परमेश्वर के दाहिने हाथ पर विराजमान (भजन संहिता 110:1, इब्रानियों 1:3)

यशायाह का अवलोकन

यशायाह में यीशु के विषय में बहुत सी भविष्यवाणियां हैं जो कि बहुत हद तक सटीक है। वहां पर आने वाले न्याय के विषय में भी भविष्यवाणियां हैं। यह हमें इस्राएल के लोगों की अधीनता और दण्ड दिये जाने के विषय में भी बताती है। यह भविष्यवाणियां बिल्कुल सटीक है यद्यपि यह वास्तविक घटना के घटित होने से वर्षों पूर्व दी गई थी। उदाहरण के लिए क्रूसू का नाम उसके जन्म से सैकड़ों वर्षों पूर्व उपयोग किया गया। (यशायाह 44:28)

जब आप नबीयों का अध्ययन करते हैं तो यह महत्वपूर्ण है कि उन्हें इतिहास के समय और सही स्थानों के अनुसार यथास्थान रखना चाहिए। उदाहरण के तौर पर यशायाह राजा उज्जियाह के समय यहूदा के लोगों के लिए एक नबी था, वह राजा योयाम, आहाज ओर हिजिक्याह के समय में भी नबी था। उसकी सेवकाई के समय यहूदा समृद्धि के दौर से गुजर रहा था; और जैसा कि सामान्यतः समृद्धि में लोग परमेश्वर को त्याग देते हैं। ऐसा ही संयुक्त राज्य अमेरिका का सम्मान संयुक्त राज्य एक बहुत ही समृद्ध राष्ट्र है जहां परमेश्वर का सम्मान किया जाता था, लेकिन अब समृद्धि के कारण यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका ने परमेश्वर को त्याग दिया है। यशायाह के अन्त के समय समृद्धि समाप्त हो चुकी थी, और बहुत से अमेरिकी भयभीत है कि यही उनका निकट भविष्य है।

यशायाह के पहले 39 अध्याय प्रमुख तौर से यरूशलेम ओर उसके चारों ओर के राष्ट्रों के पापों के विषय में है। दूसरे शब्दों में परमेश्वर का न्याय मुख्य संदेश है। यद्यपि पुराने नियम में परमेश्वर मुख्य तौर से यहूदियों से व्यवहार किया, इसी समय उसने यह भी बताने का प्रयत्न किया कि वह सम्पूर्ण संसार का प्रभु है।

प्रथम भविष्यवाणीयां यशायाह में लोगों को चेतावनी है जो कि सामान्य है। आईए संक्षेप में अध्याय एक का अध्ययन करें और इस प्रकार की शिक्षा की पद्धति को देखें।

1. आयत एक हमें यशायाह के निवास स्थान और जिनके मध्य उसने सेवकाई की उस विषय में बताती है।

2. तब हमारे पास लोगों के विरूद्ध परमेश्वर द्वारा अभियोग की सूची है, और लोगों के पापों के दण्ड को भी बताया गया है। पढ़ें आयतें 2:। परमेश्वर लोगों से कहता है कि वे पाप कर रहे हैं। उनका पाप परमेश्वर के विरूद्ध बलवा और उससे विमुख हो जाना है। यशायाह के लेख का अधिकांश भाग लोगों को मूर्तिपूजा की आराधना करनी चाहिए। आयत 3 को देखें जहां वह लोगों का उपहास उड़ाते हुए कहता कि यहां तक कि बैल और गधें अपने स्वामी को जानने में चतुर है, परन्तु इस्राएल उनके समान भी चतुर नहीं है।

3. 10–50 आयतों में परमेश्वर टिप्पणी करते हैं कि लोगों की आराधना उनके मैले हृदयों योग्य नहीं है यहां तक कि 15 आयतों में परमेश्वर ने उन्हें धमकी दी कि वो उन्हें त्याग कर सकता है। यह एक गंभीर आशंका है और हमें निश्चय ही परमेश्वर द्वारा ऐसा कहने का भय होना चाहिए, हमारे लोगों और हमारे प्रदेश के लिए। देखें 2 इतिहास 7:13–14 जहां परमेश्वर इस विषय में बात करते हैं कि क्या होता है जब वह अपनी आशीषें एक स्थान से हटा लेते हैं और तब क्या होता है जब उसके लोग उससे विमुख हो जाते हैं।

4. 16–19 आयतों में लोगों को पश्चाताप करने और उनके पापों को छोड़कर परमेश्वर का अनुसरण करने की बुलाहट दी गई। इन आयतों को देखें कि वहां पर महान आशीषों का प्रस्ताव दिया गया है, यदि हम अपने पापों से फिर कर परमेश्वर की ओर लौट आयें।

5. तब शेष अध्याय उनकी आशीषों के विषय विवरण देता है। आज भी हमारे लिए यही संदेश है।

आइए यशायाह के संदेश का अन्य उदाहरण देखें। अध्याय 5:1–7 परमेश्वर एक दाख की बारी के विषय में बात करते हैं जिसकी अच्छी रीति से देखभाल की गई। आयत –2 बताती है कि परमेश्वर ने अच्छे अंगूरों की फसल की अपेक्षा की परन्तु इसके बजाए उसने जंगली या बुरे अंगूरों की फसल को पाया जो खाने योग्य नहीं है। परमश्वर निराश हुए और आयत–5 में उसने कहा कि वह अपनी सुरक्षा हटा लेगा और आयत 6 में उसने कहा कि वह दण्ड भेजेगा। आयत 7 बताती है कि परमेश्वर वास्तव में अपने लोगों के विषय बोल रहे हैं। शेष अध्याय भयंकर दण्ड के विषय बताता है। ध्यान दें शुरूआती अध्यायों के समान यहां पर पश्चाताप करने और आशीष पाने की बुलाहट नहीं है। परमेश्वर इन लोगों को दूसरा अवसर नही ंदे रहे हैं। यह हम सभी के लए भी चेतावनी है।

यशायाह को समझ पाना कठिन हो सकता है क्योंकि अधिकांश अध्याय तिथिगत या समयकालिक रीति से क्रम में नहीं है। उदाहरण के लिए अध्याय 6 जहां परमेश्वर यशायाह को सेवकाई के लिए बुलाते हैं। आप इस अध्याय को प्रथम अध्याय होने की अपेक्षा करेंगे बजाए इसे छठा अध्याय होने के स्थान पर इसका कारण जो मुझे कहा गया वह यह है कि यशायाह संदेश को बोलता और उसके शब्दों को लिखा जाता और उसे शहर के फाटक पर लगा दिया जाता था ताकि लोग उसे पढ़े। बाद में उन्हें इकट्ठा करके रखा गया जब तक उन्हें एक पुस्तक का रूप नहीं दिया गया। इस कारण कई बार वे क्रमानुसार नहीं पाये।

अध्याय–6 परमेश्वर द्वारा यशायाह को नबी होने की बुलाहट की कहानी है। हम आयत 5 में देखते हैं कि यशायाह ने परमेश्वर को देखा। क्या आप को मूसा द्वारा परमेश्वर को देखने की शिक्षा याद है? इसे क्या कहा जाता है? इसे ईश्वरी दर्शन कहा जाता है देखें निर्गमन 3:2–6 जहां एक और विवरण ळै ईशदर्शन के विषय में। आयत 5 में परमेश्वर से मिलने पर यशायाह की प्रतिक्रिया को हम देखते हैं। उसकी प्रतिक्रिया हमारी भी प्रतिक्रिया होनी चाहिए, जब भी हम परमेश्वर के विषय में सोचते हैं जैसे हम उसकी अद्भुत उपस्थिति के विषय में सोचते हैं। हमें परमेश्वर की अद्भुत पवित्रता और स्वयं की पाप दशा के उपर विजय प्राप्त करनी चाहिए।

1. ध्यान दें आयत 6,7 में परमेश्वर ने किस प्रकार यशायाह को उसके पापों से शुद्ध किया। यह प्रक्रिया लगभग उसी प्रकार है जैसे हम आमतौर पर प्रार्थना करते हैं और अपने पापों को अंगीकार करते हैं। हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं कि वह जो है, और हम उससे मांगते हैं कि वह हमें हमारे पापों से शुद्ध करें।

2. यशायाह परमेश्वर द्वारा शुद्ध हो कर परमेश्वर के कार्य के लिए तैयार था, और आयत 8 देखें परमेश्वर ने उससे वही प्रश्न पूछा जो वह प्रत्येक विश्वासी से पूछते हैं। परमेश्वर उसके प्रत्येक जन से उसकी सेवा करने के लिए कहते हैं, और जो उत्तर यशायाह ने दिया केवल वही सही उत्तर है। ''मैं यहां हूं मुझे भेज'' परमेश्वर के पास प्रत्येक मसीही के लिए एक कार्य है और प्रत्येक कार्य महत्वपूर्ण है चाहे वह कलीसिया की सफाई करना ही क्यों न हो।

3. शेष अध्याय हमें यह महत्वपूर्ण शिक्षा देते हैं कि यशायाह की सेवकाई सफल नहीं हेागी और यह एक लम्बी अवधि की सेवा होगी। वास्तव में यशायाह 65 वर्षों तक एक नबी के तौर पर रहा।

यहूदी मान्यताओं के अनुसार राजा मनश्शै ने उसे आरे से दो टुकड़ों में विभाजित करवा दिया। किसी भी परिस्थिति में लोगों ने वह नहीं किया जो यशायाह ने उन्हें करने के लिए कहा जो कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना था, फिर भी यशायाह परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहा। उसका जीवन हमारे लिए एक उदाहरण होना चाहिए।

यशायाह परमेश्वर से मिलने के नतीजे स्वरूप परमेश्वर की पवित्रता को विशेष रूप से जान पाया जो हम उसके लेख में पाते हैं। उसने यह वाक्यांश कहा ''इस्राएल का पवित्र'' जो 25 से अधिक बार परमेश्वर के लिए कहा गया। हम यह वाक्यांश अध्याय एक की चौथी आयत में पाते हैं जो प्रथम बार उपयोग किया गया। उसकी जानकारी, परमेश्वर की पवित्रता का ज्ञान कुछ ऐसा है जिसे हमें नकल करना चाहिए। हमें परमेश्वर की पवित्रता का बोध बाईबल के पढ़ने और मनन करने के द्वारा हुआ है। जितनी अच्छी रीति से हम परमेश्वर को जानते हैं, उतना हम यह समझ पाते हैं कि वह कितना पवित्र और सम्पूर्ण परमेश्वर है और हम मनुष्य कितने गंदे और पापी हैं।

अध्याय –19 मिस्र के विषय भविष्यवाणी है। आयत 1 और तीन बताती है कि वे मूर्तिपूजा और जादू टोने के दोषी हैं। तब परमेश्वर ने न्याय की घोषणा की। आयत 16 में हम देखते हैं कि मिस्र के लोगों ने परमेश्वर आभार माना जेसे उन्होंने उसका भय माना देखें भजन संहिता 111:10। आयत 18:21 में हम लोगों के परिवर्तन को देखते हैं। आयत 22 बताती है कि परमेश्वर की संतान बनने के पश्चात् वह लोगों को चंगा करेगा। आयत 25 में परमेश्वर ने मिस्र के अपने लोगों पर एक आशीष की घोषणा की। मिस्र में प्रारंभिक कलीसिया मजबूत थी, और शेष अभी भी विद्यमान है।

अध्याय 40 में संदेश न्याय पर जोर देने के बजाए दिलासा देने वाला संदेश बन गया। देखें अध्याय 40:1, यहां यशायाह भविष्य में दूर रहने वाले लोग जब वे दासता में हैं औ दुख उइा रहे हैं उन्हें एक संदेश दे रहा है। परमेश्वर द्वारा दिलासा देने की सोच सभी मसीहियों को पुनः आश्वस्त करनी चाहिए। परमेश्वर की दिलासा वाल सोच यह है कि परमेश्वर बलशाली है कि वह हमे दिलासा दे सके और वह हमसे बहुत अधिक प्रेम करता है। युहन्ना 3:16–17। हम मसीही लोगों के पास परमेश्वर से संबंध होने के कारण हमेशा प्रसन्न होने का एक कारण है।

यशायाह के पास अन्त समय की भविष्यवाणियां हैं देखें अध्याय 65:1–7 जहा पर परमेश्वर अनाज्ञाकारी लोगों पर दण्ड की भविष्यवाणी करते हैं। अध्याय 65:17–25 आज्ञाकारी लोगों पर आशीष की बातें बताती है। अध्याय 57 का अध्ययन करें ताकि लोगों के भविष्य को स्पष्ट रीति से देख सके। आयत 1–2 हमें बताती है कि हम मसीही आने वाले समय में विश्राम और शांति के लिए देख सकते हैं जबकि आयत 20–21 यह वायदा करती है कि दुष्टों के लिए वहां कोई भी शांति नहीं होगी।

अध्याय 58 आराधना के विषय में एक अध्याय है। आयत 1–2 परमेश्वर लोगों की आराधना को स्वीकार नहीं करते हैं क्योंकि परमेश्वर की आराधना अपनी पापमय व्यवहारिकता के साथ जारी रखते हैं।

3–6 आयतें हमें उपवास में निर्देश देती हैं। परमेश्वर कहता है कि वह प्रसन्न होगा यदि वे धार्मिकता के साथ जीये और उसकी आराधना करें।

यीशु के विषय में यशायाह में बहुत सी भविष्यवाणीयां हैं। यीशु के जीवन से 700 वर्षों पूर्व हम उसके जीवन और पीड़ा की स्पष्ट तस्वीर हम देखते हैं। यशायाह की पुस्तक यह प्रकट करती है कि कैसे एक व्यक्ति यीशु के विषय में सच्चाई का इंकार कर अंधा हो सकता है। यहूदी लोग इस पुस्तक का अध्ययन करते हैं और तब यीशु के विषय में भविष्यवाणी को नजरअंदाज कर देते हैं। भविष्यवाणीयां इतनी स्पष्टता से पूर्ण हुई कि कोई भी व्यक्ति जो यशायाह की पुस्तक को पढ़ता है उसे यीशु को मसीहा के तौर पर स्वीकार कर लेना चाहिए। आइए इनमें से कुछ भविष्यवाणियां को देखें :

1. पढ़ें यशायाह 7:14। हम देखते हैं कि एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक शिशु को जन्म देगी और वह बालक इम्मानुएल कहलायेगा जिसका अर्थ है परमेश्वर हमारे साथ है। मैं केवल एक ही व्यक्ति को जानता हूं जो एक कुंवारी से जन्म लिया, और वह यीशु है। (लूका अध्याय 1) यीशु ने इम्मानुएल नाम को पूर्ण किया क्योंकि वह परमेश्वर था और वह लोगों के मध्य रहा।

2. आइए अच्छी और बुरी सरकार की ओर देखें। अध्याय 9:1–7 यीशु के शसन का वर्णन देती है खासतौर से देखें 6–7 आयत। वहां पर धर्मी सरकार होगी। यशायाह 3:4–6 वायदा करती है कि बुरी सरकार दण्डित की जाएगी।

3. अध्याय 11:1–17 यीशु के विषय बताती है। यिशै का ठूँठ राजा दाऊद के पिता को दर्शाता है। हमें स्मरण दिलाया गया कि दाऊद को यह वायदा दिया गया कि उसका राज्य सदा स्थिर रहेगा। यीशु उसकी पीढ़ी का वंशज है। ठूंठ इस सत्य को दर्शाता है कि यीशु के समय तक राजकीय पद एक बड़े वृक्ष के समान नहीं था क्योंकि राज्य के पतन के कारण जो शाखा बची थी वह ठूंठ से बढ़ने का प्रयत्न कर रहा था।

4. यशायाह अध्याय 42:1–7 की शुरूआत में पहले चार परिच्छेदों को दास परिच्छेद के तौर पर जाना जाता है जो यीशु के जीवन के लिए प्रयुक्त है। आयत 2–3 बताती है कि वह एक कद्र शासक होगा। 6–7 आयतें बताती है कि कैसे वह अंधे को चंगा करेगा जिसका अर्थ शारीरिक चंगाई है, परन्तु वह यहां पर आत्मिक दृष्टि के विषय में भी बात कर रहा है।

5. अध्याय 49:1–7 और 50:4–11 भी यीशु को एक दास के समान चित्रित करते हैं।

6. अध्याय 52:13, 53:12 हम एक दुख पाने वाले दास को देखते हैं शायद दास सेवक के विषय में अच्छी रीति से जानने वाला परिच्छेद है। आइए नजदीकी से इस परिच्छेद को देखें।

   अ. यशायाह 52:13 हम देखते हैं कि यीशु ऊँचा उठाया गया और वह पृथ्वी के राजाओं के शांत कर देगा।

   ब. अध्याय 53:1–3 हमें बताती है कि यीशु को त्यागे जाने का दुःख उठाना पड़ा। लोगों द्वारा और पीड़ा का अनुभव करना पड़ा।

   स. अध्याय 53:4–6 हमें बताती है कि उसने हमारे लिए दुख उठाया और उसे यह दुख परमेश्वर की ओर से मिला था।

   द. अध्याय 53:7–9 हमें बताती है कि यद्यपि यीशु निर्दोष था फिर भी उसने बिना विद्रोह किए अपने भाग्य को स्वीकार किया। हमारे स्थान पर उसने मृत्यु को ले लिया। यीशु इतने शक्तिशाली थे कि हमसे प्रेम करने के कारण वह क्रूस के लिए गये। कोई भी इतना सामर्थी नहीं था कि उनकी सहमति के बिना उन्हें मरने दे।

   इ. आयत 10–12 बताती है कि जिस परमेश्वर ने उसे कुचला वही उसे पुरस्कृत भी करेंगे। दास दुख उठाने के द्वारा विजय को पाता है, क्योंकि पीड़ा या दुख परमेश्वर की योजना को पूरी करती है। पीड़ाएं अभी भी परमेश्वर की योजना की पूत्रि करते हैं।

यिर्मयाह और विलापगीत

यिर्मयाह नबी यशायाह की मृत्यु के 60 वर्षों के पश्चात् आया। उसका संदेश यहूदा और यरूशलेम के लिए आने वाले न्याय के विषय में है। सामान्यतः यिर्मयाह को रोने वाले नबी के तौर पर जाना जाता है क्योंकि न्याय का संदेश देने के कारण उसका हृदय टुटा हुआ था यिर्मयाह 9:1 और 13:15–17।

अधिकांश यह पुस्तक यहूदा राज्य के अंतिम दिनों के इतिहास को वर्णित करती है। पुस्तक का कुछ हिस्सा यिर्मयाह की जीवनी है और शेष भाग यहूदा के विषय भविष्यवाणी है। पुस्तक असमंजस में डाल सकती है क्योंकि इसे क्रमानुसार नहीं रखा गया है। यह यशायाह के समान है और यह ऐसा प्रतीत होता है कि संदेश अलग समय पर दिया गया और इसे बाद में इकट्ठा किया गया बिना इस बात की परवाह किये कि कब वास्तविक संदेश दिया गया।

वह एक पुरोहित होने के लिए पैदा हुआ था और मूसा के समान हीवह परमेश्वर द्वारा दिए हुए कार्य की बुलाहट को स्वीकार नहीं करना चाहता था। परमेश्वर ने उस से कहा कि उसे यह कार्य करने के लिए बुलाया गया है और परमेश्वर उसकी सहायता करेगा और उसे सुरक्षा भी प्रदान करेगा। परमेश्वर ने उसके प्राण को बचाया परन्तु यिर्मयाह को कैद में डाला गया, पीटा गया और लगभग उसे मार डाला गया था। यिर्मयाह हमारे लिए एक उदाहरण है कि जब परमेश्वर हमें सेवा के लिए बुलाहट देते हैं तो हमें बुलाहट का उत्तर देना चाहिए चाहे उसके लिए हमें कोई भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े। सेवा का मूल्य सामान्यतः अधिक होता है। यह आपके जीवन का मूल्य भी हो सकता है।

वह नबी के तौर पर चालीस वर्षों तक पांच राजाओं के शासन में सेवा किया। प्रथम राजा योशियाह ही केवल परमेश्वर का भय मानने वाला था, और अन्य सभी परमेश्वर की दृष्टि में दुष्ट थे। वह यहूदा और यरूशलेम को बेबीलोन द्वारा जीते जाने के समय नबी था। यह यरूशलेम के लिए भयानक समय था क्योंकि बेबीलोनवासी बहुत ही क्रूर थे, और यिर्मयाह ने लोगों से प्रेम किया।

इस समय यहूदा ने अपनी स्वतंत्रता को खो दिया था और मिस्र और बेबीलोन जैसे विदेश राष्ट्रों के अधीन ही अस्तितत्व में रहने की अनुमति पाए हुए थे। यह दोनो राष्ट्र यहूदा पर अधिकार के लिए लड़ते रहते थे। सुलैमान के समय इस्राएल के शक्तिशाली और धनी होने का कारण यह था कि परमेश्वर ने उन्हें आशीषित किया था। यिर्मयाह के समय यहूदा के पापों के कारण परमेश्वर ने अपनी सुरक्षा की आशीषों को हटा लिया। इसका अर्थ यह है कि यहूदा स्वतंत्र रहने के लिए बहुत कमजोर हो गया था।

1. यिर्मयाह राजा योशियाह के शासन के दौरान 640–609 बी.सी (2 इति 27:34–35)

1. पांच वर्षों के पश्चात् उसने नबी के समान कार्य शुरू किया, वाचा की पुस्तक मंदिर में खोजी गई। 2 राजा 22:8। इस कारण प्रदेश में जागृति का प्रारम्भ हुआ, और यहूदा पुनः परमेश्वर की आराधना करने लगे और राजा योशियाह उनकी अगुवाई करने वाला था। यिर्मयाह ने चेताया कि जागृति केवल तभी प्रभावकारी है जब लोग अपने हृदयों को परिवर्तित करे। (यिर्मयाह 2:22)

1. वाचा की पुस्तक कभी भी पूर्ण रूप से लुप्त नहीं हुई थी। पालन नहीं किया जा रहा था। मार्टिन लूथर के समय भी ठीक ऐसा ही बाईबल के साथ हुआ। बाईबल केवल कुछ ही लोगों के लिए उपलब्ध थी, परन्तु इसकी शिक्षाएं न तो सिखायी गई और न ही इन लोगों ने उसका पालन किया। कलीसिया ने आराधना का स्वयं का ही तरीका ढूंढ़ लिया था। जब मार्टिन लूथर ने बाईबल को पढ़ा, उसने रोमन कैथोलिक कलीसिया के विरूद्ध में विरोधस्वरूप लूथरन कलीसिया को प्रारम्भ किया। योशियाह की मृत्यु के पश्चात के राजा दुष्ट थे और उन्होंने परमेश्वर की आराधना करना रोक दिया। यह दिखाता है कि जब यिर्मयाह ने लोगो से हृदय परिवर्तन के विषय में कहा तो उन्होंने उसकी बात नहीं सुनी। वे बाहरी तौर से परमेश्वर की आराधना करते थे, परन्तु उनके हृदय पापमय थे।

2. यहूदा में 609 ईसा पूर्व में तीव्र दुष्ट राजाओं ने शासन किया।

1. इन तीन राजाओं में से पहला राजा यहोयाज था जो केवल तीन महीने के लिए राजा था, उसके पश्चात उसे मिस्र में बंधुवाई में ले जाया गया जो उस समय उस क्षेत्र में एक शक्तिशाली राष्ट्र था। यिर्मयाह को राजा और लोगों द्वारा किये जाने वाले बुरे कार्यों के विरूद्ध बोलने के लिए बाध्य किया गया। राजा के विरूद्ध बोलना खतरनाक है, और यिर्मयाह को भविष्य में पुनः ऐसा करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। यहां तक कि यहेजकेल ने भी यहोयाज के बंधुवाई में जाने और पतन की भविष्यवाणी की। यहेजकेल 19:3–4

2. यहोवाकीम अगला राजा बना और वह भी दुष्ट था। मिस्र के राजा ने यहोयाज को हटाने के पश्चात उसे राजा बनाया। जब यहोवाकीम राजा था तब मिश्र और बाबुल के मध्य युद्ध हुआ जिसमें बाबुल की विजय हुई और उस क्षेत्र में मिश्र के स्थान पर बाबुल एक ताकत बन गया। यह यहुदा के लिए महत्वपूर्ण था क्योंकि वह इतना कमजोर हो गया था, कि पहले मिश्र ने फिर बाबुल ने उस पर शासन किया। बाबुल अपने साथ बहुत सा धन और गुलाम ले गया। दानियल उनमें से एक था।

अ. एक नबी के तौर पर यिर्मयाह के लोगों को चेतावनी दी कि उनमें पाप उन्हें विनाश की ओर ले जायेंगे।

परमेश्वर ने यिर्मयाह के द्वारा लोगों को पश्चाताप करने के लिए कहा ताकि वह उन्हें आशीष दे सके। हालांकि लोग पाप में ही पड़े रहे और सामने अग्रसर होने के बजाए वे पीछे ही जाने लगे। अध्याय 7:23–24।

ब. परमेश्वर ने मूर्तिपूजा और अनैतिकता से घ णा करने के कारण ही यिर्मयाह को झूठे अगुवों और झूठे नबियों की भर्त्सना करने के लिए उपयोग किया। जिन्होंने लोागों को गलत राह दिखायी अध्याय 23:1–2 और 27:9–10

अगुवे और नबी यिर्मयाह द्वारा आने वाले विनाश के संदेश के कारण क्रोधित थे और उन्होंने यिर्मयाह को ामर डालने की मांग की। अध्याय 26:8। यिर्मयाह को मार डालने की धमकी वास्तविक थी एक अन्य नबी उर्जियाह की भी हत्या कर दी गई थी। अध्याय 26:20–23

स. यिर्मयाह ने यहोवकीम की मृत्यु की भविष्यवाणी की। अध्याय 22:18–19

3. राजा यहोवाकीम तीन माह के लिए राजा बनां वह एक दुष्ट राजा था और यिर्मयाहह ने भविष्यवाणी की कि उसे बाबुल में बंदी के तौर पर ले जाया जाएगा। ऐसा हुआ भी और वह बाबुल में 37 वर्षों तक बंदीगृज में रहा। यिर्मयाह 22:24–30 और यहेजकेल और यहेजकेल 19:9

यहूदा का अन्तिम राजा मतानियाह था, जिसे बाबुल के शासक नबूकदनेस्सर ने सिदिक्याह नाम दिया। यहेजकेल 17: :2–3 यह प्रकट करता है कि कैसे बाबुल पूरी रीति से यहूा पर नियंत्रण रखता था।

1. परमेश्वर ने यिर्मयाह नबी के द्वारा लोगों से कहा कि वे सत्तर वषों तक बाबुल के शासन के अधीन रहे। यिर्मयाह 29:10 अध्याय 51:59 विवरण देती है कि सिदिक्याह बाबुल गया ताकि शायद वह नबूकदनेस्सर के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता को सुनिश्चित कर सके।

2. पांच वर्षों पश्चात् सिदिक्याह ने मूर्खतापूर्वक परमेश्वर की आज्ञा को नहीं माना और बाबुल के राजा के विरूद्ध विद्रोह किया। उसने पूर्व में परमेश्वर की शपाि खाकर नबूकदनेस्सर से विद्रोह नहीं करने का वायदा किया था। 2 इतिहास 36:13 और यहेजकेल 17:13–21

3. इस विद्रोह के कारण नबूकदनेस्सर ने यहूदा पर चढ़ाई की और यरूशलेम पर आक्रमण किया। सिदिक्याह ने यिर्मयाह नबी से पूछा कि क्या वह विजय पायेगा। यिर्मयाह नेकहा कि लोगों को यरूशलेम त्याग कर नबूकदनेस्सर के सम्मुख आत्मसमर्पण कर देना चाहिए क्योंकि वह पराजित होगा। उसने सिदिक्याह से यह भी कहा कि उसे नबूकदनेस्सर से क्षमा की याचना करनी चाहिए। क्योंकि यरूशलेम का विनाश होने जा रहा है। यिर्मयाह 21:9–10

4. यह संदेश जिसे पसंद नहीं किया गया के कारण यिर्मयाह को कीचड़ भरे बंदीगृत में डाल दिया गया। यिर्मयाह 38'6, आयत 13 बताती है कि शीघ्र ही एक इथोपियन के प्रयासों द्वारा उसे बचाया गया।

5. यह सभी दुखित संदेश परमेश्वर के यरूशललेम पर दण्ड के विषय में है। यह कठोर न्याय होगा, लेकिन परमेश्वरन ने यह प्रकट किया कि वह अब भी अपने लोगों से प्रेम करता क्योंकि उसने यिर्मयाह को कुछ उत्साहित करने वाले संदेश भी दिए। यिर्मयाह 30:18, 22 और 31:3 हमारे लिए शिक्षा यह है कि कभी हम जिस से प्रेम करते उसे अनुशासित करने की भी जरूरत होती है। परन्तु हमें उन्हें यह स्मरण दिलाना चाहिए कि हम अभी भी उनसे प्रेम करते हैं और दण्ड उनके लाभ के लिए है। परमेश्वर लोगों से कहता है कि दण्ड के पश्चात् वह उन्हें यरूशलेम में फिर से इकट्ठा करेगा। अध्याय 29:10

6. बाबुल ने शहर और मंदिर को नाश कर दिया। बहुत सारे लोगों को बाबुल में बंधुवाई में ले जाया गया। यिर्मयाह शहर में ही रहा जब तक उसे मिस्र के लिए बाध्य नहीं किया गया। जहां उसकी मृत्यु हुई।

5. यद्यपि इस पुस्तक में बहुत से दुखित करने वाले संदेश हैं, वहां पर महिमामय मसीही भविष्यवाणियां भी हैं।

1. अध्याय 3 का प्रारम्भ परमेश्वर के क्रोधित होने से होती है। क्योंकि उसके लोग मूर्तिपूजक थे। हालांकि आयत 12 में परमेश्वर ने अपने लोगों से पश्चाताप करने के लिए कहा और वह उन पर अनुग्रह करेगा। उत्तर की ओर देखने का संदर्भ इस प्रकार से है कि परमश्वेर कहता है कि उसकी दया दस गोत्रों के बचे हुओं के लिए जो उत्तरी इस्राएल के हैं और साथ ही साथ यहूदा के लिए भी हैं।

अ. 16–17 आयतें उस समय का जिक्र करती है जब हमें वाचा के संदूक की आवश्यकता नही होगी क्योंकि मसीहा आ रहा है और वह किसी भी आवश्यकता की पूर्ति करेगा।

नयी वाचा का उल्लेख किया गया है। इस्राएल परमेश्वर के साथ वाचा का एक देश अब्राहम के दिनों से है जब परमेश्वर ने अब्राहम के द्वारा सभी लोगों को आशीषित करने का वादा किया। उत्पति 12:1–3 सिनाई पर्वत पर परमेश्वर ने इब्रानी लोगों को विधियों की वाचा दी जिससे अनाज्ञाकारी लोगों पर श्राप और पूर्ण आज्ञाकारी लोगों पर आशीषों आई। निर्गमन 24:7 लोग पूरी रीति से विधियों का पालन नहीं कर सके इसलिए लोगा दोषी ठहराये गये।

अ. यिर्मयाह ने एक नई वाचा को प्रकट किया जो कि पापों की क्षमा, उद्धार के लिए पर्याप्त है। यिर्मयाह 31:31–34

ब. नयी वाचा ने पूरी रीति से पुरानी वाचा को बदल दिया। इब्रानियों 8:13 यीशु मसीह का जीवन और मृत्यु नयी वाचा के केन्द्र में है। लूका 22:20

स. नयी वाचा अनुग्रह की वाचा है। यीशु ने सॅम्पूर्ण कार्य किया और उद्धार निशुल्क उसके लोगों को दिया गया है। इफिसियों 2:8–9।

6. उपयोग

1. यिर्मयाह के अधिकांश संदेश न्याय के संदेश हैं। यह कुछ ऐसा है जो हैरान करने वाला है क्योंकि यिर्मयह एक भावुक व्यक्तित्व है। देख कि वह किस प्रकार लोगों के लिए रोता है। इसलिए उसे रोने वाला नबी भी कहा गया है। यिर्मयाह 9:1 और 13:16–17

अ. 700 वर्षों पश्चात् उसी प्रकार की कोमलता हम एक अन्य नबी, यीशु में देखते हैं, वह भी अपने लोगों के लिए रोया। मत्ती 23:37

ब. यिर्मयाह ने कुछ कठोर भविष्यवाणी दी, परन्तु परमेश्वर द्वारा अनुग्रह के कुछ अविस्मरणीय शब्दों को भी बताया। यह परमेश्वर के प्रेम और तरस के शानदार शब्द हैं। यिर्मयाह 29:11 और 31:3

2. परमेश्वर के न्याय की घोषणा करना।

अ. यिर्मयाह एक भद्र पुरूष था, परन्तु फिर भी उसने विश्वासयोग्यता से उन लोगों पर भयंकर न्याय की घोषणा की जिन्हें वह प्रेम करता था। यिर्मयाह 7:20, 30, 33–34 एक सच्चे मसीही अगुवे की निशानी यह है कि वह एक प्रेमी और कोमल व्यक्ति है अपने लोगों के लिए परन्तु जब आवश्यकता है तो वह अनुशासन का भी व्यवहार में ला सके।

1. बाईबल में परमेश्वर के क्रोध के लिए बहुत सी आयते हैं तुलनात्मक रीति से परमेश्वर के प्रेम और कोमलता से। भजन संहिता 90:11

ब नरक और अनन्त पीड़ा के अधिकांश आयतें नये नियम में सीधे तौर पर यीशु मसीह द्वारा ही प्राप्त है। क्रूस पर यीशु ने मृत्यु और नरक को अपने लोगों के लिए जाना। हम इसे यीशु की विस्मयकारी प्रकार, ''मेरे प्रभु, मेरे प्रभु तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' में देखते हैं। मत्ती 27:46 हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हमारे पाप कितने भयानक हे, और नरक की कितना भयानक है, इसलिए अच्छा है कि हम यीशु में विश्वास अपने उद्धार की सराहना करे।

3. प्रकृति द्वारा मनुष्य के हृदय की दशा।

क. स्वभाविक रीति से मनुष्य का हृदय दुष्ट है। यिर्मयाह 17:9 यीशु दुषित मनुष्य द्वारा बुराई के विषय में बात करते हैं। मरकुस 7:21–23। मत्ती 23:27

ख. प्रत्येक व्यक्ति बुरा है और अपने पापों द्वारा दोषी ठहराया जाता है जिस कारण वह परमेश्वर के राज्य में जाने से रोका जाता है। रोमियों 8:7–8

ग. स्वर्गीय राजय में प्रवेश करने के लिए हमारे पास एक नया हृदय होना चाहिए। यहेजकेल 36:26 यीशु ने यह कहने के द्वारा कि हमें नया जन्म लेना है। इस बात को व्यक्त किया। यूहन्ना 3:5।

4. विश्वास से भटके हुओं से याचना

क. यिर्मयाह ने परमेश्वर के लोगों से कहा कि वे परमेश्वर से दूर न हो जाएं। इससे पहले कि बहुत देर हो जाए उन्हें परमेश्वर के पास और आना चाहिए।

अ. उसने यरूशलेम के लोगों से कहा कि वे इस्राएल से भी ज्यादा पापी हैं और परमेश्वर ने अश्शूरीयों को उन पर विजय होने दिया। यिर्मयाह 3:11

ब. उसने लोगों से पश्चाताप कर फिर से परमेश्वर की ओर लौटने को कहा औरयदि वे ऐसा करते हैं तो परमश्वर उनसे क्रोधित नहीं रहेगा। यिर्मयाह 3:12–13

3. उन्हें देरी होने से पहले शीघ्र परमेश्वर के पास लौटना चाहिए। एक बिगड़ा हुआ पात्र तभी बचाया और पुनः रूप दिया जा सकता है ज बवह गीता हो। यिर्मयाह 18:4–6 पात्र पुराना और सूखा होने के बाद नहीं बचाया जा सकता, और तब केवल इसे नाश ही किया जा सकता है। हम एक पात्र के समान केवल तभी एक मसीह के रूप में बनाये जा सकते हैं जब हम जीवित हैं। यिर्मयाह 29:13–14 और यशायाह 55:6–7

5. अकेले खड़े रहना।

अ. आमतौर पर यिर्मयाह ने निश्चित यह महसूस किया होगा कि वह पूरी तरह से अकेला है। आप भी जब अप्रिय संदेश लाते हैं तो आप को अकेला छोड़ दिया जाता है। यिर्मयाह परिवार, मित्रों, शासकी, याजकों और नबीयों द्वारा त्यागा

हुआ था। सभी उसके विरूद्ध हो गये। उसे पीटा गया और जान से माने जाने की धमकी दी गई। यिर्मयाह ने बाद के नबी यीशु के समान दुख उठाया। यशायाह 53:3

7. निष्कर्ष

1. यिर्मयाह परमेश्वर द्वारा यहूदा को चेतावनी से भरा हुआ है। निश्चय ही परमेश्वर यहूदा के साथ धीरज से रहा, उसने चेतावनी दी। धमकी दी, और उसके लोगों से याचना की कि वे उसकी आज्ञा को न तोड़े। उसने सैकड़ों वर्षों तक ये किया। परमेश्वर धीरज रखने वाला है परन्तु उसके धीरज की सीमा है, और जब वह दण्डित करने का निश्चय करता है तो दण्ड भयानक है। परमेश्वर यिर्मयाह के दिनों के समान ही है और इन चेतावनियों की ओर से हमें ध्यान देना चाहिए।

विलापगीत

यह पुस्तक एक दुख की पुस्तक है, क्योंकि यह यहूदा की अंत्येष्टि के विषय में बात करती है। यह पुस्तक अंत्येष्टि कविताओं की श्रृंखला है जिसे यिर्मयाह नबी द्वारा रचा गया है जिसे रोने वाले नबी के तौर पर जाना जाता है। बाईबल में यह एक दुखित पुस्तक है। परमेश्वर ने अपने लोगों को कठोर दण्ड दिया और विलापगीत उनके दुख का प्रकटीकरण है।

1. पहली कविता : यरूशलेम का विनाश 1:1–22

1. पहला विलाप दुख की पीड़ा के कारण है उस विनाश के लिए जो यरूशलेम नगर के उपर आया। नगर पूरी रीति से बर्बादी में पड़ा था, क्योंकि कई बार चेतावनी देने के पश्चात परमेश्वर नगर पर पूर्ण विनाश को लाये। नगर पूरी तरह से बर्बाद होने के कारण सुनसान और त्यागा हुआ था। एक विधवा महिला का चित्र जो अपने पति और बच्चों को खोने के कारण विलाप कर रही हो। विलापगीत 1:11 ठीक यही स्थिति उन लोगों की भी होगी जो सभी चेतावनियों को अनदेखा करते हैं और जो यीशु को स्वीकार नहीं करेंगे। जब वे मरेंगे और नरक में जायेंगे, तब वे दुखित होंगे और खेद जतायेंगे कि उनका भविष्य सदा के लिए नरक में पीड़ा उठाना होगा।

2. यिर्मयाह ने यह स्पष्ट कर दिया कि दण्ड परमेश्वर की ओर से है और यह लोगों के पाप और विद्रोह के कारण है। विलापगीत 1:8 नबी ने यह चित्रित किया कि लोगों ने स्वीकार किया कि वे दोषी हैं, और उनके विद्रोह के कारण उन्हें दण्डित करने में परमेश्वर पूरी रीति से धर्मी हैं

3. यिर्मयाह ने बताया कि कैसे उनके शत्रु उनके विनाश से प्रसन्न हैं। यिर्मयाह इन शत्रुओं के विनाश की प्रकार करता है। क्योंकि वे भी परमेश्वर के सम्मुख पाप के दोषी हे। विलापगीत 2:1–22

2. द्वितीय कविता :

परमेश्वर का धर्मी क्रोध। अध्याय 2:1–22

1. यह सत्य है कि यरूशलेम का विनाश बाबुल द्वारा किया गया था, परन्तु उन्होंने यह केवल इसलिए किया कि वे परमेश्वर द्वारा उन्हें दण्डित करने के लिए उसके प्रतिनिधि के तौर पर चुना था। उनका विनाश परमेश्वर के द्वारा हुआ था। विलापगीत 1:1–6। कई अवसरों पर परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उन लोगों का भी उपयोग करते हैं जो उसके लोग नहीं हैं। लोगों को दण्डित करने के लिए भी परमेश्वर ऐसा करते हैं। इससे पहले उत्तरी राज्य इस्राएल को दण्डित करने के लिए अशूरियों का उपयोग किया गया था। यशायाह ने यह भविष्यवाणी की कि परमेश्वर यहूदियों को गुलामी से आजाद करने और यरूशलेम वापिस लौटने के लिए कुस्रू का उपयोग करेगा। यशायाह 44:28 और 45:11

2. अपने लोगों को दण्डित करने के पीछे परमेश्वर के पास अच्छा कारण होता है। अब यिर्मयाह ने लोगों से पश्चाताप करने का आह्वान किया। उसने परमेश्वर से यह याद करने के लिए प्रकार लगाई कि उनके पापी होने के बावजूद भी वे उसके ही लोग हैं। उसने परमेश्वर से प्रकार लगाई कि वे अपने लोगों की ओर दया और तरस से देखे। विलापगीत 2:19–20

3. तृतीय कविता : नबी और लोगों की वेदना और आशा। अध्याय 3:1'66

1. यिर्मयाह लोगों के साथ उनकी दुर्दशा में सहभागी था। लोगों के दुख पर उसके अपनी वेदना का प्रकट किया। इस संकट के समय में भी यिर्मयाह का भरोसा और आशा परमेश्वर पर ही था। विलापगीत 3:23–24

2. इस भयावह समय में भी यिर्मयाह का विश्वास परमेश्वर पर भविष्य के लिए था क्योंकि बीते समय में वह विश्वासयोग्य था और परमेश्वर ने भविष्य में भी विश्वासयोगय रहने का वादा किया। यिर्मयाह जानता है कि परमेश्वर लोगों दण्डित करने से प्रसन्न नहीं होता, वह ऐसा अच्छे कारण से ही करता है। विलापगीत 3:33

3. यिर्मयाह ने यह स्वीकार किया कि लोगों की अविश्वासयोग्यता के कारण ही उन्हें यह दण्ड दिया गया वे परनमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारी और विद्रोही रहे। विलापगीत 3:40–42

4. चतुर्थ कविता : यरूशलेम पर आक्रमण अध्याय 4:1–22

1. यिर्मयाह ने यह विवरण दिया कि उनके पास महिमा और धन समपदा थी। उसने ऐसा यह दिखाने के लिए किया कि लोग उनके पापों के कारण कितना गिर गये है। विलापगीत 4:1

2. यिर्मयाह लोगों की भयंकर पीड़ा को दर्शाता है जब वे बंधुओं बनाये गये और यरूशलेम के गिरने के बाद भी जिसे उन्होंने सहा। वह लोगों के मृतकों के समान चलने का वर्णन करता है। यह सभी लोगों के लिए एक चेतावनी है कि उनके पाप उन पर न्याय लेकर आयेंगे। विलापगीत 4:2–8

5. पाँचवीं कविता : इस्राएल के पुर्ननिर्माण की याचना। अध्याय 5:1–22

1. लोगों ने अपने पाप से पश्चाताप किया ताकि वे परमेश्वर से उनकी पीड़ाओं से मुक्त करने के लिए प्रार्थना कर सके। विलापगीत 5:1

पुस्तक बगैर किसी आश्वासन के समाप्त होती है कि परमेश्वर वापिस लौटेंगे, परन्तु उनकी एकमात्र आशा उस परमेश्वर पर है जिसे वे पुकार रहे थे। विलापगीत 5:21

6. मसीह और उसकी कलीसिया

यिर्मयाह मसीह के समान हैं
यिर्मयाह यशसलेम और लोगों के विनाश पर रोया। विलापगीत 4:11 और 13
छह सौ वर्षो पश्चात् यीशु यरूशलेम पर आने वाले न्याय के लिए रोया। लूका 19:21–23
यहूदी लोग फिर से उनके वर्तमान पापों के लिए दण्डित किये जाने वाले हैं। मत्ती 23:37
2. यीशु से संबंधित सीधी भविष्यवाणी वहां नहीं है, परन्तु वहां कई आयते हैं जो मसीह के आने के वायदे के विषय में है।
विलापगीत 2:15–16 तब भजन संहिता 22:13 और मत्ती 39:44
विलापगीत 3:8 और मत्ती 27:46
विलापगीत 3:8 और मत्ती 27:46
विलापगीत 3:8 और मत्ती 27:46
विलापगीत 3:14 तब भजन संहिता और मत्ती 26:57–58
विलापगीत 3:18 तब भजन संहिता 69:21 और मत्ती 27:34
विलागीत 3:30 तब 69:20 तब यशायाह 50:6 और लूका 22:63–64

उपयोग

1. परमेश्वर रहित जीवन

- परमेश्वर रहित जीवन की दशा को इन तरीकों से दर्शाया गया है जैसे विश्राम नहीं, चराईया नहीं, और कोई आराम नहीं। विलाप गीत 1:3 और 6 और 9 यह भयानक है।
- केवल मसीह में ही हमारे पास यह चीजें हैं। मत्ती 11:28 और यूहन्ना 10:9 और युहन्ना 14:16–17

2. परमेश्वर की विश्वाययोग्यता

- यद्यपि लोग बहुत अधिक दुख उइा रहे थे, फिर भी विश्वास और आशा है। विलापगीत 3:22–23
- हम अपनी विषम परिस्थितियों में भी परमेश्वर पर निर्भर हो सकते हें। यशायाह 50:10

8. निष्कर्ष

1. विलापगीत एक गहरे दुख और भयानक पीड़ा की पुस्तक है, फिर भी इस वेदना में यिर्मयाह परमेश्वर की पवित्रता, उसके न्याय और उसकी प्रधानता का वर्णन करता है जिसे परमेश्वर ने यहूदा पर स्थापित किया। दूसरे शब्दों में कहे तो परमेश्वर लोगों का दण्डित करने में धर्मी था। क्योंकि वे दण्ड के हकदार थे। वे लोग जो नरक जायेंगे वे अनन्तता त कवे जानेंगे कि वे उस दण्ड के हकदार हैं।

   कोई भी परमेश्वर को धैर्य के लिए दोषी नहीं ठहरा सकता है। यह कई वर्षों के लगातार चेतावनीयों, धममियों ओर याचना के पश्चात् ही परमेश्वर का दण्ड था जो यहूदा पर आया।

   उनकी भयानक परेशानियों के समय भी वहां पर आशा है क्योंकि परमेश्वर विश्वासयोग्य है। विलापगीत 3:23

4. विलापगीत के अन्तिम शब्दों में भविष्य के लिए एक आशा है। विलापगीत 5:21–22

5. स्थिति आशाहीन प्रतीत होती है, परन्तु यिर्मयाह परमेश्वर के वादों पर भरोसा रखता है। परमेश्वर द्वारा अब्राहम, मूसा, दाऊद और यहूदा से की गई वाचाओं को नहीं तोड़ेंगे। यिर्मयाह, अब्राहम के समान ही है जो उससे पहले था, उसने आशा के विरूद्ध विश्वास किया। रोमियों 4:18 इससे कोई फर्क नहीं की आपकी स्थिति किस प्रकार नजर आती है, यह कितनी ही असंभव सी प्रतीत होती है, इस संसार में विश्वासियों के परमेश्वर के वचन पर भरोसे को कोई नहीं हटा सकता है। परमेश्वर सत्य है। परन्तु प्रत्येक मनुष्य झूठा है। रोमियों 3:4

यहेजकेल

यह पुस्तक यहेजकेल द्वारा लिखी गई जो यहूदियों के बाबुल की बंधुवाई के समय एक पुरोहित और नबी था। उसका जन्म यरूशलेम में हुआ था और वह बाबुल के द्वितीय आक्रमण के समय बंधुवाई में ले जाया गया था। उसने दानियल और यिर्मयाह के समय में ही कार्य किया। यिर्मयाह यरूशलेम के अन्तिम दिनों में नबी था इससे पहले कि नबूकदनेस्सर ने शहर को तबाह किया। ठीक उसी समय दानियल बाबुल के शाही दरबार में एक नबी था।

यहेजकेल समझने के लिए कठिन है जिस कारण लोग इसे नही पढ़ते हैं। इस मुश्किल का सत्य यह है कि यह पुस्तक पूर्ण रूप से वृत चित्रों से भरी हुई है। लेखक ने परमेश्वर के संदेश का नाटयकरण करने के लिए दर्शनों, भविष्यवाणियें, दृष्टांतों, चिन्हों, और प्रतीकात्मक कार्यों का उपयोग किया है। जिस कारण यह पुस्तक समझने के लिए कठिन है, परन्तु वहां पर कई सच्चाईयां भी हैं जो समझने के लिए आसान है और हमारे लिए अर्थपूर्ण है।

1. पुस्तक का प्रथम भाग यहेजकेल को कार्य सौंपे जाने का विवरण देता है। यहेजकेल 1:1–3, 27

1. परमेश्वर यहेजकेल के सम्मुख दर्शन में प्रकट हुए ठीक यशायाह के अनुभव के समान जब परमेश्वर ने एक महान महिमा का चित्र नबी को दिखाया। अध्याय 1:28 हमें बताती है कि यहेजकेल परमेश्वर का सामना करने पर परमेश्वर की महिमा देख भूमि पर मुंह के बल गिर पड़ा।

अ. हम सभी को परमेश्वर का सामना करने पर कांपना चाहिए जैसे जब हम प्रार्थना करते हैं या बाईबल पढ़ते हैं। यशायाह 66:5 याद रखें कि परमेश्वर पवित्र है और हम सभी पाप से भरे हुए हैं।

2. अब यहेजकेल परमेश्वर द्वारा दीन किया गया और पैरों पर खड़ा किया गया और परमेश्वर द्वारा कार्य को सौंपा गया। उसे बताया गया कि अन्य नबियों के समान उसकी सेवकाई भी कठिन होगीं।परमेश्वर ने उसे पांच प्रकार की जिम्मेदारीयां दीं।

   - उसे मनुष्य का पुत्र शीर्षक दिया गया जिसका उपयोग इस पुस्तक में 90 बार किया गया है। भले ही परमेश्वर अपने लोगों को दण्डित कर रहे हैं परन्तु उन्होंने उन्हें भुलाया नहीं है, और उसने यहेजकेल को उनके लिए एक संदेश देने वाले के तौर पर भेज। यहेजकेल 2:3
   - यहेजकेल को परमेश्वर द्वारा अधिकार दिया गया और वह परमेश्वर के वचनों को बोल रहा था। यहेजकेल 3:4
   - यहेजकेल को सामर्थ परमेश्वर द्वारा प्राप्त होती थी। हम इसे देखते हैं जब परमेश्वर ने उसे उसके पैरों पर खड़ा किया। यहेजकेल 2:2 परमेश्वर के सेवक को स्वयं की सामर्थ द्वारा कार्य करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। सामर्थ को परमेश्वर से प्राप्त करना चाहिए। यहेजकेल ने इस बात को सीखा कि वह उनलोगों के साथ कार्य करेगा जो उसके विरूद्ध होंगे इसलिए उसकी सेवकाई कठिन होगी। यहेजकेल 3:7–9

द यहेजकेल को अपने लोगों के प्रति विश्वासयोग्य रहना है, यहूदी लोगों के प्रति, यद्यपि वे काफी मुश्किल साबित होंगे। यहेजकेल 3:5 और 11। अध्याय दो इस विष्ज्ञय में बताता है कि लोग संदेश को स्वीकार नहीं करेंगे ठीक उसी प्रकार जैसे उन्होंने अधिकांश परमेश्वर के नबीयों के साथ किया।

1. हमारे लिए शिक्षा यह है कि हम विश्वासयोग्यता से परमेश्वर के वचन का प्रचार करें चाहे लोग हमें और वचन को अस्वीकार करें। हमें इसे तब भी करना चाहिए जब यह हमारे लिए खतरनाक भी हो। हमें कभी भी स्वास्थ्य, धन और सम्पनन्नता जैसे संदेशों को प्रचार नहीं करना चाहिए। हमें केवल वही सिखाना और प्रचार करना चाहिए जो बाईबल में है।

हमें निश्चय ही परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी होना चाहिए। देखें कि यहेजकेल कैसे आाकारी रहा और जब परमेश्वर ने उसे वाचा की पुस्तक के चीरक को खाने के लिए कहा तो उसने खाया। अध्याय 3:1–2 हम सीखते हैं कि हमें बाईबल का पालन करना चाहिए जो ठीक परमेश्वर की आज्ञा को मानने के समान है।

3. परमेश्वर ने यहेजकेल को संदेश दिया कि मनुष्य की जिम्मेदारियां हैं। यहेजकेल 3:18,20, 33:8 परमेश्वर हमें जो भी करने के लिए कहते हैं उसके प्रति हम सब जवाबदेह हैं। उदाहरण के लिए परमेश्वर ने प्रत्येक मसीही को सुसमाचार प्रचारक होने के लिए बुलाया है।

हम बाईबल के अन्य भागों में भी इस सोच को पाते हैं कि हम परमेश्वर के प्रति जबावदे हैं। पौलुस इस विषय में कहता है कि यदि सुसमाचार का प्रचार नहीं करता है तो वह संकट में है। (1 कुरि 9:16)

2. पुस्तक का दूसरे भाग में हम देखते हैं कि यहेजकेल यहूदा के विरूद्ध न्याय की घोषणा करता है, यरूशलेम के पतन से पूर्व यहेजकेल ने ऐसा किया। अध्याय 4:27 यिर्मयाह अभी भी यरूशलेम था और यहेजकेल बाबल में थाद्ध दोनों ने यहूदा के विरूद्ध एक समान भविष्यवाणीयाँ की। यह भविष्यवाणियां मुख्य तौर से लोगों के पापों के कारण यरूशलेम पर आने वाले विनाश की चेतावनियां थीं।

1. परमेश्वर ने भयानक दण्ड देने के लिए कहा क्योंकि वे लोग केवल दुष्ट ही नहीं थे, उनकी दुष्टता मूर्तिपूजक राष्ट्रों से भी कहीं अधिक थी। (अध्याय 5:5–7)

2. यहेजकेल ने परमेश्वर की महिमा को शहर और मन्दिर से हट जाने का चित्रण किया।

- उसने वाचा के संदूक पर पहियों को देखा ताकि वह जा सके। अध्याय 10:9
- उसने परमेश्वर की महिमा को मंदिर के द्वार से जाते हुए चित्रण किया। अध्याय 10:4। तब यह पूर्वी फाटक की ओर चली गई 10:19। तब शहर से बाहर जैतून पर्वत पर 11:23।
- परमेश्वर की महिमा यहूदियों से 43 अध्याय तक दूर रही। परमेश्वर की महिमा का तात्पर्य यह है कि जब लोग परमेश्वर के समीप थे और वह लोगों के समीप था। परमेश्वर स्वयं ही उसकी महिमा है। न्याय या दण्ड का वह भाग जहां लोगों को कष्ट उठाना पड़ा था तब हुआ जब परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति और आशीषों उनके बीच में से उठा ली थी।
- यहेजकेल ने मुंह के द्वारा और चिन्हों के द्वारा भी संदेशों को बांटा। अध्याय 12:6 यहेजकेल ने स्वेच्छापूर्वक अपनी व्यक्तिगत रूचियों और आराम को त्याग दिया। अपनी प्रिय पत्नी के देहांत के पश्चात भी उसने परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना जारी रखा। यहेजकेल 24:15–18
- यहेजकेल ने यरूशलेम पर आक्रमण के समय शहर में ही है। उसके क्रियाकलाप अध्याय 4:17 में वर्णित है, जो एक चित्र है जब शहर पर आक्रमण हो रहा हो।
- अध्याय–5 की शुरूआत यहेजकेल द्वारा यरूशलेम के नागरिकों के विषय में होने वाली बातों के पुर्वानुमान से होती है।
- उसने अपनी वस्तुओं को पोटली में बांध कर एक दीवार को खोवा जो बंधुवाई में जाने वाले लोगों की जनसंख्या को प्रकट करने के लिए थी। यहेजकेल 12:1–20
- इस समय यरूशलेम में राजा सिदिक्याह ने यह विश्वास किया कि वह सुरक्षित है क्योंकि उसने यिर्मयाह और यहेजकेल की भविष्यवाणीयों में विरोधाभासा को पाया। यिर्मयाह ने कहा कि राजा को बंधुवाई में बाबुल ले जाया जायेगा। यिर्मयाह 21:7। यहेजकेल ने कहा कि राजा बाबुल को नहीं देखेगा। यहेजकेल 12:13 दोनों भविष्यवाणियां एकदम सही है क्योंकि राजा सिदिक्याह की आँखें निकाल ली गई थीं इससे पहले कि वह बाबुल ले जाया गया, सो वह बाबुल तो गया परन्तु वह कुछ देख नहीं सकता था। 2 राजा 25:7।

3. राजा सिदिक्याह को नबूकदनेस्सर द्वारा राजा शर्त पर बनाया गया था कि वह नबूकदनेस्सर के विरूद्ध विद्रोह नहीं करेगा। सिदिक्याह ने इस समझौते का पालन नहीं किया। यहेजकेल 17:13–15 सिदिक्याह का विद्रोह एक पाप था और इस से परमेश्वर क्रोधित हुए क्योंकि नबूकदनेस्सर ने सिदिक्याह को परमेश्वर के नाम से शपथ दिलायी थी। 2 इतिहास 36:13

4. हम यहेजकेल में सीखते हैं कि परमेश्वर इस्राएल से मिस्र में उनके रहने के समय से ही क्रोधित था, क्योंकि वे मूर्तिपूजा करते थे। हम सीखते हैं कि केवल एक ही कारण था जिसकी वजह से परमेश्वर उन्हें नाश नहीं कर रहे थे और यह कारण परमेश्वर की महिमा थी। यहेजकेल 20:1–9

- परमेश्वर स्वयं के समय में पाप को दण्डित करेगा, वह कभी भी भूलता नहीं है।
- परमेश्वर स्वयं की महिमा के कारण हमें बचाते हैं और केवल हमारे लाभ के लिए नहीं, यद्यपि हम ही लाभान्वित होते हैं। यशायाह 43:7, 46:13

5. कब्जा किए जाने के प्रथम वर्ष में यहेजकेल की प्रिय पत्नी का निधन हो गया। यहेजकेल 24:2,18 परमेश्वर ने यह प्रकट किया कि यह मृत्यु एक चिन्ह है कि यरूशलेम की पराजय नहीं टल सकती। यहेजकेल 24:16–24

3. चारों ओर के अन्य राष्ट्रों के विरूद्ध न्याय। यहेजकेल 25:1–32, 32

- परमेश्वर ने चारों ओर के राष्ट्रों के लिए भी न्याय की घोषणा की क्योंकि वे मूर्तिपूजक थे और वे परमेश्वर के लोगों की तबाही को देख कर प्रसन्न थे। वे केवल यरूशलेम के विनाश पर ही प्रसन्न नहीं थे, उन्हें यरूशलेम पर आक्रमण में सहयोग भी किया।
- मिस्र देश को परमेश्वर ने विशेषतः दण्डित किया। यह मिस्र द्वारा परमेश्वर के लोगों को चार सौ वर्षों तक सताने के कारण था। मिस्र एक राष्ट्र तो रहा परन्तु पहले के समान एक शक्तिशाली राष्ट्र नहीं रहा। यहेजकेल 29:15 इतिहास ने इस बात को प्रमाणित किया कि भविष्यवाणी सत्य थी जैसे हम पाते हैं कि मिस्र को कई राष्ट्रों द्वारा जीता और शासन किया गया और आज भी यह एक शक्तिशाली और सम्पन्न राष्ट्र नहीं है। वास्तव में यह बहुत ही गरीब है और बुरा मुस्लिम शासन वहां पर है।

4. वापिस लौटने और फिर से बसाये जोन की भविष्यवाणीयां। यहेजकेल 33:1–48:35

- यरूशलेम और मन्दिर 538 ई. पू. में नाश कर दिये गये थे, और लोगों को भयंकर दण्ड दिया गया था। लोगों ने परमेश्वर द्वारा भेजे गये विभिन्न नबीयों की चेतावनियों को अस्वीकार कर दिया था। उन्होंने यह विश्वास किया कि वे परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं और परमेश्वर उन्हें कठोर दण्ड नही देगा। अध्याय 24:25–27 यहेजकेल द्वारा आने वाले न्याय की चेतावनी के संदेश का विवरण देता है। अब यहेजकेल यरूशलेम के गिराये जाने की बात पर तीन वर्षों तक खामोश हैं।

2. जब शहर गिरा तब लोगों ने यह महसूस किया कि यद्यपि वे परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं तब भी उन्हें परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी होना है, अन्यथा वे दण्डित किये जायेंगे, तब परमेश्वर ने फिर से बसाये जाने का उत्साही संदेश दिया। अध्याय 33–38

3. वहां पर कई पहरेदारों की चेतावनियों को सुन कर और पश्चाताप करने के द्वारा अध्याय 33 आज के समय में इसे इस प्रकार लागू किया जाना चाहिए। परमेश्वर के विश्वासयोग्य प्रचारकों और शिक्षा के द्वारा दी गई चेतावनियों को सुन कर और बाईबल की बातों को मान कर।

- झूठे प्रचारकों को हटा कर परमेश्वर के अच्छे चरवाहें (यीशु) का अनुसरण कर के जो अपनी भेड़ों को लेने के लिए आएगा। अध्याय 34 आज के समय में परमेश्वर के वचन का उपयोग ताकि झूठे प्रचारकों और शिक्षकों को पहचान कर उन्हें हआया जा सके। हमें केवल उनका अनुसरण करना चाहिए जो बाईबल में पाई जाने वाली सच्चाई को ही सीखाते हैं।
- पवित्र आत्मा की सामर्थ से भरने के द्वारा। अध्याय 37
- इस्राएल के शत्रुओं को उखाड़ फेंकने के द्वारा। अध्याय 38–39
- इस्राएल के अपनी भूमि पर पुनः बसाये जाने के द्वारा। अध्याय 48

5. मसीह और उसकी कलीसिया

आने वाले अच्छे चरवाहे यीशु के विषय भविष्यवाणियाँ

- परमेश्वर द्वारा स्वयं की पहचान एक अच्छे चरवाहे के तौर पर जो अपने लोगों को बचायेगा और प्रेम से उनकी देखभाल करेगा। यहेजकेल 34:11–16 हम कई आयतों को देखते हैं चरवाहे के लिए जो अपनी भेड़ों की आवश्यकताएं पूरी करेगा। यीशु ने स्वयं को अच्छा चरवाहा कहा। युहन्ना 10:11–16
- यहेजकेल नये मन्दिर का चित्र प्रस्तुत करता है। अध्याय 40 और 47 यह सत्य है कि यहूदियों द्वारा यरूशलेम वापिस लौटने पर पुनः मन्दिर का निर्माण किया गया, परन्तु यहेजकेल द्वारा वर्णित मन्दिर यहूदियों द्वारा बनाये गए मन्दिर से कहीं अधिक महान था।
- मसीह सच्चा और जीवित मन्दिर है। युहन्ना 2:19–22
- वह अपने लोगों को इकटठा करता है जैसे ''जीवित पत्थर'' ताकि एक ''आत्मिक घर'' का निर्माण कर सके। 1 पतरस 2:5
- मसीह ही है ''जिसमें सम्पूर्ण भवन है एक दूसरे से जुड़ा हुआ है, इकट्ठे बड़ता है, 'परमेश्वर में एक पवित्र मन्दिर में बड़ता है।'' इफिसियों 2:21

3. अध्याय 47 में जीवन की नदी का चित्रण है जो मन्दिर से बहती है। यह एक वास्तविक नदी नहीं है, लेकिन आत्मिक बातों की तस्वीर है। यह उस स्थन पर जीवन लाती है जहां पहले केवल मृत्यु थी। यह यीशु मसीह को दर्शाती है। युहन्ना 4:10

4. नयी वाचा

- परमेश्वर इस्राएलियों के साथ एक अनन्त वाचा बनाने जा रहा है, जब वे अपने देश वापिस लौट जायेंगे। यहेजकेल 37:26–28

- हम एक आत्मिक जागृति का चित्र देखते हैं जब परमेश्वर आत्मिक रीति से मृत लोगों में अपनी आत्मा भेजेगा। यहे 37:1–14
- परमेश्वर बताते हैं कैसे लोग बदल जायेंगे जैसे उन्हें नया साफ और मांस का हृदय दिया जाएगा। 36:25–27
- पीछ यरूशलेम में यिर्मयाह नबी भी यहेजकेल के समान ही संदेश दे रहा था। यिर्मयाह 31:33–34
- यह परमेश्वर द्वारा एक महत्वपूर्ण वाचा थी जहां वह जीवित आत्मा के विश्वासियों में निवास करने का वादा करता है। यह मसीह द्वारा क्रूस पर पूर्णार्य और उसकी महिमा के प्रकट होने के द्वारा होना था।
- नयी वाचा की प्राथमिक आशीषे हैं :
- नयी वाचा के लहू द्वारा पाप का पूर्ण रीति से हटाया जाना, यह वाचा अनन्त वाचा है। यहेजकेल 36:25, यिर्मयाह 31:34, लूका 22:20, इब्रानियों 13:20
- परमेश्वर की वाचा एक नये हृदय पर लिखी गई, एक मांस के हृदय पर जिसे पत्थर के हृदय से बदल दिया गया था। यहेजकेल 36:26, यिर्मचाह 31:33, 2 कुरि 3:3, 4:17
- परमेश्वर की पवित्र आत्मा सभी विश्वासियों में निवास स्थान बनाये। रोमियों 8:9, 1 कुरि 3:16

उपयोग

1. यहेजकेल सीखाता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार है। आदम और हव्वा प्रथम व्यक्ति साधारणतः एक दूसरे पर दोष मड़ते रहे, अपने पापों के लिए। बाईबल सिखाती है कि हमारे द्वारा किए गए पापों के लिए हमें व्यक्तिगत जिम्मेवारी लेनी चाहिए और किसी दूसरे को दोष नहीं देना चाहिए।

    - आदम ने अपने पाप के लिए हव्वा को दोषी ठहराने का प्रयत्न किया, और हव्वा ने अपने पाप के लिए सर्प को दोष देने का प्रयत्न किया। उतपति 3:12–13
    - यहेजकेल 18:4, 20 में व्यक्तिगत जिम्मेवारी के विचार को वर्णित किया गया है। आपके पाप के लिए कोई दूसरा जिम्मेदार नहीं है।

2. एक नया हृदय

    - इस्राएल के पाप और भ्रष्टाचार के कारण वे परमेश्वर द्वारा त्यागे गये। एज़0 36:16–20 इस्राएल ने परमेश्वर के प्रेम को पाने के लिए कुछ नहीं किया।
    - परमेश्वर द्वारा किया गया वायदा पूर्ण होता है क्योंकि परमेश्वर अपने नाम को बिगाड़ना नहीं चाहता, और इसलिए भी नहीं कि परमेश्वर के अनुग्रह को लोगों ने प्राप्त किया है। यहेजकेल 22:23
    - परमेश्वर लोगों को एक नया हृदय देने जा रहा है। यह हृदय पूरी रीति से परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता और प्रेम से भरा हुआ होगा। यहेजकेल 36:25–27 और 11:19–20
    - परमेश्वर की यह प्रतिज्ञा सुसमाचार में पूर्ण हुई। तीतुस 3:3–6

3. आत्मा से जन्म लेना। 29 अवसरों पर यहेजकेल परमेश्वर की आत्मा का हवाला देता है। देखें 2:2 और 3:12। यह यहेजकेल में देखते हैं कि पवित्र आत्मा ही लोगों में नया जन्म (आत्मिक जीवन) लाता है।

    - सूखी हड्डियों की घाटी की कहानी पवित्र आत्मा के अद्भुत कार्य को प्रकट करती हैं यहेजकेल 37:1–14 यह कहानी इस्राएल की आत्मिक मृत्यु को परमेश्वर के न्याय के अन्तर्गत दृष्टांत रूप में प्रकट करती है और उनका आत्मिक जन्म आत्मा के द्वारा होगा जब परमेश्वर उन्हें फिर से बसायेगा। यह दर्शन इस्राएली लोगों के बंधुवाई के दौरान उनके कष्टों को भी चित्रित करती है। यह आत्मिक जीवन की अनुपस्थिति में उनकी दुखमय दशा को दिखाती है।
    - हड्डियां बहुत अधिक सूखी हुई थीं जो यह प्रकट करती है कि परमेश्वर के न्याय के अन्तर्गत उनका दुख बहुत गहरा था। उनकी असली दुर्दशा परमेश्वर और उसके वचन के विरूद्ध विद्रोह, पाप के शासन और नैतिक पतन के कारण थी जिसमें वे डुबे हुए थे।
    - परमेश्वर ने यहेजकेल को 37:4–5 में प्रचार करने और प्रार्थना करने का आदेश दिया। उसे आत्मिक रीति से मृत लोगों के लिए प्रार्थना करनी है, युहन्ना 5:25 और परमेश्वर की आत्मा को पुकारना है ताकि पवित्र आत्मा की नवीनीकरण और फिर से उत्पन्न करने वाली सामर्थ प्रकट हो। तीतुस 3:5
    - दूसरे शब्दों में सूखी हड्डियों की घाटी की कहानी का उपयोग करते हुए यहेजकेल सिखाता है कि पवित्र आत्मा ही एक मसीह के नये जन्म को लाता है। नये नियम की आयतें यहीं दृष्टित करती है।
    - कलीसिया के अगुवे उनके स्वयं की रूचि और गैर जिम्मेदारी और लोगों की देखभाल नहीं करने के लिए दोषी ठहरते हैं। यहेहकेल 13:1–3 अगुवे लोग लोगों को सही अगुवाईपन देने में असफल रहे और चरवाहा न होने के कारण लोग तिरि बितर हो गये।

- अध्याय 34:4–5 – अफ्रीकी शिक्षाओं में एक लक्ष्य यह है कि पास्टरों को प्रशिक्षित किया जाए ताकि वे अपने लोगों के लिए अच्छे अगुवे बन सके।
- हम यहेजकेल में देखते हैं कि अगुवे लोग परमेश्वर के विषय में सही और स्पष्ट चेतावनी सभी पापियों को देने के लिए जिम्मेदार थे। उन्हें लोगों को ख्याल रखना चाहिए था। विशेषकर बीमार, विधवाओं और अनाथों का, ठीक उसी प्रकार जैसे वे अपनी भेड़ों का ध्यान रखेंगे।
- यीशु मसीह की कलीसिया में भी अगुवाई उसी प्रकार महत्वपूर्ण है। अगुवों को सुसमाचार का प्रचार करना है और लोगों का प्रेमपूर्वक ध्यान रखा जाना चाहिए। प्रेरितों के काम 20:28, कुलु. 4:17, 1 तिमु. 4:16, 1 पतरस 5:2–4, याकूब 3:11, कलीसिया के अगुवों को दी गई चेतावनी के विषय में सोचें।
- एक चरवाहे का कार्य प्रभावी रीति से तब तक नहीं किया जा सकता जब तक एक चरवाहे का हृदय न हो। आप एक पासवान या अगुवा होने के लिए निश्चय ही परमेश्वर द्वारा बुलाहट पाये हुए देना चाहिए।

निष्कर्ष

- परमेश्वर ने यहेजकेल को लोगों को यह सुनिश्चित करने का कार्य दिया कि उनकी बंधुवाई लम्बी और कठोर होगी। उसके संदेश का प्रथम भाग न्याय के विषय में है। उदासी की यह टिप्पणी महान आशावाद में परिवर्तित की गई। यह संदेश उनके घरों के पुनः बसाये जाने और परमेश्वर का अनुग्रह पाये जाने में बदल गया जब लोगों ने पश्चाताप किया।
- आम तौर पर नया नियम में यहेजकेल को उल्लेखित किया गया है, वहां पर 69 प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष उद्धारण है और उनमें से 48 प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में है। वहां पर स्पष्ट दृष्टिकोण है कि अन्त के समय में इस्राएल पुनः किया जाएगा।
- यहेजकेल परमेश्वर के लौटने और अपने लोगों के साथ रहने के विषय में बात करता है। 48:35
- बाईबल बताती है कि जब परमेश्वर ने लोगों को त्याग दिया तो वहां बड़ी दुर्दशा और पीड़ा थी। होशे 9:12
- यह परमेश्वर की उपस्थिति है जो स्वर्ग को शानदार स्थान बनाती है। परमेश्वर की उपस्थिति कलीसिया और हमारे जीवन को अद्‌भुत बनाती है।
- परमेश्वर की उपस्थिति के कारण स्वर्ग की अद्‌भुत तस्वीर को देखें। प्रकाशित वाक्य 7:15–17

दानिएल

1. दानिएल बड़े नबीयों में अंतिम है और उसने यहेजकेल और यिर्मयाह के समय में ही सेवा की। वह यरूशलेम के जीते ओर विनाश किये जाने के समय जीवन व्यतीत किया। वह एक छोटा बालक ही था जब से बाबुल ले जाया गया जहां उसने अपना पूर्ण जीवन बंधुवाई में बिताया। संभवतः दानिएल उच्च श्रेणी से और शिक्षित था जैसे हम देखते हैं कि वे जो बाबुल बंधुवाई में ले जाये गये उनमें से वह चुना गया कि वह शाही दरबार में अपनी सेवा दे सके।
2. दानिएल अपने जीवन भर बंधुवाई के काल में जीया और उसने यरूशलेम लौटने वाले यहूदियों को देखा यद्यपि वह उन लोगों के साथ नहीं गया। वह एक असाधारण व्यक्ति था और उसने एक दोष रहित जीवन जीया। वह युसूफ के समान किसी गंभीर पाप में नहीं पड़ा। दानिएल और उसके तीन साथियों ने यह दिखाया कि शत्रु राष्ट्र में रहते हुए भी परमेश्वर के प्रति विश्वासयोगय रहना संभव है। हम बाईबल में पढ़ते हैं कि बहुत से लोग हैं जिन्होंने परमेश्वर की सेवा की वे भी किसी न किसी समय पर गंभीर समस्याओं में पड़े। अब्राहम, नूह, दाऊद और मूसा के जीवनों को देखें।
3. किसी प्रकार दूसरे देश में रहते हुए दानिएल एक अच्छी गवाही रख पाया? वह अपने परमेश्वर को जानने और उसकी सलाह को निरन्तर जानने के द्वारा ही ऐसा कर सका। उसने व्याख्या करने से पहले प्रार्थना की और अध्याय नौ में एक लम्बी प्रार्थना को हम पाते हैं जिसका हमें अध्ययन करना चाहिए ताकि हम सही रीति से प्रार्थना करना सीख सकें
4. कुछ बहुत ही सरलता से समझ आने वाली उत्तम कहानियां जो बाईबल की हैं वे दानिएल में पाई जाती हैं। उदाहरण के लिए, पूरे संसार में बच्चे दानिएल को सिंह की गुफा में फेंके जाने की कहानी को जानते हैं। दानिएल में कठिनाई से समझी जाने वाली भविष्यवाणियां भी हैं। दानिएल स्वयं हर बार अपनी भविष्यवाणियों को नही समझ पाया, और कुछ को हम अभी भी पूरी तरह से नहीं समझ पाते हैं।

सामान्य परिचय

अध्याय 1:1–21

1. यह राजा नबूकदनेस्सर का व्यवहार था कि अपने बंधुवे लोगों पर शासन करने के लिए उनमें से ही कुछ को शाही महल में रखकर उन्हें प्रशासन का प्रशिक्षण दे सके।
2. दानिएल और उसके तीन साथियों को महल में रखा गया जहां उन्हें बाबुल के महल के तरीकों को सिखाया गया। बाबुलवासी इन छोटे यहूदी लड़कों को बाबुल के मूर्तिपूजकों के समान बदलना चाहते थे। सबसे पहला परिवर्तन जो इनल ड़कों के साथ किया गया वह था उनका नाम परिवर्तन किया जाना।
3. दानिएल 1:6–7 इन लड़कों में दानिएल हनन्याह, मिशाएल और अर्जयाह थे, जो यहूदी गोत्र से थे। खोजों के प्रधान ने उनके नाम इस प्रकार बदले : दानिएल को बेलेसर, हनन्याह को शद्रक, मिशाएल को मेशक और अर्जयाह को ओबेदनग्गो कहा गया।
4. बाबुलवासी इस बात को सुनिश्चित करना चाहते थे कि 14 वर्ष के बालक पूरी रीति से बाबुलवासी बन जाए जो उनके देवी देवताओं की आराधना करता हो। उनके वास्तविक नाम उनके सच्चे परमेश्वर की महिमा करते थे, किन्तु उनके नये नाम मूर्तिपूजक देवताओं की महिमा करते थे।
5. दानिएल और उसके साथी अक्सर साहसिक कदम उठाने के लिए मजबूर किये गये ताकि वे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोगय रहें। पहली परीक्षा भोजन की थी जो उन्हें खाने के लिए दिया गया था। दानिएल परमश्वेर द्वारा खाने संबंधी दिए गये नियम का पालनप करने का निश्चय किया। इसलिए उसने केवल वहीं भोजन दिये जाने का अनुरोध किया जो परमेश्वर द्वारा स्वीकृत था। दानिएल ने अशुद्ध भोजन नहीं दिये जाने का अनुरोध किया। दानिएल 1:6–16
6. दानिएल ने सम्मानपूर्वक अपने निवेदन को उन पर ध्यान रखने वाले से कहा कि उन्हें दस दिनों तक वही भोजन जिसे परमेश्वर ने स्वीकृति दी है देकर उन्हें परखा जाए। परमेश्वर ने दानिएल और उसके साथियों के लिए यह सुनिश्चित किया कि दस दिनों के पश्चात् वे दूसरे विद्यार्थियों से अधिक हृष्ट पुष्ट रहे।
7. यह तीन वर्षीय प्रशिक्षण की शुरूआत थी। तीन वर्षों के पश्चात उनका प्रशिक्षण समाप्त हुआ और चारों मित्रों को राजा ने परखा। दानिएल 1:19–20 चारों मित्र पहले के सभी प्रशिक्षित और उनके सह प्रशिक्षुओं से उत्तम पाये गये।
8. उन्हें उच्च पदों पर नियुक्ति दी गई और सत्तर वर्षों के पश्चात् भी दानिएल कार्यस्थल पर था। बाबुल को दूसरे राजाओं द्वारा जीते जाने पर भी वह अधिकारी था। दानिएल 1:21
9. ये लोग बहुत सफल रहे क्योंकि इन्होने सबसे पहले परमेश्वर सम्मान दिया और उस परपूर्ण भरोसा किया। 1 शमुएल 2:30 हमें बताती है कि जिन्होंने परमेश्वर का सम्मान किया परमेश्वर ने उन्हें भी सम्मानित किया।

दानिएल के जीवन में विशिष्ट घटनाएं अध्याय 2:1–6:28

अध्याय 2

1. हमें दानिएल और उसके मित्रों के जीवन की खतरनाक घटनाओं के विषय में बताती है। राजा नबूकदनेस्सर ने एक स्वप्न देखा जिससे वह भयभीत हो उठा और वह इसका अर्थ जानना चाहता था। उसके ज्ञानी पुरूष उसे इसका अर्थ नहीं बता सके तो राजा ने उन्हें मृत्युदण्ड देने का भय दिखाय। दानिएल ने हस्तक्षेप किया और वह और उसके मित्रों ने परमेश्वर से प्रार्थना की और परमेश्वर ने दानिएल को उस स्वप्न का अर्थ बताया।
2. दानिएल 2:28–30 में उसमें स्वप्न के अर्थ को बताने का श्रेय परमेश्वर को दिया और उसने यह सुनिश्चित किया कि उसका श्रेय किसी ओर को न मिले। परमेश्वर ही है जो एक बाईबल शिक्षक या प्रचारक को अच्छा होने में मदद करता हैं यह परमेश्वर की सामर्थ ही है जो लोगों को चंगा करती है न कि हमारी सामर्थ। हमें स्वयं को दीन करना चाहिए और इस बात का अंगीकार करना चाहिए कि हम प्रत्येक चीज परमेश्वर की सामर्थ द्वारा कर पाते हैं न कि स्वयं की सामर्थ द्वारा।
3. स्वप्न ने पृथ्वी पर आने वाले राज्यों की ओर इशारा किया। प्रथम चारों राज्य सत्ता में आये और चले गये। रोमन साम्राज्य इनमें से अंतिम राज्य था।
4. अंतिम राज्य, पत्थर 2:44–45 में यीशु मसीह का अनन्त राजय हैं यह एक सामर्थी बाईबल प्रतिबिम्ब है। देखें भजन संहिता 118:22 पत्थर के इस प्रतिबिम्ब को प्रयम बार देखें। पतरि स्थिरता को दर्शाता हैं
5. राजा नबूकदनेस्सर प्रभावित हुआ और उसने दानिएल को ऊँचे सामर्थी पद पर आसीन किया। आयत–47 में राजा ने यह भी स्वीकारा की दानिएल का परमेश्वर प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है। यद्यपि जेसे अभी भी बहुत से लोग अनन्त न्याय में जी रहे हैं नबूकदनेस्सर ने अपना हृदय परिवर्तन नहीं किया। वह अभी भी हृदय से मूर्तिपूजक है और उसने झूठे देवताओं को नहीं त्यागा और नहीं सच्चे परमेश्वर की ओर लौटा। केवल परमेश्वर को जानना काफी नहीं है हमें निश्चय ही उद्धार पाने के लिए दूसरे देवताओं को त्यागकर सम्पूर्ण विश्वास यीशु मसीह पर और केवल उसी पर रखना चाहिए।

अध्याय 3

1. अध्याय 3 की कहानी में हम पाते हैं कि नबूकदनेस्सर अभी भी एक मूर्तिपूजक है। राजा ने एक विशाल मूर्ति की स्थापना की और यह आज्ञा दी कि सभी उसकी आराधना करें। दानिएल के तीनो साथियों ने ऐसा करने से इंकार किया इस कारण उनको एक धधकते हुए भट्ठे में फेंक दिया गया, जहां उन्हें जल कर मर जाना चाहिए था। परमेश्वर ने उनके जीवनों को बचाया और जब राजा ने देखा तो उसने पाया कि अग्नि के मध्य में चौथा व्यक्ति भी हैं (आयत 25) यह प्रभु यीशु मसीह था जो अपने लोगों की परीक्षा के समय उनके साथ था। यशायाह 43:2 हमें बताता है कि हमारा परमेश्वर हमारी परीक्षा के समय हमारे साथ है।
2. एक बार फिर नबूकदनेस्सर परमेश्वर से प्रभावित हुआ, लेकिन वह घमण्डी और अहंकारी मूर्तिपूजक रहा।

अध्याय 4

1. अध्याय 4 में हम एक और दर्शन पाते हैं। और केवल दानिएल ही उसका अनुवाद कर सकता है। नबूकदनेस्सर एक सामर्थी पुरूष था इस पृथ्वी पर और अपनी उपलब्धियों पर उसे बहुत घमण्ड था। परमेश्वर ने उसे एक सबक सिखाने का निर्णय लिया।
2. परमेश्वर ने उसे यह सोचने दिया कि वह एक गाय है और वह एक गाय के समान सात वर्षों तक रहा। यह वास्तव में एक बीमारी है जहां लोग सोचते हैं कि वह पशु है और एक पशु के समान रहते हैं।
3. हमारे लिए यह शिक्षा है कि नबूकदनेस्सर बहुत ही घमण्डी व्यक्ति था और अपनी सभी उपलब्धियों का श्रेय वह स्वयं को देता था। परमेश्वर ने उसे सबक सिखाने के लिए दीन होने के लिए सात वर्षों तक एक पशु के समान रहने दिया।
4. इस व्यवहार ने कार्य किया क्योंकि 4:33–37 में यह विवरण है कि सात वर्षों के पश्चात् नबूकदनेस्सर ने पुनः अपनी चेतना को पाया और अपनी उपलब्धियों के लिए परमेश्वर को श्रेय दिया। कई अवसरों पर परमेश्वर एक व्यक्ति को दीन करते हैं ताकि वह उस व्यक्ति को बचा सके।
5. बीस वर्षों के पश्चात हम अध्याय 5 में बाबुल के अंतिम शासक बेलतस्सर के शासन काल में आते हैं। मदिरा पान के समय दीवार पर लेखनी प्रकट हुई ओर फिर से दानिएल को अनुवाद के लिए बुलाया गया। उसने भविष्यवाणी की कि बेलतस्सर का राज्य तत्काल समाप्त होने वाला हैं ठीक उसी रात मादी फारसी सेना ने बाबुल को जीत लिया।
6. अध्याय 6 में बहुचर्चित कहानी है जो दानिएल को सिंह की गुफा में डालने की हैं मादी फारसी साम्राज्य का राजा द्वारा उस समय शासक था। कहानी पढ़ने में सरल है इसलिए हम केवल कुछ टिप्पणियां कहेंगे। यहां पर एस्तेर की कहानी के साथ समानता है। दोनों ही व्यक्ति शासकों के चहेते थे और दोनों के शत्रु थे जो उन्हें नाश कर देना चाहते थे। मादी फारसीयों का नियम था कि एक बार राजा ने जो नियम ठहराया तो उसे बदला नहीं जा सकता था। दोनों ही दशाओं में राजा ने एक नियम बनाया और बाद में पछतावा किया क्योंकि वह यह नहीं जानता था कि यह नियम उनके प्रिय जन के प्राण ले लेगा। एस्तेर और दानिएल दोनों ने ही परमेश्वर पर भरोसा रखा और उसके प्रति विश्वास योग्य रहे। दोनों ही कहानियों में परमेश्वर ने अपने विश्वासयोगय सेवकों की रक्षा की और उनके शत्रुओं का विनाश किया। हमें भी छुटकारे के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए, यदि वह हमें शारीरिक मृत्यु से नहीं बचाता है तो निश्चय ही आत्मिक मृत्यु से बचाएगा।
7. इसके परिणामस्वरूप दानिएल राजा का चहेता बन गया और उसे ऐसे पद पर रखा गया जहां वह इस्राएलियों की मदद कर सके।
8. दानिएल की शेष पुस्तक विभिन्न भविष्यवाणियों के विषय में है जो राष्ट्रों पर परमेश्वर के नियंत्रण की स्पष्टता का वग्रन करता है।
9. दानिएल के अंतिम 6 अध्याय वृहत रूप से रहस्य प्रकट करते हैं। यह भविष्यवाणीयां भविष्य और अन्त समय के विषय में है। इस प्रकार रहस्योदघाटिक रचनाएं बाईबल की अन्य पुस्तकों जैसे यशायाह, योएल, जकर्याह, दानिएल और प्रकाशितवाक्य में भी पाई जाती है। इस प्रकार का लेखन पूर्ण रीति से चिन्हों, स्वप्नों और दर्शनों से भरपूर है जो इसे समझने के लिए और अधिक कठिन बनाती है।
10. अध्याय 7 चार राष्ट्रों के दर्शन के साथ प्रारम्भ होता है। यहां पर अध्याय 2 के साथ समानता है। जैसे इन राष्ट्रों को प्रस्तुत किया गया, प्रत्येक अन्य से शक्तिशाली और भयीीत करने वाला था।
11. इस बिंदु पर न्याय प्रकट हुआ। स्वर्ग में सिंहासन को स्थापित किया गया और प्राचीन दिनों ने अपना स्थान ग्रहण किया और पशुओं का न्याय किया गया। यह सभी राज्य समाप्त हो गये और अन्तिम राज्य रोमन साम्राज्य रह गया।
12. दानिएल 7:8 एक छोटे सींग का परिचय करवाता है अधिकतर लोग इसे ख्रिस्त विरोधी सोचते हैं, नियमविहिन एक व्यक्ति जिस का उल्लेख 2 थिस्सलुनिकियों 2 में हैं
13. इस भाग को अनुवाद करने को लेकर कई असहमतियां हैं, परन्तु कुछ बातों को सरलता से समझा जा सकता है। दानिएल ने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाई और वहां उसने सिंहासनों को सिलसिलेवार ढंग से देखा जिन्होंने रोम का अनुसारण किया और अन्त के समय तक जारी रहा।
14. जैसे 9–10 आयतों में दानिएल उपर की ओर देखता है, उसने अनन्त प्रतापी महाराजा को उसी महिमा में देखा। उसने एक महान परमेश्वर को देखा जो उसके विरोधियों को परास्त करने के योग्य है। परमेश्वर न्याय को नियंत्रित करता है।

15. अब आयत 13 में हम दर्शन की बारम्बारता को देखते हैं। हम यीशु को एक मनुष्य के रूप में देखते हैं। इन्हें इस प्रकार शब्दों में कहा गया क्योंकि यह यीशु के पृथ्वी पर मनुष्य के समान जन्म लेने की घटना है। आयत 14 में हम देखते ळैं कि यीशु को अनन्त राज्य के उपर सामर्थ दी गई।
16. 24–27 आयतों में हम देखते हैं कि छोटा सींग या ख्रिस्त विरोधी जो सभी राज्यों के पश्चात् आया और पृथ्वी पर शासक बन गया।
17. सम्पूर्ण इतिहास उस समय की ओर जा रहा जब छोटा सींग प्रकट होगा एक प्रमुख ताकत के तौर पर और जबवह मसीहियों को सताएगा।
18. वह घमण्ड के साथ राज्यकरेगा जब तक आयत 26 में कहे वचन अनुसार स्वर्ग का दरबार उसे सत्ता से हआ न दे, और मसीही बुराई पर विजय प्राप्त करेंगे। आयत 28 हमें बताती है कि कैसे दानिएल उस बात से जो उसने देखा था उससे परेशान हो गया और उसने वह बात स्वयं तक रखी।
19. अध्याय 7 में दर्शन संसार के भविष्य का एक चित्र है। बुराई कुछ समय के विजय होगी और इतनी मजबूत होगी किवह परमेश्वर को चुनौती देती प्रतीत होगी। मसीही सताये जायेंगे और कलीसिया भूमिगत हो जाएगी। ख्रिस्तविरोधी की शक्ति के चरम पर परमेश्वर बुराई पर पूर्ण विजय के लिए पुनः लौटेंगे।
20. अध्याय 8 में हमारे पास एक नया दर्शन है। आयत 2 में हम पाते हैं कि दानिएल आत्मा में उठा लिया गया और उसे फारसी साम्राज्य में ले जाया गया। दर्शन उन राष्ट्रों के विषय में विवरण देता है जो दानिएल के लिए भविष्य था और हमारे लिए भूतकाल।
    a. दानिएल 8:9 में जबकि दानिएल चार सींगों को देख रहा है वह अपना ध्यान छोटे सींग पर केन्द्रित करता है। यह छोटा सींग एक शासक की ताकत के उदाय को बताता है जो यहूदियों पर पुराना नियम और नया नियम के दौरान 400 वर्षों के काल में शसन करेगा। आयत 10–12 उस भयावह समय को बताती है जब शासक यहूदियों को सताएगा। संभवतः यह शासक यहूदी ही होगा जो यहूदियों को उनके परमश्वेर के लिए बलिदान और उसकी आराधना करने की आज्ञा नहीं देगा। उनके शासक अन्तीयोक एपीफानस नामक व्यक्ति थे। मंदिर में झूठे देवताओं की आराधना भी करवाई। यह यहूदियों के लिए भयानक समय था।
    b. 13–14 आयतों में दानिएल को कहा गया कि इस भयानक सताव का काल छः वर्षों और चार महिनों तक रहेगा और तब मन्दिर को साफ किया जाएगा और यहूदी लोग फिर से परमश्वेर की सही रीति से आराधना कर सकेंगे। यह ऐसा ही हुआ था।
    c. यहूदियों के लिए इन सब बातों का अर्थ क्या है? आयत 16 में हम देखते हैं कि एक आवाज ने एक दूत को आदेश दिया कि वह दानिएल को उसका अर्थ समझा सके। यह वाणी निःसंदेह यीशु की है क्योंकि केवल परमेश्वर ही दूतों को आदेश दे सकते हैं।
    d. यह भविष्यणवाणी यहूदियां के लिए सांत्वना का स्रोत थी। क्योंकि आयत 25 कहती है कि सताव का अन्त होगा। उन्हें फिर से आश्वस्त किया गया कि उचित समय पर परमेश्वर उनके सतानेवाले को हटा देगा।
21. अध्याय 9:1–2 हम देखते हैं कि दानिएल वचन को पढ़ रहा था और उसने वादे को पढ़ा कि सत्तर वर्षों के पश्चात यरूशलेम का कष्ट समाप्त हो जाएगा और लोग फिर से बसाये जायेंगे। वे फिर से यरूशलेम लौटेंगे। ध्यान दें कि दानिएल इस समय 84 वर्ष का बुजुर्ग है और वह अीाी भी बाईबल पढ़ने के द्वारा सीखता है।
    a. दानिएल ने इसकी प्रतिक्रिया प्रार्थना के रूप में की और हम 3–19 आयतों में देखते हैं कि एक उत्तम उदाहरण की हमें किस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए। आईए हम 6 शिक्षाओं को देखें :
    b. दानिएल अपनी प्रार्थना के प्रति गंभीर था।
    c. इस प्रार्थना के विषय में दूसरी बात हम आयत 3 में देखते हैं। दानिएल परमश्वेर के बहुत करीब था, परन्तु फिर भी दानिएल परमेश्वर के प्रति आदर भाव से उसके सम्मुख उपस्थित हुआ।
    d. उसकी प्रार्थना अधिकांशतः उसके और लोगों के पापों का अंगीकार थी और उनके पापों के कारण ही परमेश्वर ने उन्हें उचित दण्ड दिया था। उसने आयत 11 और 14 में इस बात का जिक्र किया कि परमेश्वन ने मूसा द्वारा इस बात का वादा किया कि अनाज्ञाकारिता के कारण वे दण्डित किए जाएंगे।
    e. दानिएल परमश्वेर के पास उसके अनुग्रह पर भरोसा करते हुए आया। हम इसे आयत 4 में देखते हैं।
    f. वह परमेश्वर के पास स्पष्ट निवेदन के साथ आया। दूसरे शब्दों में उसने परमेश्वर से वही कहा जिसकी उसे चाहत थी।
    g. दानिएल ने गुप्त में प्रार्थना की।
    h. यह प्रार्थना एक बड़े प्रकाशन को लेकर आती है जिसे हम 20–27 आयतों में पढ़ते हैं। हम पढ़ते हैं कि जब वह प्रार्थना कर ही रहा था तो उसकी प्रार्थना स्वर्ग में सुनी गई और गब्रिएल उसकी प्रार्थना का प्रत्युत्तर देने आया। वहां पर गब्रिएल की भविष्यवाणी के अर्थ की विभिन्न समझ है। यहां एक अनुवाद है :
    i. आयत 25 एज्रा और नहेम्याह के समय यरूशलेम के पुनः बनाये जाने के विषय में है।
    j. हम आयत 25 में मसीह की भविष्यवाणी भी पाते हैं।

22. अध्याय 10–12 एक भाग है जो दीर्घ और जटिल दर्शन है।
    a. अध्याय 10 में हम देखते हैं कि दानिएल अपने लोगों पर आने वाले संकट के कारण विलाप करता है।
    b. हम यह भी देखते हैं कि वहां आत्मिक युद्ध चल रहा है। सम्पूर्ण बाईबल में हम पाते हैं कि आत्मिक दुनिया की छोटी सी झलक दी गई है जहां पर अच्छी ताकतें हैं और बुरी ताकतें हैं जो परमेश्वर का विरोध करती है। शैतान परमेश्वर के विरूद्ध लड़ने वालों का अगुवा है।
    c. अध्याय 11 और अध्याय 12 की प्रथम चार आयतें उस दर्शन के विषय में बताती हैं जिसके तीन भाग हैं। इस भविष्यवाणी के कई नजरिये हैं और मैं रूढ़ीवादी नजरिया प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह दर्शन दानिएल के समय से यूनानीयों द्वारा इस्राएल पर पुराना नियम और नया नियम के मध्य काल के दौरान शासन के इतिहास को प्रकट करता है। तब दर्शन आगे अन्त समय की ओर छलांग लगाता है जो कि बड़े सताहट का समय होगा।
    d. प्रथम हिस्सा 1–9 आयतों में पाया जाता है। दानिएल इस्राएल के लिए भविष्य की बातों को प्रकट कर रहा था, परन्तु हमारे लिए यह घटनाएं इतिहास हैं। इनमें से अधिकतर घटनाएं इतिहास के उस दौरान का काल है जो पुराना नियम और नया नियम के मध्य का काल है। इतिहास का एक अध्ययन प्रकट करता है कि दानिएल की यह भविष्यवाणीयां एकदम सही थी।
    e. भविष्यवाणी का दूसरा हिस्सा 20–35 आयतों में पाया जाता है। यह एक बहुत ही दुष्ट शासक एन्तीयोंक ऐपीफानस नामक व्यक्ति के विषय में है जिसने पुराना नियम और नया नियम के समय शासन किया। अध्याय 8 में ''अन्य सींग'' के तौर पर उसका उल्लेख किया गया है। उसने मन्दिर में मूर्तिपूजा करवाई। इतिहास इस शासक के विषय में अधिक जानकारी देती है और दानिएल की भविष्यवाणी की पुष्टि करती है।
    f. भविष्यवाणी का अंतिक हिस्सा दानिएल 11:36–12:4 में पाया जाता है। इस भविष्यवाणी के अर्थ में बहुत असहमतियां हैं। क्या यह यथार्थ है या सांकेतिक है? क्या यह इतिहास है या यह घटनाएं हमारे लिए आज भविष्य हैं? मैं विश्वास करता हूं कि यह भविष्य है क्योंकि जब हम इतिहास का अध्ययन करते हैं तो हम इनमें से किसी भी घटना को नहीं पहचान पाते हैं और आयत 40 अन्त के समय के युद्ध को बताती है। यह यीशु के फिर आने पर होगी और हम अंतिम लड़ाई में होंगे जहां शैतान पूर्ण रीति से परास्त होगा औरयीशु अपनी विजय को पूर्ण करेगा।
23. अध्याय 12:5–14 दानिएल की पुस्तक का समापन है। प्रश्न पूछे गये परन्तु उत्तर नहीं दिये गये। हम देखते हैं कि वहां कई बातें हैं जो दानिएल नहीं समझ पाया और नहीं हम। सही समय और सटीक तरीके चीजों को पूर्ण होने के विषय में अन्त के दिन हमारे लिए एक रहस्य है।
24. अध्याय 12 से शिक्षाएं
    a. आयत 4 का अंतिम हिस्सा इस विषय में बताता है कि कैसे लोग अधिक सीखेंगे परन्तु उनमें समझ की कमी होगी। हमारी आज की दुनिया ने ज्ञान में विशाल बढ़ोत्तरी को देखा है जैसे विज्ञान परन्तु ज्ञान की कमी है। यह बुद्धिमान लोग परमेश्वर को नकारते हैं। नीतिवचन 9:10 हमें बताती है कि बुद्धि परमेश्वर की ओर से प्राप्त होती है।
    b. हम इस दर्शन में देखते हैं कि दुष्टता बढ़ती जाएगी। दानिएल 12:7 और 10:11। हम देखते हैं कि आज हमारे समाज में दुष्टता बढ़ गई है।
    c. अन्तिम बात जो हम देखते हैं कि धार्मिकता का मार्ग।
    d. अध्याय 12 में परमेश्वर के लोगों को उत्साहित किया गया है कि बुराई के मध्य भी विजय को पायें। हम इसे विश्वास के द्वारा करते हैं जिसे हम आयत 9 में देखते हैं क्योंकि परमेश्वर ने हर एक बात हमारे सम्मुख प्रकट नहीं की है। हमें सब बातों में उस पर भरोसा रखना चाहिए, उन चीजों में भी जिन्हें हम नहीं समझते हैं।
    e. हम आयत 10 में देखते हैं कि सताव समाप्त होने जा रहा है, अंतिम भयानक सताव के समय, धर्मी व्यक्ति समझेंगे परन्तु दुष्ट व्यक्ति नहीं। कोई भी आयत 11 को नहीं समझ सकता परन्तु आयत 12 हमें बताती है कि धर्मीयों को सही समय पर समझ दी जाएगी और हम प्रसन्न होंगे कि हमने परमेश्वर पर भरोसा किया और विश्वासयोग्य थे। आयत 13 हमें बताती है कि विश्वासयोग्य अन्त में पुरस्कार प्राप्त करेंगे।
25. छोटे नबीयों का अवलोकन

बाईबल में बारह पुस्तकें हैं जिन्हें हमे छोटे नबीयों की पुस्तकें कहते हैं। समय की कमी के कारण हम इनमें से कुछ को देखेंगे। बड़े नबीयों की पुस्तकों के समान ही इन पुस्तकों को कलीसिया में नहीं सिखाते हैं। कारण यह है कि इसे समझ पाना सरल नहीं है। दूसरा कारण यह है कि संदेश बहुधा न्याय के विषय में है जिसे कई लोग याद नहीं करना चाहते हैं। यह काफी बुराई क्योंकि इन पुस्तकों में बहुत ही अच्छी शिक्षाएं हैं।

होशे

1. छोटे नबीयों की पुस्तकों में यह प्रथम पुस्तक है। यह बारह पुस्तकें हमारी बाईबल में पुराना नियम के अन्त में है। एक सही तरीका यह है कि इन पुस्तकों को समझने के लिए इतिहास की पुस्तकों का अध्ययन किया जाए जो कि नबीयों के समय के साथ की घटनाएं है। होशे उत्तरी राज्य को नबी था और 2 राजा 14:17 के समय था। यह उत्तरी राज्य के बिल्कुल अन्त के समय था जब आशूरीयों ने इस्राएल के राज्य को जीत कर उसका अन्त कर दिया।
2. होशे का संदेश एक कठिन संदेश है। परमेश्वर अपने लोगों से क्रोधित है क्योंकि उन्होंने उसे त्याग दिया और वे झूठे देवी देवताओं की आराधना करने लगे। परमेश्वर ने होशे को एक वेश्या से विवाह करने की आज्ञा दी और इससे परमेश्वर ने यह प्रदर्शित किया कि इस्राएल ने क्या किया है परमेश्वर के साथ। इस्राएल ने वेश्या के समान परमेश्वर को छोड़ दिया जिसने उसे प्रेम किया और उसकी सभी आवश्यकताएं पूर्ण की ।हम यह गोभर द्वारा होशे के साथ किये गए व्यवहार में देख सकते हैं।
3. होशे के लिए जीवन कठिन था। उसने एक ऐसी स्त्री से विवाह किया जिससे उसने प्रेम किया और उसकी हर आवश्यकताओं को पूरा किया। वह इस स्त्री द्वारा धोखा दिया गया ठीक उसी प्रकार जैसे परमेश्वर के लोगों ने उसे धोखा दिया। उसने इस्राएल के लोगों से प्रेम किया और उसका संदेश उनके प्रति कठोर था। लोगों को परमेश्वर के क्रोध से बचने के लिए पश्चाताप की आवश्यकता था परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया।
4. पुस्तक का प्रथम भाग, होशे का विवाह परमेश्वर के इस्राएल के साथ सम्बंध का प्रतीक है। अध्याय 173
5. होशे के प्रति गोमर की अविश्वास योग्यता की कहानी इस्राएल की परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्यता की समानता को दिखाती है। परमेश्वर ने इस्राएल से प्रेम किया और उसकी आवश्यकताओं को पूरा किया ठीक उसी प्रकार जैसे होश ने गोमर के लिए किया। इस्राएल ने झूठे देवताओं के मध्य वेश्वावृति की ठीक उसी प्रकार जैसे गोमर दुसरे पुरूषों के साथ वेश्यावृति करती थी। फिर भी होशे ने अपनी पत्नी को दासता से मूल्य देकर छुड़ाया वैसे ही परमेश्वर ने अपने लोगों को उसकी समस्याओं से बचाया।
6. इस्राएल के विरूद्ध न्याय की घोषणा की गई। पुस्तक का यह भाग अध्याय 1–3 होशे द्वारा इस्राएल के पापों और आने वाले दण्ड की चालीस वर्षों के शिक्षा का सारांश समान प्रतीत होता है। लोगों को परमेश्वर की ओर लौटने के लिए आमंत्रित किया गया जिसे उन्होंने स्वीकार नहीं किया।
7. अध्याय 11:12– 13:16 कुछ प्रकार से पुराने भाग की पुनरावृति हो। होशे ने यह प्रकट किया कि उनका दण्ड उनके लिए सही है क्योंकि उनका परमेश्वर के विरूद्ध होने का एक लम्बा इतिहास है। परमेश्वर के अथक प्रयत्न करने के पश्चात भी इस्राएल लगातार पाप में लिप्त रही। परमेश्वर को लोगों को दण्डित करना है, परन्तु अपने क्रोध में परमेश्वर ने सभी लोगों को नाश नहीं किया।
8. अन्त में इस्राएल का पुनः स्थापित किया जाना। अध्याय 14 लोगों के पुनः स्थापित होने और फिर से भविष्य में मूर्ति की उपासना नहीं करने की घोषणा द्वारा परमेश्वर का अनुग्रह प्रकट होता है। उनके हृदय बदल जायेंगे। यहां पर मसीह और उसकी कलीसिया की तुलना है।
9. जैसे होशे ने गोमर से विवाह किय, उसी प्रकार परमेश्वर इस्राएल का पति बना। याद रखें कि कलीसिया मसीह की पत्नी है।
10. जैसे गोमर होशे के प्रति अविश्वासयोग्य थी ठीक वैसे ही इस्राएल परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य बन गयी। मसीह की अधिकतर कलीसिया उसके प्रति अविश्वासयोग्य हैं
11. जिस प्रकार गोमर अपने प्रेमियों के प्रति गुलाम हो चुकी थी इसी प्रकार इस्राएल उन राष्ट्रों के प्रति गुलाम हो गई थी, जिस पर उसने भरोसा रखा था।
12. जिस प्रकार होशे ने गोमर को फिर से अपनाया उसी प्रकार परमेश्वर इस्राएल के बचे हुए लोगों को फिर से स्थापित करेगा।
13. जिस प्रकार होशे ने गोमर को चांदी और ज्वार देकर छुड़ाया वैसे ही मसीह सच्चे इस्राएल (उसकी कलीसिया) को स्वयं के लहू का दाम देकर छुड़ाएगा।

भविष्यवाणियाँ

1. मिस्र से बाहर बुलाया जाना, अध्याय 11:1 जब इस्राएल एक बच्चा था, तो मैंने उससे प्रेम किया, और मिस्र से बाहर मेरे पुत्र को बुलाया।
2. मिस्र आत्मिक गुलामी को दर्शाता है। यीशु ने अपने लोगों को इस गुलामी से बचाया और यीशु मिस्र से बाहर निकला था। मत्ती 2:14–15 और वह उस रात उठा और बच्चे को उसकी माता सहित मिस्र ले गया और हेरोद

की मृत्यु तक वहीं रहे। यह परमेश्वर के द्वारा कहे हुए वचन थे जो भविष्यवक्ता ने बो थे, मैंने मिस्र से अपने पुत्र को बुलाया।''

3. होशे ने यहूदियों के त्यागे जाने का विवरण दिया जिसे हम 70 ईसवी में यरूशलेम के विनाश के समय देखते हैं। पौलुस ने रोमियों 9:22–26 में होशे 2:23 का उपयोग किया है और होशे 1:10 इस बात की व्याख्या है कि मसीह द्वारा यहूदी और अन्य जाति भी परमेश्वर के अनुग्रह से फिर से स्थापित किये जायेंगे।
4. मसीह और उसकी कलीसिया का फिर से जी उठना
5. अध्याय 6:2 यीशु और उसके मसीहियों का मृत्यु से फिर जी उठने के विषय में एक भविष्यण्वाणी है।
6. होशे 13:14 यीशु और मृतकों को जोड़ने की कड़ी की एक भविष्यवाणी है।
7. उसका जी उठना इस बात की निश्चितता है कि हम भी कब्र से जी उठेंगे। 1 कुरि. 15:20
8. अनुग्रह द्वारा चुने हुए। ठीक जेसे होशे ने गोमर को उसकी अयोग्यता में चुना, इसलिए परमेश्वर ने हमें भी गोमर के समान अयोग्यता की अवस्था में चुना। परमेश्वर अभी भी होशे 11:4 के अनुसार करता है जो कहता है कि उसने हमें प्रेम की डोरी से अपनी ओर खींचा।
9. दया ही नहीं, परमेश्वर बलिदान की इच्छा रखते हैं। होशे सिखात है कि बिना दया, हमारा बलिदान या हमारी आराधना का तरीका व्यर्थ है। होशे 4:1–2
10. परमेश्वर के लोगों की अगुवाई। अच्छी अगुवाई महत्वपूर्ण है और होशे ने अपने समय की बुरी अगुवाईपन पर हमला किया, बुरे अगवे लोगों को भटका देते हैं। होशे 4:5 4:6, 5:1, 6:9, 10:5, 7:3–7, 9:15

निष्कर्ष : पुस्तक भावपूर्ण है। यह एक मनुष्य की और परमेश्वर और इस्राएल की प्रेम कहानी है। वहां पर भयानक दण्ड और उदार वायदों का भय है। हम अच्छे दिनों के एक वायदे को देखते हैं जैसे हम पुनः स्थापित किये जायेंगे और अनन्त शांति को प्राप्त करेंगे। परमेश्वर के अनुग्रह और उसी सर्वसामर्थ से वह अपने लोगों को मृत्यु और नरक से छुड़ायेंगे।

योएल

1. हम योएल के विषय में बहुत कम जानते हैं। उदाहरण के लिए हम नहीं जानते हैं कि कब उसने अपना संदेश दिया। उसकी सेवकाई यहूदा के लिए थी। योएल का अर्थ है यहोवा परमेश्वर है। यह संदेश इतिहास के सभी कालों के लिए है। इसलिए सटीक तारीख महत्वपूर्ण नहीं है। चेतावनी सभी राष्ट्रों के लिए है यहां तक कि हमारे राष्ट्रों के लिए भी। योएल हमें बताता है कि परमेश्वर उस देश पर विनाश को लाया यह मनुष्यों के पापों के कारण था।
2. जब योएल ने टिडडी की महामारी के विषय में बताया, यह कुछ भी गंभीर विनाश हो सकता है, जैसे भूकम्प, परन्तु इस समय यह समस्या टिडडीयों की थी जिसका क्षेत्र के भोजन को विनाश करने का इतिहास है। इस विनाश के कारण लोगों के सम्मुख आकाल का संकट आता था इसलिए लोग यह समझ गये कि परमेश्वर उन पर कठोर और भयानक दण्ड ला रहा था।
3. अध्याय 1:1–20 विवरण देता है कि क्या हो रहा था। उसने टिडडीयों की महामारी का विवरण दिया जो कि हर प्रकार के खाद्य पदार्थ और हर बढ़ने वाली चीज का विनाश कर रही थी।
4. योएल ने आयात 2 में यह स्पष्ट किया कि इस प्रकार का विनाश कभी नहीं हुआ। वह चाहता था कि यहूदा में हर कोई इसे जान जे कि यह कितना बुरा है। वह चाहता है कि शिक्षा को आने वाली पीढ़ी को भी बताया जाए।
5. आयत 15 में योएल में कहता है कि परमेश्वर का दिन आ रहा है। इस वाक्यांश को बाईबल में आमतौर पर उपयोग किया गया है, जो भयानक दण्ड के आने के विषय में बात करता है। यशायाह 18:6–22 परमेश्वर के दिन को डर के दिन के तौर पर वर्णित करता है।
6. योएल आगे अध्याय 2:1–11 में आगे आने वाले आक्रमण के विषय में वर्णन करता है। वह एक ऐसी सेना का चित्र प्रस्तुत करता है जो आक्रमण कर सब कुछ नाश करने पर है। बार बार सेना का आक्रमण है और हर आक्रमण और अधिक नुकसान को लाता है। आक्रमण इतना शक्तिशाली है कि कोई भी उसके सम्मुख खड़ा नहीं रह सकता।
7. आयत 11 हमें बताती है कि जो सेना यह सब विनाश कर रही है वह परमेश्वर की सेना है और वे परमेश्वर की इच्छज्ञ को पूरी कर रही है। योएल कहता है कि यह परमेश्वर का दिन है और कोई भी उसे नहीं सह सकता।
8. अध्याय 2:12–17 में योएल के द्वारा नया संदेश प्राप्त होता है। यह लोगों को पश्चाताप करने की बुलाहट है। योएल हमें बताता है कि सच्चा पश्चाताप किस प्रकार है।
9. हम 12–13 आयतों में देखते हैं कि सच्चा पश्चाताप हृदय से आता है। परमेश्वर भीतरी मनुष्यत्व को देखता है। (1 शमु. 16:7) न कि बाहरीपन को, जिसे संसार को दिखाने के लिए है। सच्चा पश्चाताप हृदयय से आता है न कि केवल एक व्यक्ति के होठों से जो कहता है कि उसे खेद है।

- वास्तविक पाप का अंगीकार है। हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि हम पापी हैं
- हमें निश्चय ही अपने पापों के प्रति खेदित होना चाहिए।
- वहां पर पश्चाताप के पुरस्कार है। आयत 13 कहती है कि परमेश्वर दयालु और तरस खाने वाला है और जब हम पश्चाताप करते हैं तो वह हमें क्षमा करने वाला है। आयत 14 हमें बताती है कि वह हमें आशीष भी देता है।
- आयत 15–17 में योएल अगुवों द्वारा लोगों को पश्चाताप में अगुवाई करने की महत्वपूर्णता को बताता है। यह महत्वपूर्ण है कि कलीसिया में पश्चाताप किए हुए अगुवे हो। तीतुस 1:5–9 सिखाती है कलीसिया के अगुवे अपने लोगों के लिए एक अच्छा उदाहरण हो। उन्हें कलीसिया को आगे बढ़ने में अगुवाई करनी चाहिए।
- योएल 2:18–27 में परमेश्वर अपने लोगों द्वारा पश्चाताप करने पर महान आशीषों का वायदा करता हैं
- प्रेरित पतरस ने प्रेरितों के काम 2:16–21 में योएल 2:28–32 को उद्धित किया जब वह पेन्तीकोस्त के दिन संदेश दे रहा था। योएल अंमिम दिनों के विषय में भविष्यवाणी कर रहा है। यह भविष्यवाणी यीशु के पुनः आने की ओर आगे इशारा करती है।
- अध्याय 3:1–21 बताती है कि परमेवर के न्याय की वास्तविकता निश्चित है और यह सभी लोगों के लिए है।
- आयत 1–6 हमें बताती है कि परमेश्वर का अन्य मूर्तिपूजक राष्ट्रों से शिकायत है। उसकी शिकायत यह थी मूर्तिपूजक राष्ट्र परमेश्वर के लोगों के साथ दुव्यर्वहार करते थे। आज परमेश्वर क्रोधित है जब अन्य जाति मसीहियों पर आक्रमण करते हैं।
- परमेश्वर कहते हैं कि यह उसके लोग हैं क्योंकि उसने उन्हें बनाया और उन्हें छुड़ाया है।
- परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाने के द्वारा इस्राएल की रचना की। उत्पति 15:5 में परमेश्वर ने अब्राहम से वादा किया कि उसके वंशजों की गिनती आकाश के अनगिनत तारों के समान होगी। यह इस्राएल राष्ट्र का विवरण है।
- यीशु ने उसकी कलीसिया को भी छुड़ाया जब यीशु ने अपने लहू के द्वारा इसकी कीमत चुकायी इसलिए कलीसिया मसीह की दुल्हन है। देखें प्रकाशित वाक्य 19:7
- 7–13 आयतों में, परमेश्वर ने उन मूर्तिपूजक राष्ट्रों को चुनौती दी, जिन्होंने उसके लोगों के साथ सही व्यवहार नहीं किया।
- 14–15 आयतों में परमेश्वर ने घोषणा की कि बहुत शीघ्र वह लोगों के भाग्य का फैसला करेगा।
- परमेश्वर ने 16–21 आयतों में वायदा किया कि वह अपने लोगों के लिए सर्वदा एक सहारा रहेगा। परमेश्वर के लोग सदा के लिए दण्डित नहीं होंगे क्योंकि जो यीशु ने हमारे लिए क्रूस पर किया है वह काफी है। हम यीशु के साथ सर्वदा स्वर्ग में होंगे।

आमोस

- अब हम आमोस की पुस्तक को देखेंगे। अध्याय 1:1 पढ़ने के द्वारा हम जान पाते हैं कि आमोस एक चरवाहा था। यह एक सामान्य व्यक्ति का कार्य था इसलिए हम जानते हैं किवह यशायाह के समान शिक्षित और धनी नहीं था। वह यहूदा का नागरिक था यद्यपि अध्याय 7:15 कहता है कि उसे उत्तरी राज्य इस्राएल के लिए एक भविष्यवक्ता होने को भेजा गया। आयत 1 इस्राएल और यहूदा दोनों के राजाओं के विषय में बताती है इसलिए हम जानते हैं कि वह उस समय में जीया जब सम्पन्नता का समय था, यह अश्शूर द्वारा उत्तरी राज्य पर कब्जे से तीस वर्ष पूर्व का समय था। जैसा अक्सर होता है कि सम्पन्नता में लोग परमेश्वर को त्याग देते हैं। वे बहुत पापी और परमेश्वर की वाचाओं के प्रति अनाज्ञाकारी थे।
- अध्याय 1:2 आमोस लोगों से कहता है कि उन्हें ध्यान देना चाहिए क्योंकि परमेश्वर के पास उनके सुनने के लिए कुछ महत्वपूर्ण था। शेर परमेश्वर को दर्शाता है और वह गरजता है क्योंकि उसके पास लोगों के लिए भयभीत करने वाला संदेश है। ''चरवाहों की चराईयां विलाप करती हैं, और कर्मेल की चोटी सूख गई हैं।'' लोगों को कठिन समय आने के लिए सचेत करो। सामान्यतः कर्मेल पहाड़ी इस्राएल के सूखे क्षेत्र में नम स्थान है। परन्तु परमेश्वर इस्राएल के पापों के लिए न्याय का वादा करता है जैसे वह कहता है िकनम स्थान सूखने जा रहा है। वह आकाल की भविष्यवाणी करता है।
- अध्याय 1:2:16 में हम देखते हैं कि आमोस इस्राएल के राष्ट्र को एक प्रचार करता है कि कैसे परमेश्वर चारों ओर के राष्ट्रों को उनके पापों के कारण न्याय करने जा रहा है। अध्याय 1:3 में वह प्रदर्शित करता है कि एक शहर के तीन पापों और चार पापों के लिए वह अपना दण्ड रद्द नहीं करेगा। यह कहने का एक अद्भुत तरीका है कि एक शहर के पाप का अर्थ यह नहीं है कि सभी ने गलत किया है। उन्हें इसलिए दण्डित किया जाने वाला है, क्योंकि वे बार–बार पाप कर रहे थे।

- पहले शहर जिन्हें आमोस (अध्याय 1:3–10) दण्ड के लिए सुचीबद्ध करता है वे सभी इस्राएल के शत्रु हैं। यहूदियों की दृष्टि में इन सभी राष्ट्रों का दण्डित होना अच्छा है ये है दमिश्क, पलिश्त और सोर हैं
- जो अगले राष्ट्र दण्डित सूची में हैं वे हैं एदोम, अमान, मोआब, जो इस्राएल के खून के रिश्ते में हैं। इस्राएल के राष्ट्र उनके दण्ड से प्रसन्न नहीं थे, परन्तु फिर भी उन्हें इसे स्वीकार करना था।

क्योंकि परमेश्वर अन्य लोगों को भी दण्डित कर रहे थे और केवल इस्राएल के लोगों को नहीं। हम इसे अध्याय 1:11–23 में देखते हैं।

अध्याय 2:4–5 में अगले देश यहूदा का जिक्र किया गया है जिसे दण्डित किया जाना था। अब संदेश घर के बहुत नजदीक आ चुका था जो असुविधाजनक था क्योंकि यह दण्ड यहूदियों के लिए आ रहा था, परन्तु इस्राएल के लोगों ने फिर भी इसे स्वीकार किया क्योंकि सभी दूसरे लोगों को भी दण्डित किया गया था। उनके अपराध दूसरे राष्ट्रों से भिन्न थे जिन्हें पहले ही सूचीबद्ध किया गया था। उनके अपराध आत्मिक और परमेश्र के विरूद्ध थे।

अब अध्याय 2:6–16 में आमोस प्रकट करता है कि वह एक साहसी पुरूष है, क्योंकि वह इस्राएल में हैं और वह इस्राएल के लिए दण्ड की बातें बोलता है। ज बवह दूसरे लोगों के लिए कह रहा था तब तक ठीक था, परन्तु यहाँ पर वह एक विदेशी ळे और इस्राएल के लोगों के विरूद्ध बोल रहा था और वह तत्काल ही अलोकप्रिय हो गया। यहाँ पर वक विदेशी है और इस्राएल के लोगों के विरूद्ध बोल रहा था, और वह तत्काल ही अलोकप्रिय हो गया। यहाँ पर यह शिक्षा है कि हमें निश्चय ही विश्वासयोगय हो और बाईबल के संदेश का प्रचार करे; इस से फर्क नहीं पड़ना चाहिए कि संदेश का प्रचार करे; इस से फर्क नहीं पड़ना चाहिए कि संदेश लोकप्रिय है या नहीं। हमें पहले परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहिए न कि मनुष्य का। चाहे इस कारण हम संकट में भी क्यों न पड़ जाएं। बहुत से पासवान लोगों को प्रसन्न करने के लिए जो लोकप्रिय हैं उसी का प्रचार करते हैं और यह गलत है। हमारा संदेश लोगों के कानों को गुदगुदाने वाला नहीं होना चाहिए बजाए इसके हमें आमतौर पर उनके पैरों की उंगली पर चलना चाहिए।

आमोस यहां पर एक समस्या को सम्बोधित किया जो आज भी कलीसिया में विद्यमान है। यहूदियों ने सोचा कि जबकि वे परमेश्वर के लोग हैं तो उन्हें कठोर दण्ड नहीं दिया जाएगा। खैर आमोस उसके देश में आया और उसने उन्हें बताया कि वे गलत है कि वे गलत हैं। सभी लोगों का परमेश्वर द्वारा न्याय किया जाएगा और न्याय उनके कार्यों पर आधारित होगा न कि उनके पारिवारिक रिश्तों पर आधारित होगा। कलीसिया की उपस्थिति और सदस्यता तुम्हें नहीं बचायेगी। क्या आपको बचा सकता है? केवल एक सच्चा मसीही होने के द्वारा ही जो उसकी इच्छानुसार जीवन जीता है।

अध्याय 2:4 हमें एक कारण यह बताती है कि यहूदियों द्वारा परमेश्वर की वाचाओं और नियमों को त्याग देने के वजह से वे दण्डित किये जायेंगे। परमेश्वर ने यहूदा और इस्राएल से एक समान व्यवहार किया, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में वे एक ही लोग हैं।

आयत 4 हमें यह भी बताती है कि दूसरा पाप जो परमेश्वर के चुने हुए लोगों के द्वारा किया गया वह यह था कि वे परमेश्वर को छोड़ पराये देवताओं के पीछे हो लिये थे।

6–8 आयतों में इस्राएल के विरूद्ध अपराधें की सूची है।

निम्नलिखित आयतों में जो चित्र प्रस्तुत किया गया है उसमें एक भ्रष्ट समाज को चित्रित किया गया है जहां धनी लोग निर्धन से चुरा कर और धनी हो जा रहे हैं। उनके सुनिश्चित अपराध हैं:

उनका पहला अपराध आर्थिक सताव था। इसका अर्थ यह है कि धर्मी को चांदी और जरूरतमंद को चप्पलों की एक जोड़ी के लिए बेच देना। अपराध यह था कि धनी लोग निर्धन लोगों को जो वो चाहते थे उसके लिए धोखा देते थे फिर चाहे वह चांदी हो या फिर एक जोड़ी चप्पल जैसी छोटी चीज ही क्यों न हो।

दूसरा अपराध आयत –7 में पाया जाता है जहां धनी लोग निर्धनों को कचहरी में न्याय नहीं देते थे। न्यायालय भ्रष्ट थी।

तीसरा अपराध भी आयत–7 में पाया जाता है जो मुख्य रूप से लैंगिक अनैतिकता के विषय में है।

आठवीं आयत में चौथे अपराध के विषय में बताया गया है जो निर्धनों से गर्म वस्त्र ले लेने के विषय में है। निर्गमन 22:26–27 में खासतौर से इस अपराध की मनाही की गई है।

पांचवां अपराध आयत–8 के अन्त में पाया जाता है और यह अपराध भ्रष्ट न्यायालय का उपयोग निर्धनों से पैसा लेने के लिए किया गया था। लोगों पर अनुचित जुर्माना लगाया जाता था।

आमोस द्वारा प्रथम संदेश का अन्त अध्याय 2:9–16 में पया जाता है।

आयत 9–11 में परमेश्वर लोगों को यह याद दिलाता है कि परमेश्वर ने उनके लिए जब कुछ किया है और वे परमेश्वर द्वारा सफल हुए हैं।

आयत 13–16 में आमोस लोगों से कहता है कि सभी पापी लोगों का परमेश्वर द्वारा न्याय किया जाएगा और परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं लेगा। सभी लोगों का न्याय किया जाएगा चाहे वे कहीं से भी आते हों।

अध्याय 3:1–2 में आमोस एक नया संदेश प्रारम्भ करता है। वह इस बात से प्रारम्भ करता है कि सभी लोग जो पृथ्वी पर हैं और इस्राएल को परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होना चाहिए। फिर भी उत्तरी राज्य के लोगों की नैतिकता इतनी बुरी थी कि वे उनके चारों ओर के राष्ट्रों से भी बुरे थे। कलीसिया को चारों ओर के लोगों की तुलना में एक उच्च स्तरीय जीवन जीना चाहिए। परन्तु यह खेद की बात है कि कई अवसरों पर कलीसिया और गैर कलीसियाई लोगों में कोई अन्तर नही देखा जाता है। उदाहरण के लिए तलाक की दर दोनों समूहों में (कम से कम अमेरिका में) एक समान है। देखें परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए क्या किया।

परमेश्वर ने उन्हें अपना खास होने के लिए चुना। उसने उन्हें जगत के अन्य लोगों के मध्य से चुना। उसने परमेश्वर को इसलिए नहीं चुना कि वह आत्मिक समझ रखने वाला और परमेश्वर पर विश्वास करनेवाला व्यक्ति था। जब परमेश्वर के अब्राहम को चुना तब वह एक मूर्तिपूजक था। परमेश्वर ने इस्राएल को चुना क्योंकि उसके पास स्वयं के कारण थे। रोमियों 9:11–15 पढ़ें और इस बात को सुनिश्चित कीजिए। अगर आप एक मसीही हैं तो आप परमेश्वर द्वारा चुने हुए हैं।

परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र की गुलामी से छुड़ाा। रोमियों अध्याय 6 हमें बताता है कि परमेश्वर ने प्रत्येक मसीही को पाप की दासता से छुड़ाया है। अब हम पाप के गुलाम नहीं हैं।

इस्राएल को परमेश्वर के प्रति विशेष जिम्मेदारी के कारण चुना गया था। परमेश्वर के चुने हुए लोगों को दूसरे लोगों की तुलना में उसके पीछे चलने और आज्ञा मानने के प्रति अधिक जिम्मेदारी है। लूका 12:47–48 सिखाती है कि जो लोग मसीह के विषय में सुन कर उसे अस्वीकार करते हैं उन्हें यीशु के विषय में नहीं सुनने वाले की तुलना में अधिक कठोर दण्ड दिया जाएगा।

आमोस 3:6–8 लोगों को चेतावनी की एक श्रृंखला है। परमेश्वर चुनौती दे रहे हैं कि जो लगातार उसकी आज्ञा नहीं मानते हैं उन पर वह कठोर दण्ड लेकर आएगा।

अध्याय 3 परमेश्वर द्वारा एक चुनौती के साथ समाप्त होता है। परमेश्वर कहता है कि उसके दण्ड से कोई बचाव नहीं है, कोई भी स्थान नहीं होगा जहां छुपा जा सके। वह कहता है कि उन्हें परमेश्वर के प्रति निश्चित ही आज्ञाकारी रहना चाहिए। इस आशा में कि परमेश्वर उनके प्रति दयालु होंगे।

अध्याय 4:5–15 में परमेश्वर धर्म के विषय में अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है। वह (आमोस 5:21–22) झूठे धर्म से घृणा करता है, जहां लोग वह करते हैं जो उनकी दृष्टि से सही जान पड़ता है, वे सीधी रीति से परमेश्वर और उसकी इच्छा का सम्मान नहीं करते हैं। (युहन्ना 4:23)

उसने आयत 1–3 से प्रारम्भ करते हुए बाशान की गायों के विषय में बात करता है जो कि सम्पन्नता में जीवन जीने वाली महिलाओं को दर्शाता है। इससे यह प्रकट होता है कि परमेश्वर धनी लोगों से अप्रसन्न था, इसलिए नहीं कि वे धनी हैं, परन्तु इसलिए कि वे लोग गरीबों को सताने के द्वारा धनी हुए थे। वे स्वच्छ हृदय से परमेश्वर की आराधना करने के लिए नहीं आते थे।

आयत 2–3 में परमेश्वर उनकी सम्पन्नता को उन पर दण्ड लाने के द्वारा समाप्त करने का वायदा करता है। वह स्पष्ट रीति से आने वाले अश्शूरियों के विषय में बात करता है जो इस्राएल को अपने अधीन करने और उनमें से अधिकतर को बंधक बना कर ले जाने के लिए आने वाले थे।

आमोस झूठे धर्म के विषय में बात करता है जो इस्राएल (परमेश्वर के चुने हुए लोग) के प्रारंभिक इतिहास से तीन प्रमुख स्थानों पर पालन किया जा रहा था। ये है बेतेल और गिलगाल 4:3 में जिक्र किया गया है, और बेर्शेबा 5:5 में उल्लेख किया गया है। लोगों ने परमेश्वर द्वारा आराधना के लिए दिए हुए निर्देशों को बदल दिया था कि उन्हें किस प्रकार आराधना करनी है और केवल मन्दिर में ही बलिदान चढ़ाना चाहिए।

यहाँ पर मसीही आराधना के लिए उपयोग है। हमें आराधना के तरीकों के लिए बाईबल की ओर देखना चाहिए और स्वयं के आनन्द के लिए आराधना के तरीकों को नहीं बनाना चाहिए। आराधना में हमारा उद्देश्य परमेश्र की महिमा और स्तुति देना है जिसके योग्य वह है। हम अपने सुख को परमेश्वर से उपर नहीं रखना चाहिए। हमें उसके सम्मुख और आज्ञाकारी हृदय के साथ आना चाहिए।

आमोस इस बात को जारी रखता है कि इस्राएल का धर्म मृत है।

पहली बात यह है कि इस्राएल का धर्म नैतिक भ्रष्टता के साथ विद्यमान है। अध्याय 5:7, 10:13 में वह भ्रष्टाचार के विषय में उन्हीं बातों को जोड़ता है जिनके विषय में पहले ही अध्याय 1–3 में वह बोल चुका है। लोग भ्रष्ट जीवन और धार्मिक व्यवहार दोनों का एक समय में जीने से संतुष्ट थे।

तीसरी बात जिससे परमेश्वर का उल्लंघन किया गया वह थी कि आराधना में वे परमेश्वर को नहीं खोजते थे। वे आराधना में खुद के उद्देश्य के लिए थे। एक उदाहरण आमोस 4:5 में पाया जाता है जहां हम देखते हैं कि वे स्वेच्छा बलिदान इस लिए देते थे कि वे उस पर घमण्ड कर सके।

अध्याय 4:6–11 में पुनः परमेश्वर ने लोगों को चेतावनी दी। परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया कि लोग पश्चाताप करके उसकी ओर लौटे, परन्तु उन्होंने इसकी अवहेलना की।

आमोस इस भाग को 5:14–15 में समाप्त करता है, जहां पर वह लोगों से ऐसा जीवन जीने के लिए कहता है जिससे परमेश्वर प्रसन्न हो ताकि परमेश्वर उन पर दया कर सकें।

अध्याय 5 का समापन आमोस द्वारा लोगों को आने वाले ''परमेश्वर के दिन'' से सावधान रहने के लिए कहते हुए होता है। उदाहरण यशायाह 13:6, योएल 1:15, मलाकी 4:5 एक भयंकर समय का चित्रण करती है जहां परमेश्वर भीषण न्याय को ले कर आते हैं। 2 पतरस 3:10 में परमेश्वर के दिन का वर्णन किया गया है जो परमेश्वर के क्रोध, भयानक समय के दिन को प्रकट करता है।

आयत 18 इसे अंधकार के दिन के तौर पर वर्णित करती है। मत्ती 8:12 में नरक का वर्णन किया गया है और यहूदा 1:13 में एक ऐसा स्थान जो पूर्णतया अंधकारमय है। बाईबल सामान्यतः रोशनी को परमेश्वर के साथ जोड़ती है, देखें भजन संहिता 104:2, यूहन्ना 8:2 और युहन्ना 9:5। रोशनी अच्छी है और अंधकार बुरा है। ''परमेश्वर के दिन'' जिसे आमोस बताता है वो समय एक भयानक न्यय का है। ये वो समय है जब आप परमेश्वर से दूर होते हैं, जिसका अर्थ है किसी भी अच्छाई से अलगाव; देखें याकूब 1:17। यही नरक का भी वर्णन है जहां परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव होगा।

दूसरी विशेषता यह है कि परमेश्वर से बचा नहीं जा सकता है; यहां कोई भी मार्ग नहीं जहां से परमेश्वर से भागा जा सके। हम आमोस 5:19 में देखते हैं जहां व्यक्ति सिंह से भागता है तो भालू और सर्प का सामना करता है।

तीसरी विशेषता जो आयत 20 में पाई जाती है वह परमेश्वर के विरूद्ध व्यक्ति के लिए आशाहीनता है।

आमोस आयत 23–24 यह लिखते हुए अन्त करता है कि अभी भी परमेश्वर के क्रोध को टालने का समय है। जब तक एक व्यक्ति जीवित है तब तक वह ''परमेश्वर के दिन'' को टाल सकता है। यह यीशु की ओर लौटकर उसे अपना परमेश्वर और उद्धारक स्वीकार करने के द्वारा संभव है।

''परमेश्वर का दिन'' मसीही लोगों के लिए बुरा दिन नहीं है, क्योंकि यह वो दिन है जब मसीह लोग स्वर्ग जायेंगे।

अध्याय 6 उन लोगों पर आक्रमण है जो उन चीजों से वैसे ही संतुष्ट है जैसी वे हैं। ये आमोस के समय भी गलत था और आज कलीसिया में भी गलत है। ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत से मसीही यह महसूस नहीं करते ळं कि यहां पर एक आत्मिक युद्ध चल रहा है। जब तक जीवन अच्छा है, वे संतुष्ट हैं और अपने चारों ओर खोये हुए लोगों के विषय कुछ ध्यान नहीं देते हैं और बुराई का सामना करने से बचते हैं। हम इसे पश्चिमी कलीसिया में देखते हैं जहां कलीसिया सुसमाचार प्रचार और विशेषतः विदेश सेवा को नजरअंदाज किया जाता है। अधिकतर मसीह गर्भपात और समलैंगिक विवाह जैसी बुराईयों को रोकने का प्रयत्न नहीं करते हैं। मत्ती 16:'24 ही केवल एक उदाहरण है जहां बाईबल हमें सिखाती है कि हम मसीह लोगों को परमेश्वर की सेवकाई में सक्रिय रहना चाहिए। आमतौर पर मसीही लोग इस बात पर ध्यान नहीं देते हैं चारों ओर विपत्तियां हैं और यह लगातार एक खतरा है।

9. अध्याय 7:1–9 और 8:1–9:10 में पांच दर्शन हैं

प्रथम दर्शन आयत 1–3 में पाया जाता है जहां परमेश्वर टिड्डियों की महामारी लाने वाला है जिसका अर्थ है लोगों के लिए भुखमरी आमोस ने परमेश्वर से याचना की और परमेश्वर ने लोगों को टिड्डियों से बचाया।

दूसरा दर्शन 4–6 आयतों में पाया जाता है और यह अग्नि के विषय में है जो वास्तव में सूखेपन का भय हे, दूसरे शब्दों में देश में सूखा। एक बार फिर आमोस ने परमेश्वर से ऐसा नहीं करने की प्रार्थना की और परमेश्वर ने लोगों को इस से बचाया।

तीसरा दर्शन 7–9 आयतों में चित्रित किया गया है और यह परमेश्वर द्वारा एक साहुल को पकड़ने के विषय में है। परमेश्वर कह रहा है कि वह इस्राएल को भांप रहा है यह देखने के लिए कि क्या इस्राएल परमेश्वर की अपेक्षा के अनुसार व्यवहार कर रहा है या नहीं। हम जानते हैं कि इस्राएल परमेश्वर की अपेक्षा अनुसार नहीं जी रहा है, आयत 9 में परमेश्वर इस्राएल को नाश करने की धमकी देता है। हम इस विनाश को केवल तभी टाल सकते हैं, जब हम प्रेरितों के काम 6:31 के अनुसार यीशु पर विश्वास और प्रेरितों के काम 2:38 के अनुसार पश्चाताप और बपतिस्मा लेंगे।

एक मसीह व्यक्ति के लिए साहुल, बाईबल है जो हमें जीवन के उस स्तर के विषय में बताती है जिसमें हमें होना चाहिए।

शेष अध्याय 7 आमोस पर अमिज्याह द्वारा जो एक धार्मिक अगुवा था के आक्रमण का विवरण देता है। उसने राजा के सम्मुख आमोस पर दोष लगाया । अमिज्याह ने आमोस को चुप रहने और अपने देश लौट जाने का आदेश दिया। आमोस ने परमेश्वर का अनुसरण किया और अमिज्याह से आयत 17 में कहा कि वह और राष्ट्र समाप्त हो जाएगा। हमें बाईबल की सच्चाईयों को बताने के लिए साहसी होना चाहिए।

चौथा दर्शन अध्याय 8 में पाया जाता है, सबसे पहले आयत 1–2 में। यह एक कटोरे के विषय में बात करता है जो कि ग्रीष्मकालीन फलों से भरा है और अच्छा प्रतीत होता है। फिर भी फल को अन्त में उठाया गया। वहां आगे फसल नहीं होगी। आगे को परमेश्वर से आशीषों नहीं मिलेगी।

शेष अध्याय आयत 3 से प्रारम्भ करते हुए इस्राएल के लिए संकटों की सूची है। 8–11 आयतें हमें बताती हैं कि कैसे देश आत्मिक अकाल से पीड़ित होगा। परमेश्वर लोगों को त्याग देगा। हम इसे कई देशों में देखते हैं जहां पहले मसीहीयत मजबूत थी, परन्तु अधिकांश स्थान अब मूर्तिपूजक हैं। हम इसे यूरोप और कनाड़ा और अब संयुक्त राज्य में देखते हैं।

अंतिम दर्शन हम अध्याय 9:1–10 में पाते हैं और इस्राएल की अंतिम समाप्ति के विषय में बताता है। परमेश्वर इस्राएल के साथ अपने विशेष वाचा के संबंध को समाप्त करता है।

आयत 1–6 इस्राएल के अन्त के विषय में बात करती है जो कि आमोस द्वारा संदेश दिये जाने के 50 वर्षों के भीतर हुआ। हम इन आयतों में पढ़ते हैं कि परमेश्वर के न्याय से नहीं बचा जा सकता है।

भविष्यवाणी का दूसरा भाग 7–10 आयतों में पाया जाता है जो कलीसिया के बदलाव के विषयि में बात करता है। आयत 7 यह स्पष्ट करती है कि परमेश्वर इस्राएल को विशेष चुने हुए लोग नहीं समझता है। वे कूश के लोगों के समान है। आयत 10 में हम पाते हैं कि कैसे लोग यह सोचते हैं कि वे विशेष हैं और परमेश्वर उन्हें विपत्ति से बचाएगा।

आयत 8 और 9 में आमोल लोगों से कहता है जब इस्राएल में बहुत से लोग नाश हो जायेंगे, परन्तु परमेश्वर उसके विश्वासयोगय बचे हुए लोगों को नाश नहीं करेगा। वह सर्वदा अपने विश्वासयोगय अनुयायियों को सुरक्षित रखेगा।

ओबद्याह

हम नहीं जानते हैं कि ओबद्याह कौन था जब उसने इस पुस्तक को लिखा। यद्यपि यह पुराने नियम की सबसे छोटी पुस्तक है, इसमें हमारे लिए शिक्षा है। परमेश्वर के पास असीम धैर्य है। परन्तु यहाँ पर उसके धैर्य की सीमा है और जब उस का धैर्य समाप्त होता है, तो उसका न्याय कठोर होता है। पुराने नियम के दिनों में यह सत्य था और अभी भी यह सत्य है।

ओबद्याह की भविष्यवाणी एदोम के विनाश से व्यवहार करती है, एक देश जो लम्बे समय से इस्राएल का शत्रु और रिश्तेदार था। याकूब का भाई एसाव एदोम का संस्थापक था। एदोम अपने इतिहास से ही इस्राएल का शत्रु रहा है। एदोम अपने गृह देश में स्वये को सुरक्षित महसूस करता था जो कि यरदन नदी के पूर्व में स्थित था। यह देश पहाड़ी है और शत्रु के आक्रमण से बचाव के लिए सरल है। आज यह प्रदेश मुस्लिम राष्ट्र यरदन का भाग हैं

ऐसा प्रकट होता है कि जब कभी संभव हुआ एदोम ने इस्राएल के विरूद्ध कार्य करता था। उदाहरण के लिए मूसा ने एदोम के राजा से इस्राएल के लोगों को वाचा के देश कनान ले जाने के दौरान एदोम से होकर जाने की अनुमति मांगी। गिनती 20:14–21 में यह कहानी दर्ज है जो हमें बताती है कि किस प्रकार एदोम के राजा ने युद्ध की धमकी दी यदि इस्राएली एदोम में दाखिल भी हुए। बाद में गिनती 24 में बालाम ने इस्राएल द्वारा एदोम को जीत लिये जाने की भविष्यवाणी कीं

अध्याय 1:1–9 में एदोम के विनाश की भविष्यवाणी की गई। यह एदोम की हर प्रकार की सुरक्षा चाहे वो पहाड़ी गढ़। उसकी सम्पति और उसकी सामर्थी सेना भी हो उसके विनाश को नहीं टाल सकती।

आयत 10–14 इशारा करती है कि एदोम के विनाश का कारण इस्राएल के साथ उनके द्वारा किया गया बुरा बर्ताव था। जब इस्राएल की पराजय हुई तो एदोम इस्राएल के शत्रुओं के साथ मिल कर उन्हें लूट कर शामिल था। आयत 10 यह बताती है।

ओबद्याह का अंतिम भाग आयत 15 से प्रारम्भ होता है और परमेश्वर का न्याय ले कर आता है। आयत 15 हमें बताती है कि सभी राष्ट्रों के लिए परमेश्वर का दिन आने वाला है। न्याय का दिन शीघ्र ही पूर्ण हुआ, यह एदोम के अन्त के साथ था, जैसे कि एदोम कभी अस्तित्व में भी नहीं था। इस्राएल के लिए परमेश्वर के दिन का अर्थ छुटकारा है।

ओबद्याह का अंतिम आयत 17 से इस्राएल के फिर से स्थापित किये जाने के विषय में बात करती है। इस्राएल को भी परमेश्वर द्वारा दण्डित किया जाएगा परन्तु थोड़े समय के लिए। एदोम का दण्ड सदा के लिए है जबकि इस्राएल को एक महिमामय भविष्य का वायदा किया गया हैं

आयत 17 में यहां तीन चीजें हैं जो हमें परमेश्वर द्वारा इस्राएल से किए गए भविष्य के वादे के बारे में सिखाती है। यह वायदे मसीहियों के लिए भी हैं। ये हैं :–

1. परमेश्वर का दिन, परमेश्वर के लोगों के लिए छुटकारे का दिन है। यह वह दिन है जब हम मसीह लोग हमारे पापों की गुलामी से आजाद हुए।

2. आयत 17 पवित्र होने के विषय में बात करती है। मसीहियों के लिए इसका अर्थ है कि परमेश्वर हमें पवित्र बनायेंगे। हम थोड़ा थोड़ा पवित्र होते जायेंगे इस समय में और जब हम मर जायेंगे तो पूर्ण रीति से पवित्र हो जायेंगे।

3. आयत 17 बताती है कि कैसे पुनः इस्राएल अपने देश को वापिस पायेगा और यह बताती है कि मसीही लोगों को परमेश्वर द्वारा उनकी हर आवश्यकताएं पूरी की जायेंगी।

यशायाह 63:1–4 मसीह के पुनः आने पर अन्तिम न्याय की भविष्यवाणी है। यह हमें एदोम के उस व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत करती है जो अपने शत्रुओं का विनाश कर चुका है। एदोम से आने वाला व्यक्ति यीशु है जो यरूशलेम को लौटता है अपने शत्रुओं के विनाश के पश्चात विशेष एदोम। जब बाबुलवासियों ने यरूशलेम का विनाश किया और लोगों को बंधुवाई में ले गये तो ऐसा लगा कि एक राष्ट्र के तौर पर इस्राएल समाप्त हो गया। उसी समय यह प्रकट है कि एदोम देश अधिक दिनों तक अपनी पहाड़ी गढ़ की सुरक्षा के कारण स्थिर रहा। फिर भी ओबद्याह ने एदोम के सम्पूर्ण विनाश और इस्राएल के फिर से स्थापित होने की भविष्यवाणी की।

यहाँ ओबद्याह में हम देखते हैं कि यीशु ने पृथ्वी पर अपने सभी शत्रुओं का विनाश किया, खासतौर से एदोम का न्याय किया। यीशु संसार का न्याय करने के पश्चात् अपने लोगों, इस्राएल के पास लौट आया।

यीशु के जन्म से पूर्व ही एदोम लुप्त हो गया जबकि इस्राएल अभी भी एक स्वस्थ्य राष्ट्र है। एदोम अब नहीं रहा।

योना

एक भिन्न प्रकार का नबी योना जो इस्राएल के लोगों को बचाने के लिए नहीं परन्तु उनके शत्रु निनवे (अश्शूर की राजधानी) को बचाने के लिए भेजा गया। कहानी इस बात की पुष्टि करती है कि परमेश्वर सभी लोगों का ध्यान करता हे केवल यहूदियों का ही नहीं। यह एक उस नबी की कहानी है जिसके विषय में पश्चिम के अधिकतर मसीह लोग जानते हैं जिसमें बच्चे भी शामिल हैं। यह पढ़ने में सरल और रूचिकर है। अगर आप योना के विषय में पढ़ें तो आप पायेंगे कि योना एक कठिन पुरूष है। आइए इस पुस्तक को देखें। इस छोटी पुस्तक में केवल चार अध्याय हैं। उसने परमेश्वर की आज्ञा को नहीं मानें और जब परमेश्वर ने निनवे के लोगों को नहीं मार डाला तो वह बहुत ही क्रोधित हो गया।

आईए इस कहानी को देखें। परमेश्वर द्वारा योना को आज्ञा दी गई कि वह निनवे के लोगों को चेतावनी दे कि वे लोग मन फिरा लें अन्यथा उन्हें दण्ड दिया जाएगा। परमेश्वर ने एक प्रचण्ड तुफान भेजा और जहाह डूबने लगा इसलिए उन्होंने योना को समुद्र में फेंक दिया और तूफान थाम गया।

तब एक मछली आई और उसने योना को निगल लिया। तीन दिनों तक मछली के पेट में रहने के पश्चात् योना ने पश्चाताप किया। इस कहानी के अन्त में हम देखते हैं कि योना क्रोधित हुआ, क्योंकि लोगों ने पश्चाताप किया जो कि योना नहीं चाहता था।

आइए देखें कि हम इन चार अध्यायों से क्या सीख सकते हैं :

1. परमेश्वर अपने लोगों को सिखा रहा है कि वे लोगों को उद्धार का संदेश बताने के लिए उत्तरदायी है। यीशु के समय में यहूदियों द्वारा की गई सबसे बड़ी गलती यही थी देखें लूका 4:26–29। जब यीशु ने अन्य लोगों के लिए परमेश्वर की आशीषों के विषय में बात की तबक वे क्रोधित हो गये और उसे मार डालना चाहते थे।

2. हम देखते हैं कि परमेश्वर ने लोगों द्वारा पाप से पश्चाताप का सम्मान किया।

यहां पुस्तक के चार भाग हैं।

1. योना स्वयं का रास्ता चाहता है। 1:1–16। परमेश्वर ने उसे निनवे के पूर्व की ओर यात्रा करने के लिए कहा, योना ने इसके बजाए पूर्व की ओर एक जहाज से यात्रा की। परमश्वर ने योना की अनाज्ञाकारिता का प्रतियुत्तर एक शक्तिशाली तूफान भेज कर दिया, और योना को जहाज पर से डूबने के लिए फेंक दिया गया।

2. अध्याय 1:17 – 2:10। परमेश्वर ने योना पर अनुग्रह करते हुए एक मछली को उसे निगलने के लिए भेजा ताकि वह जीवित रह सके। और उस कार्य को कर सके जिसके लिए परमेश्वर ने उसे कहा था। योना ने प्रार्थना की और परमेश्वर ने मछली को आज्ञा दी कि उसे सूखी धरती पर उगल दे। योना ने मछली के पेट में तीन दिन बिताये इस से हमारे लिए यह सीख है कि परमेश्र की आज्ञा का पालन करना हमारे लिए उत्तम चुनाव है। योना 1:17 और मत्ती 12:40 यीशु के द्वारा तीन दिन कब्र में रहने का हवाला देते हैं।

3. योना ने निनवे में प्रचार किया 3:1–10। उसका संदेश बिल्कुल सीधा और स्पष्ट था। ''चालीस दिन और उसके पश्चात निनवे उलट दिया जाएगा।'' योना के आश्चर्य के लिए निनवे के सभी लोगों ने राजा सहित पश्चाताप किया और परमेश्वर ने उन्हें छोड़ दिया। यहां पर शिक्षा यह है कि एक संदेश शब्दों की संख्या द्वारा प्रभावशाली नहीं होता है, यह परमेश्वर द्वारा शब्दों को सामर्थ प्रदान करने से होता है।

4. अध्याय 4:1–11 योना ने अप्रसन्नता जाहिर की कि परमेश्वर ने निनवे को नाश नहीं किया। वह इतना क्रोधित हुआ कि उसने एक बिन्दु पर परमेश्वर से मृत्यु की कामना की, और फिर पौधे के नाश होने पर भी। आयत 10 और 11 में परमेश्वर ने उससे अपनी सोच के विषय में बात की जहां वह पौधे की ज्यादा चिंता कर रहा था, बजाए इसके कि 120000 बच्चे जो निनवे में थे उन्हें बख्श दिया गया। यहां पर परमेश्वर पश्चाताप करने वालों पर अपनी दया और करूणा को प्रकट किया। योना को उपयोग करने के द्वारा परमेश्वर यह प्रकट करते हैं कि वह सदैव अच्छे लोगों का अपने कार्य के लिए उपयोग नहीं करता है।

मीका

मीका और शायाह दोनों एक ही समय पर भविष्यवाणी कर रहे थे। कई अवसरों पर उनके संदेश एक समान थे। मीका 4:1 और यशायाह 2:3 की तुलना करे। मीका एक नबी था जो यहूदा में जीवन व्यतीत करता था। हम उसकी शिक्षाओं में से कुछ ही को देखने जा रहे हैं। समय के कारण और अन्य नबीयों की शिक्षा को भी उसी प्रकार देखेंगे।

2. आधारभूत रीति से संदेश यह है कि परमेश्वर अपने लोगों से प्रेम करता है। यद्यपि उनके पापों से घृणा करता है। मीका और परमेश्वर विशेषतः धनी लोगों द्वारा निर्धनों से चोरी के तरीके के कारण घृणा करता है। देखें मीका 3+1–3। आप क्या सोचते हैं कि परमश्वेर इस विषय में अफ्रीका के बारे में क्या सोचता है? मीका 7:3 में घुस के पास के विषय में बात करता है। मीका का संदेश था कि लोग पाप कर रहे हैं। पाप की पहचान हो चुकी है, और लोगों को वायदा किया गया कि यदि वे लगातार पाप करते रहेंगे तो निश्चय ही वे दण्ड के हकदार होंगे। संदेश का अन्त भविष्य में उद्धार के वायदे के साथ होता है।

3. हम यशायाह और मीका दोनों में ही पाते हैं कि वे परमेश्वर के समान हैं जो लोगों के पापी होने के बावजूद भी उनसे प्रेम करते हैं। हम इसी प्रेम को पौलुस द्वारा उसके लोगों के लिए पाते हैं देखें रोमियों 9:3। परमेश्वरीय पासवान के लिए चिन्ह यह है कि वह बाईबल के सभी संदेशों को कठोर संदेशों का भी प्रचार करता है। वह लोगों को ईश्वरीय सलाह प्रदान करता है यद्यपि उस सलाह को लोग स्वीकार करना भी न चाहे। वह अपने लोगों के लिए भी प्रेम रखता है और उनके लिए दुखित होते हुए उनके लिए विलाप करता है।

4. इस पुस्तक में दो मुख्य आयते हैं जिनके विषय में हम बताना चाहते हैं। मीका 6:8 कहता है '' हे मनुष्य, वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है; और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है कि तु न्याय से काम करे और कृपा से प्रीति रखे और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले?'' हम इस आयत में देखते हैं कि परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति से क्या चाहता है।

5. मीका 5:2–4 आने वाले मसीहा के विषय में बात करती है, और वह बैतलहेम में जन्म लेगा। हम जानते हैं कि यह हो चुका है।

नहूम

नहूम की पुस्तक दो नबियों द्वारा अशूर की राजधानी निनवे के विषय में की गई भविष्यवाणियों में से एक है। योना निनवे की ओर भेजा गया प्रथम भविष्यवक्ता था और उसका संदेश लोगों को पश्चाताप करने के लिए कहा ताकि वह आने वाले विनाश से बच सके। लोगों ने पशताप किया और परमेश्वर ने लोगों को नाश नहीं किया। अब सौ बर्षों पश्चात् नहूम द्वारा निनवे के लिए नया संदेश था। इस अवसर पर परमेश्वर के नबी ने लोगों से पश्चाताप के लिए ही कहा, इसके बजाए वह लोगों से कहता है कि परमेश्वर नगर पर भयानक न्याय लानेवाला है। ऐसा प्रतीत होता है कि योना के संदेश के पश्चात किया हुआ पश्चाताप अधिक समय तक स्थिर नहीं रहा और लोग पुनः अपने पुराने समय की ओर लौट गये।

उनके पुराने तरीके भयंकर थे, निनवे के लोग इतने क्रुर थे कि उनसे घृणा की जाती थी। नगर की स्थापना प्रारम्भिक दिनों में हुई थी, उत्पति 10 में निम्रोद द्वारा शहर की स्थापना का विवरण दर्ज है। वे एक शक्तिशाली लोग थे जिन्होंने

एक बड़े साम्राज्य पर कई वर्षों तक राज्य किया। निनवे लोगों के प्रताड़ित करने में विश्वास करता था, उदाहरण के लिए इतिहास बताता है कि वे जिन्दा लोगों की खाल निकाला करते थे।

नहूम की भविष्यवाणी बताती है कि जबकि परमेश्वर मुख्य तौर से अपने चुने हुए लोगों के साथ कार्य कर रहा था, तब भी वह सारे लोगों का परमेश्वर है और सीाी लोग उसके प्रति जवाबदेह हैं और वह उनका न्याय करेगा। दूसरी शिक्षा यह है कि जबकि परमेश्वर एक प्रेमी परमेश्वर है साथ ही वह न्याय का परमेश्वर है और उसका न्याय बहुत ही कठोर है।

पहला अध्याय परमेश्वर की सामर्थ के विषय में है और भयंकर दण्ड उसके शत्रुओं के लिए आ रहा है। हम यह भी देखते हैं कि परमेश्वर उस पर भरोसा रखनेवालों के लिए भला है। आयत 8–9 यह स्पष्ट करती है कि परमेश्वर उसके शत्रुओं का सम्पूर्ण विनाश करेगा। लोग केवल परमेश्वर की भलाई और करूणा का ही आभार मानना चाहते थे, लेकिन हमें यह भी महसूस करने की आवश्यकता है कि उसका न्याय उसके शत्रुओं के लिए भयानक है। देखें यशायाह 63:1–6 इस विषय में अन्य उदाहरण के लिए।

अध्याय 1:15–2:2 यहूदा के लिए संदेश है कि निश्चय उसे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहिए, और परमेश्वर यहूदा को फिर से स्थापित करेगा। अध्याय 2–3 निनवे के विनाश का विस्तृत विवरण देती है।

इस पुस्तक हमारे लिए उपयोग करने के लिए शिक्षा है :

1. अध्याय 1:2 पुनः हमें निर्गमन 20:5–6 की शिक्षा देती है कि हमारा परमेश्वर जलन रखने वाला परमेश्वर है। अतः हमें उसकी आराधना और केवल उसकी ही सेवा करनी चाहिए।

2. हम जानते हैं कि नहूम परमेश्वर का एक सच्चा नबी था क्योंकि इतिहास निनवे के पूर्ण विनाश का विवरण देता है और इन दिनों निनवे का कोई अस्तित्व नहीं है।

3. परमेश्वर ने स्पष्ट रीति से उसके विरूद्ध बलवा करनेवालों और उसकी आराधना नहीं करने वालों के पूर्ण विनाश की चेतावनी दी है। यह चेतावनी जिस प्रकार नहूम के समय में निश्चत थी वैसे ही यह आज के समय में भी स्पष्ट हैं जो परमेश्वर के शत्रु हैं, उनके लिए नरक में अनन्तता का वायदा किया गया है देखें प्रकाशित वाक्य 21:8।

हबक्कूक

हम हबक्कूक के विषय में अधिक नहीं जानते हैं, परन्तु वह यहूदा के लिए बाबुल द्वारा विनाश के कुछ समय बाद एक नबी था। यह वह समय होना चाहिए जब अंतिम ईश्वरीय राजा योशियाह ने राज्य किया। यहूदा ने अपने परमेश्वर को त्याग दिया और उन्होंने परमेश्वर के प्रति सही व्यवहार नहीं किया। हबक्कूक उन कई नबियों में से एक था जिसे परमेश्वर ने अपने लोगों को पशताप करने के लिए बुलाहट देने को भेजा ताकि वे उसके पास फिर से लौट सके।

1. अध्याय 1:1–11 परमेश्वर के साथ पहली बातचीत को सम्मिलित किया गया है। यह समय यहूदा में भयानतक पापमय अवस्था का था। लोग मूर्तियों की आराधना करते थे और वह लुचपन के दोषी थे। उनके अगुवे भी भ्रष्ट थे और गहिरे रीति से पाप में डूबे हुए थे।

जैसे एक आयत 2 में पढ़ते हैं कि वह लोगों के पापों के लिए कुछ समय से प्रार्थना कर रहा था। और उसने यह महसूस किया कि परमेश्वर उसकी नहीं सुन रहा है। उसने देखा कि लोगों ने परमेश्वर को पूरी रीति से छोड़ दिया और वे मूर्तिपूजक बन गये। यद्यपि अगुवे भी भ्रष्ट थे। हबक्कूक आयत 3 यह समझ नहीं आता है कि क्यों परमेश्वर उन्हें पाप में ही पड़े रहने की अनुमति देता है। हबक्कुक परमेश्वर की चुप्पी को नहीं समझ पा रहा था। परमेश्वर ने आयत 6 में उत्तर दिया कि वह लोगों को दण्ड देगा। वह कसदियों का उपयोग करेगा ताकि उन्हें दण्डित कर सके।

2. अध्याय 1:11–2:10 में परमेश्वर से दूसरी बातचीत को देखते हैं। हबक्कूक आयत 13 में कहता है कि परमेश्वर बुराई को सहन नहीं कर सकता है, इसलिए हबक्कुक यह जानना चाहता था कि परमेश्वर कैसे बुरे लोगों का उपयोग अपने लोगों को दण्डित करने के लिए करेगा।

आयत 2:1–4 कहता है कि लोगों को धैर्य रखना चाहिए और परमेश्वर के कार्य करने के लिए तैयार होने तक इंतजार करना चाहिए। हमें विश्वास के द्वारा जीवन बिताना चाहिए और परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए ताकि सही समय पर सही कार्य होने पाये।

परमेश्वर कहता है कि वह जानता है कि बाबुलवासी कितने दुष्ट हैं, और न्याय शीघ्रता से आ रहा है और बाबुल वासियों को कठोर दण्ड दिया जाएगा।

आयत 14 वायदा करती है कि एक नया विश्व क्रम आ रहा है और जीवन बहुत ही भिन्न होगा।

यह भाग आयत 20 के साथ इस कथन के साथ समाप्त होता है कि परमेश्वर नियंत्रण में है और सम्पूर्ण पृथ्वी उसके सम्मुख खड़ी होगी और वह उनका न्याय करेगा।

अध्याय 3 आराधना की एक प्रार्थना है। हबक्कुक ने स्वयं को परमेश्वर के सम्मुख नम्र किया और वह परमेश्वर की पवित्रता के लिए उसके न्याय के लिए और धार्मिकता के लिए स्तुति करता है। वह परमेश्वर की स्तुति करता है क्योंकि परमेश्वर नियंत्रण में सब कुछ है। आयत 2 में हबक्कुक परमेश्वर से मांगता है कि वह न्याय के समय करूणा को स्मरण रखे। वह अपनी पुस्तक का अन्त करता है यह लिखते हुए कि वह परमेश्वर में आनन्दित है जो उसका उद्धार और उसका बल है।

उपयोग

लोग चेतावनी के बावजूद भी परमेश्वर के न्याय पर विश्वास नहीं करना चाहते थे। पौलुस ने प्रेरितों के काम 13:41 में हबक्कुक 1:5 का उपयोग करते हुए यहूदियों को चेतावनी दी। कई लोगों ने सुसमाचार के संदेश को सुना परन्तु फिर भी उनके उद्धार के लिए वे यीशु मसीह पर विश्वास करने से इन्कार करते हैं।

हबक्कुक 2:4 में विश्वास द्वारा जीवित रहने के विषय में बात करता है। परमेश्वर के लोग उस पर विश्वास रखते हैं। वे अच्छी और बुरे दोनों ही समयों में परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं। तुलना करके देखें कि कैसे यीशु ने गतसेमिनी बाग में अपने बुरे समय में भी परमेश्वर पर भरोसा रखा। (मत्ती 26:39)

5. निष्कर्ष

शायद ऐसा प्रतीत हो कि दुष्ट लोग उन्नत होते हैं और वे थोड़े समय के लिए होते भी हैं। फिर भी निश्चित रूप से परमेश्वर का न्याय उन पर आएगा। यह उद्धार नहीं पाये हुए लोगों के लिए एक चेतावनी हैं जो अपने जीवन का आनन्द ले रहे हैं और कभी भी परमेश्वर की नहीं सुनते हैं। सभी लोगों के लिए न्याय आ रहा है। जो व्यक्ति मसीही नहीं है उसे अन्य पापों के लिए दोषी के तौर पर न्याय किया जाएगा और उन्हें नरक भेजा जाएगा।

सपन्याह

यह पुस्तक बाईबल में कम पढ़ी और समझी जाने वाली पुस्तकों में से एक हैं। यह दुखित हैं क्योंकि सपन्याह द्वारा दिया गया संदेश आज भी हमारे उपयोग के लिए है भले ही इसे 2500 वर्षों पूर्व दिया गया हो। अन्तिम कुछ आयतें बहुत ही सांत्वना देनेवाली हूँ विशेषकर अध्याय 3:17। हम जानते हैं कि सपन्याह ने उसका संदेश राजा योशियाह के शासन काल में दिया जब यहूदा का राज्य अन्त की ओर बढ़ रहा था। यह बाबुल द्वारा यहूदा पर विजय करने के पश्चात् ही था। उत्तरी राज्य को अश्शूर द्वारा जीते जाने के लम्बे वर्षों बादयह संदेश दिया गया।

सपन्याह का प्रामि भाग अध्याय 1:1–2:3 परमेश्वर के दिन पर केन्द्रित है जिसका अर्थ है कि कठोर न्याय का एक संदेश। यह इस प्रकार है कि जैसे सपन्याह दूसरे नबियों को एक संक्षिप्त लेख लिख रहा है, जैसे वह एक संदेश को लिखता है जिसमें पूर्ण विनाश का वायदा किया गया है देखें आयत 1:1–4। उसके लेख का तरीका कुछ इस प्रकार है जिसमें किसी बात को अधिक बड़ा कर कहा जाता है। परमेश्वर सभी को मारने नहीं जा रहा है जैसा आयत 2 कहती है। हालांकि परमेश्वर बहुत क्रोधित है और विनाश ऐसा होगा कि लोग भयीीत होंगे।

परमेश्वर क्रोधित है क्योंकि सभी लोगों के बहुत से पाप है : वे सभी पापी हैं केवल कुछ ही नहीं और उनके पाप उनके जीवन के सभी भागों में हैं जैसे :

1. धर्म :– आयत 4–6 याजकों और लोगों दोनों के धार्मिक पापों के विषय में कहती है। लोग मूर्तिपूजा और परमेश्वर के प्रति सच्ची आराधना से दूर होने के दोषी हैं। विशेषकर लोग परमेश्वर से बढ़ कर धन से प्रेम करते हैं और दुसरी वस्तुओं और लोगों को परमेश्वर से अधिक प्रेम करते हैं। वे अपने पापों को परमेश्वर से अधिक प्रेम करते हैं, और लोगों के साथ अपने पदों को अधिक प्रेम करते हैं। वे मत्ती 22:37 की आज्ञानुसार नहीं करते हैं।

2. सामाजिक प्रचलन : यहां 8–9 आयतों के कई अर्थ है। यहां मेरा दृष्टिकोण है। एक और कारण जो हम आयत 8 में पाते हैं जिससे परमेश्वर क्रोधित थे, जो अगुवों के विषय में बात करता है कि किस प्रकार वे लोगों को परमेश्वर के प्रति विश्वासघाती होने की राहों में ले जा रहे थे। लोग परमेश्वर के प्रति नजदीक होने के बजाए दूसरे लोगों के समान व्यवहार करने लगे थे। उन्हें परमेश्वर के लोग होने के कारण अन्य राष्ट्र के लोगों से भिन्न होना था और वे इस बात को भूल गये थे। (व्यवस्थाविववरण 7:6)

आयत 9 का पहला भाग जहां आयत कहती है उस दिन मैं सभी को दण्ड दूंगा शायद यह उन लोगों के विषय में बोला गया है जो झूठे देवता 'दागोन की आराधना करते थे। देखें 1 शमु. 5:। आयत 9 का दूसरा भाग उन लोगों के विषय बताता है जो झूठे देवता के प्रति धार्मिक अभ्यासों का पालन करते थे, परन्तु वे परमेश्वर की वाचाओं का पालन नहीं करते थे। यह अनाज्ञाकारिता परमेश्वर की आज्ञाओं को (ईमानदारी और न्याय) को पालन नहीं करने के विषय में थीं

3. व्यापार

एक और अन्य क्षेत्र जिससे प्रभु क्रोधित था वह आयत 1:11 में पाया जाता है। यह व्यापारियों द्वारा लोगों के व्यापार के स्थानों में ठगने के विषय में बात करता है।

4. संतोष

परमेश्वर क्रोधित है क्योंकि आयत 12 बताती है कि लोग यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर कोई प्रतिक्रिया नहीं करेंगे, और लोग चाहे अच्छा या बुरा जो चाहे कर सकते हैं। उन्होंने गलत रीति से यह सोचा कि परमेश्वर उनके बुरे व्यवहार के कारण उनको दण्डित नहीं करेगा।

सपन्याय आगे बताता है कि लोगों के पापों के लिए परमेश्वर की प्रतिक्रिया भीषण दण्ड के रूप में होगी। आयत 14 पुनः परमेश्वर के दिन के भयानक न्याय का हवाला देता है। सम्पूर्ण पहले अध्याय में परमेश्वर लोगों के पापों के कारण दण्ड का वादा करते हैं।

न्याय के विषय में पहला भाग अध्याय 2:1–3 में सपन्याह द्वारा लोगों को पश्चाताप की बुलाहट और परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के साथ समाप्त होती है, यदि उन्हें परमेश्वर के आने वाले न्याय से किसी भी प्रकार बचने की आशा है।

ध्यान दे कि अब परमेश्वर अत्यंत क्रोधित होकर कहते हैं अध्याय 2:3 में कि शायद ही लोग उसके न्याय से बचे। वह उन्हें 100 वर्ष पूर्व आमोस के समय छोड़ दिये जाने के समान वाचा नहीं बांधता है। वह आमोस के समय भी लोगों के पापों से क्रोधित था परन्तु आमोस 5:6 में उसने वायदा किया कि जो मन फिरायेंगे उन्हें वह न्याय से बचने देगा। परमेश्वर के धैर्य की सीमा है और हमें उसके धैर्य की सीमा को नहीं परखना चाहिए।

सपन्याह का अगला भाग अध्याय 2:4–3:8 में पया जाता है और यहाँ परमेश्वर के न्याय का विस्तार संसार के सभी लोगों के लिए पाया जाता है केवल यहूदा के लिए ही नहीं। परमेश्वर सभी लोगों का परमेश्वर है और जैसे हम आयत 8 में देखते हैं कि परमेश्वर सभी लोगों का न्याय करेगा। आज हम इसके उपयोग को इस प्रकार समझ सकते हैं कि यीशु के साथ हमारे सम्बन्ध के आधार पर हमारा न्याय किया जाएगा।

सपन्याह का अंतिम भाग अध्याय 3:9–20 में पाया जाता है और यह उत्साह का संदेश है फिर से स्थापित किये जाने का संदेश। छोटे नबियों का अध्ययन निराशाजनक हो सकता है क्योंकि भयानक न्याय का संदेश है। हालांकि यह न्याय परमेश्वर के अंतिम शब्द नहीं है। भले ही न्याय कितना भी कठोर क्यों न हो, परमेश्वर का अंतिम संदेश पश्चाताप करने वालों के लिए आशा का संदेश है। शैतान का न्याय होगा और पाप अंतिम विजेता नहीं होगा। परमेश्वर की आशीषों सभी के लिए नहीं हैं। वे केवल उसके शेष बचे हुए लोगों के लिए है। ये आशीषें केवल मसीहियों के लिए है। क्या आप इस बात में निश्चित है कि आप मसीह के हैं

यहाँ आप जान सकते हैं कि कैसे आप मसीह के हैं :

आयत 9 बताती है कि हमें परमेश्वर को पुकारना चाहिए और अन्य मसीह लोगों के साथ ''कंधे से कंधा'' मिलाकर उसकी सेवा करनी चाहिए। हमें अपने सम्पूर्ण हृदय से उस पर भरोसा रखना चाहिए और विश्वासयोग्य से उसकी सेवा करनी चाहिए।

आयत 11, 12 कहती है कि हमें निश्चय अपने घमण्ड पर विजय प्राप्त करनी चाहिए और नम्र तथा दीन बनना चाहिए। आपको स्वयं को सिंहासन से उतारकर मसीह को अपने स्थान पर रखना चाहिए।

जिस प्रकार आयत 13 कहती है हम मसीही लोगों को पवित्र जीवन व्यतीत करना चाहिए। हमें परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने का प्रयत्न करना चाहिए। युहन्ना 14:5 कहती है कि यदि हम उससे प्रेम करते हैं तो उसकी आज्ञाओं को भी मानेंगे। हम उससे प्रेम करते हैं तो उसकी आज्ञाओं को भी मानेंगे। हम जितना अधिक आज्ञाकारी बनते हैं उतना ही अधिक पवित्र होते जाते हैं।

अब आयत 14 में हमें कहा गया कि हम आनन्द के साथ नया गीत गायें। आयत 15 कहती है कि हम यह गीत इसलिए गाते हैं कि परमेश्वर ने हमारे दण्ड को हटा दिया और वह फिर से हमारे साथ है।

सपन्याह का शेष भाग उत्साह का संदेश है। आयत 17 विशेषतः सांत्वना देनेवाली है। यहां पर सपन्याह हम से कह रहा है कि परमेश्वर अपने लोगों से बहुत अधिक प्रसन्न है कि वह हमारे साथ आनन्द के साथ गाता है।

हाग्गै

हाग्गै और जकर्याह दोनों बंधुवाई से बाद के नबी थे। उन्हें बंधुवाई के बाद का नबी इसलिए कहा गया क्योंकि उन्होंने यरूशलेम में बंधुवाई से लौटने के पश्चात सेवकाई की। उन्होंने एक ही समय में सेवकाई की और उनका उद्देश्य यहूदी लोगों को मंदिर को फिर से निर्माण करने के लिए उत्साहित करना था ताकि फिर से वहां आराधना शुरू की जा सके। उनकी बंधुवाई के दिनों के बाद यहूदियों को उत्साहित किये जाने की आवश्यकता थी। उन्हें जागृति की भी आवश्यकता थी। परमेश्वर ने इन दोनों को इसी कारण से भेजा था।

हाग्गै जिन यहूदियों से बात कर रहा था वे बंधुवाई से पहले और यरूशलेम के विनाश से पहले के यहूदियों से अलग थे। वे आज के कई मसीहियों के समान थे कि वे परमेश्वर के लोग थे, परन्तु वे स्वयं के लिए जीवन जीने वाले थे न कि परमेश्वर के लिए। बहुत से अवसरों पर परमेश्वर के लोग परमेश्वर की सेवा करना चाहते हैं परन्तु वे पहले अपनी ही देखभाल करते हैं और उसके पश्चात जब उनके पास समय या धन बचता है तो वे परमेश्वर को स्मरण करते हैं।

जब वे पहली बार यरूशलेम लौटे तो उन्होंने मंदिर को बनाना शुरू किय, परन्तु शीघ्र उन्हें विरोध का सामना करना पड़ा और उन्होंने काम को छोड़ दिया। पन्द्रह सालों के पश्चात् भी वे मंदिर पर कार्य नहीं कर रहे थे। परमेश्वर ने हाग्गै को भेजा ताकि वह लोगों को फिर से मंदिर निर्माण के कार्य को पूरा करने के लिए उत्साहित कर सके।

हाग्गै 1:2 हमें बताती है कि लोगों ने निश्चय किया कि अभी भी मंदिर निर्माण का समय नहीं हुआ है। लोगों को फिर से इकट्ठे करने के द्वारा परमेश्वर चाहते थे कि यरूशलेम में उनके पास फिर से एक मंदिर हो जहां वे लोग सही रीति से आराधना कर सके। लोगों ने इस सत्य को नजरअंदाज कर दिया।

आयत 3–11 में परमेश्वर द्वारा लोगों को मंदिर न बनाये जाने के निर्णय का उत्तर दिया गया। परमेश्वर ने उसका संदेश हाग्गै द्वारा लोगों को दिया। पहला आयत 4 में परमेश्वर के वचन को तवज्जो नहीं दिया क्योंकि लोगों ने अपने भवनों को परमेश्वर के भवन से ज्यादा महत्व दिया। वह आयत 10–11 में आगे कहता है कि प्रदेश में आकाल उनके द्वारा मंदिर के निर्माण की अनदेखी के कारण है। उन्हें परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए और परमेश्वर के कार्यों को करना चाहिए स्वयं की देखभाल करने से पहले।

हम आयत 12 में देखते हैं कि अगुवों ने परमेश्वर की आज्ञा को माना और उनकी अगुवाई में सभी लोगों ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने का निर्णय लिया। आयत 1 और आयत 15 की तुलना करने पर हम पाते हैं कि लोगों की प्रतिक्रिया बहुत ही शीघ्र थी और केवल 23 दिनों में ही लोगों ने मंदिर का कार्य करना शुरू कर दिया।

लोग शीघ्र ही निरूत्साहित हो गये जैसे कि अध्याय 2:1–9 में बताया गया है। वे लोग निम्न कारणों से निरूत्साहित हो गये थे: –

1. कार्य कठोर था और सबसे पहले सभी लोगों को पुराने मंदिर के स्थान को साफ करने की आवश्यकता थी। प्रथम मंदिर पूर्ण रीति से एक बड़ा कार्य था ताकि मंदिर का निर्माण किया जा सके। काफी कठोर कार्य करने के पश्चात् भी कुछ भी सकारात्मक नहीं दिखाई दे रहा था।

2. प्रथम मंदिर के समान विशाल और धनी मंदिर बनने के लिए उनके पास पर्याप्त संसाधनों की कमी थी। हाग्गै आयत 3 में इस सत्य पर ध्यान खींचता है कि सुलैमान के द्वारा निर्मित मंदिर की तुलना में उनके द्वारा बनाया गया मंदिर बहुत ही तुच्छ होगा।

आयत 4 में परमेश्वर लोगों को उत्साहित करते हैं। हाग्गै, उनसे कहता है कि परमेश्वर उनके साथ हे इसलिए उत्साहित हो और कार्य में लग जाये। यह परमेश्वर द्वारा उसके कार्य करने वालों को दिए गए संदेश के समान ही था। यहोशू 1:6–9, 1 इतिहास 28:20 यही संदेश आज भी परमेश्वर अपने कार्य करने वालों को देते हैं। यहां पर कुछ कारण है जिसके द्वारा परमेश्वर उत्साहित होने के लिए कहते हैं :

1. आयत 5 में परमेश्वर लोगों की वाचा को स्मरण दिलाता है जो उसने अपने लोगों के साथ बांधी थी कि वह उन्हें मिस्र से बाहर लेकर आयेंगे और उन्हें स्थान को देंगे। वह उन्हें स्मरण दिलाता है कि वह सदा उनके साथ रहेगा।

2. आयत 8 में परमेश्वर उन्हें स्मरण दिलाता है कि सोना और चांदी उसका ही है (भजन संहिता 24:1) और वह उन्हें हर आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा।

3. आयत 7 में परमेश्वर ने वायदा किया कि वह आकर मंदिर को उसकी महिमा से भर देंगे। नये मंदिर की महिमा परमेश्वर में पाई जाएगी न कि उसके आकार और बहुमूल्य सामग्रीयों में। यहां बाहरी व्यक्तित्व गिना नहीं जाता है, इसके बजाए हृदय की ओर ध्यान दिया जाता है। परमेश्वर की महिमा उस कलीसिया में पाई जाती है जहां लोगों के हृदय उस पर केन्द्रित होते हैं और भवन का आकार मायने नहीं रखता।

परमेश्वर द्वारा याजकों को अगला संदेश आयत 10–19 में दिया गया था। हाग्गै ने याजकों से दो प्रश्न पूछे जिसका उत्तर उन्होंने दिया :

1. आयत 12 प्रश्न है यदि कुछ पवित्र वस्तु अपवित्र वस्तु को स्पर्श करे तो क्या पवित्र वस्तु अपवित्र को पवित्र कर सकती है। याजकों का उत्तर बेशक नहीं है।

2. आयत 13 प्रश्न है यदि कुछ साधारण वस्तु पवित्र वस्तु को स्पर्श करे तो क्या वह सम्पर्क पवित्र वस्तु को अशुद्ध कर देगा। उत्तर है हाँ।

अब बाईबल के सिद्धान्त स्थापित है, हाग्गै आयत 14 में कहता है कि यह लोगों और उनके कार्यों के साथ हुआ है। लोग मंदिर में कार्य कर रहे हैं, परन्तु उनके हृदय कार्य में नहीं हैं। वे कार्य इसलिए कर रहे थे क्योंकि उन्हें लगता है कि कार्य करना है। हमें परमेश्वर की सेवा तभी करनी चाहिए जब हमारा हृदय कार्य में हो, हमें इसे एक कर्त्तव्य समझ कर नहीं करना चाहिए।

आयत 15–17 में परमेश्वर लोगों को उनके बीते दिनों की असफलताओं को स्मरण कराता जो कि उनके दिलों की सोच या व्यवहार के कारण थी। आयत 18–19 में परमेश्वर लोगों से उसके प्रति नयी सोच को अपनाने के लिए कहते हैं। अब वह लोगों को आशीषित करने का वायदा करता है।

अंतिम संदेश आयत 20–23 में पाया जाता है जो यरूब्बाबेल को सम्बोधित करता है जिसे राज्यपाल कहा गया। संसार इस समय बहुत अस्थिर था। यहूदा बहुत छोटा था और वह कई उग्र और विशाल राष्ट्रों से घिरा हुआ था। लोगों को अपनी सुरक्षा के प्रति भय था। आयत 21–22 में परमेश्वर का संदेश कहता है कि वह चीजों पर नियंत्रण रखता है और उन्हें डरना नहीं चाहिए। यह संदेश हम सभी पर आज भी लागू होता हैं

जकर्याह

जकर्याह की पुस्तक पुराने नियम में समझने के लिए कठिन पुस्तकों में से एक है। हम पहली आयत से यह जान सकते हैं कि उसने बंधुवाई से यरूशलेम लौटने वाले लोगों से बातचीत की। वह यरूशलेम की अगुवाई में बंधुवाई से लौटने वाले लोगों के साथ था, और वह हाग्गै का समकालीन था। उसको संदेश उन यहूदियों को उत्साहित करने के लिए था जो परमेश्वर द्वारा दण्डित किये गये थे और अभी यरूशलेम का पुर्ननिर्माण करने के लिए कठिन समय का सामना कर रहे थे।

यरूब्बाबेल का संदेश यहूदियों के लिए यह था कि यद्यपि उनके लिए परिस्थितियां बहुत कठिन हैं, वहां पर उनके लिए महिमामय भविष्य इंतजार कर रहा है। उसकी भविष्यवाणियां मसीहा के प्रथम और द्वितीय दोनों आगमन के विषय में थी। यहूदी लोग मसीहा के आगमन के महिमामय वाचा की ओर देख रहे थे।

पुस्तक का प्रथम भाग 1:1–6 में पाया जाता है और यह पश्चाताप की बुलाहट है। जकर्याह लोगों को स्मरण दिलाता है कि उन्हें अपने पिताओं के समान अनाज्ञाकारी नहीं होना चाहिए जिस कारण परमेश्वर ने उन्हें दण्डित किया। परमेश्वर वादा करता है कि यदि वे परमश्वर की ओर लौट आयेंगे तो वह क्रोधित नहीं होगा जैसा वह उनके पूर्वजों से क्रोधित था। यदि लोग पश्चाताप करेंगे और परमेश्वर की आज्ञा का पालन करेंगे, तो वह उन्हें स्वीकार करेगा। आज यह संदेश कलीसिया के लिए भी है कि यदि वह पश्चाताप करे तो परमेश्वर उनका स्वागत करेगा।

11. जकर्याह अध्याय 1:7–6:8 में परमेश्वर से आठ दर्शन प्राप्त करता है, ये सभी दर्शन उसे एक ही रात्री में दिये गये। संक्षिप्त में यह इस प्रकार है :

1. प्रथम दर्शन अध्याय 1:7–17 में वर्णित किया गया है। परमेश्वर का दूत मनुष्य के रूप में लाल घोड़े पर प्रकट हुआ। इस व्यक्ति ने कहा कि सारा जगत शांति से है। इस बात से परमेश्वर विचलित हो गया, क्योंकि यरूशलेम और यहूदा अभी भी कष्ट में थे और शंति से नहीं थे। 16–17 आयतों में परमेश्वर ने उसके लोगों को उत्साहित किया कि यरूशलेम और यहूदा में उसके लोग भविष्य में सम्पूर्णता से आशीषित होंगे।

2. 1:18–19 में हम चार सींगों को पाते हैं, यह दूसरा दर्शन था। यह दानिएल 7:1–8 से चार राष्ट्रों को प्रकट करता है।

3. तीसरे दर्शन में एक व्यक्ति यरूशलेम को नापते हुए चित्रित किया गया है।

4. चौथा दर्शन अध्याय 3:1 से प्रारम्भ होता है, जिसमें यहोशू महायाजक मैले कपड़ों में चित्रित किये गये जिसका अर्थ है कि यहोशू और उसके लोगों के पाप। शैतान यहोशू पर दोष लगात है, और परमेश्वर कहता है कि वह यहोशू से पाप को हटा देगा। यह मसीह के विषय भविष्यवाणी है। अध्याय 3:9 पहले से ही कहता है कि इस भूमि के पाप एक ही दिन में दूर हो जायेंगे कि बलिान की भविष्यवाणी है। यह मसीह के बलिदान को दर्शाती है जब वह क्रूस पर चढ़ाया गया और पिता ने सभी मसीहियों के लिए पापों के हर्जाने के रूप में इस दण्ड को स्वीकार किया। इसका अर्थ है कि हम मसीही लोग परमेश्वर के साथ मेल और शांति में हैं।

5. पांचवीं भविष्यवाणी अध्याय 5 में पायी जाती है जो कि एक सोने की दीवट और दो जैतून वृक्ष हैं। दीवट इस बात का प्रतीक है कि परमेश्वर के लोग इस जगत की ज्योति हैं। यीशु ने मत्ती 5:14 में इस विषय में कहा है। जैतून का वृक्ष राजा और इस्राएल के याजकों को दिखाता है। इस भविष्यवाणी को लिखे जाने के समय उन पदों पर यरूब्बाबेल और यहोशू थे। बाद में यीशु राजा और याजक दोनों ही रूपों में आये।

6. छठवां दर्शन अध्याय 5:1–4 में पाया जाता है, जब जकर्याह ने एक उड़ता हुआ लेख पत्र देखा। उस लेख पत्र पर हत्या और चोरी के पाप लिखे हुए थे जिनका न्याय किया जाएगा। इसमें सभी पापों के लिए दण्ड या न्याय का बढ़ाया जाना शामिल है।

7. सातवें दर्शन में टोकरी में एक महिला पाई जाती है, यह अध्याय 5:5–11 में है। महिला दुष्टता को प्रकट करती है जिसे इस्राएल से हटाने ओर शिनार ले जाने की आवश्यकता है, हम उत्पति 12:2 में इस स्थान का जिक्र देखते हैं जहां लोगों ने परमेश्वर के विरूद्ध बलवा किया और बाबुल के मीनार का निर्माण किया। यह इस्राएल से पाप, यहां तक कि पाप की सोच को भी हटाने का प्रतीक है।

8. आँखें अंतिम दर्शन के विषय में अध्याय 6:1–8 में हैं, जहां चार रथों का चित्रण है जो पूरे जगत में परमेश्वर के न्याय को लाने जा रहे हैं।

यहोशू को मुकुट पहनाने की आज्ञा 6:9–15। यहां पर महायाजक यहोशू को मुकुट पहनाने की आज्ञा दी गई है। यह आगे मसीह की ओर इशारा है क्योंकि कोई भी मनुष्य को राजा और याजकों दोनों होने की अनुमति नहीं दी गई है। मसीह राजा और याजक दोनों होगा।

7:1–8:23 अतिरिक्त उपवास दिन को पालन करने के विषय में एक प्रश्न है। पुराना नियम में केवल एक ही दिन को पूरे वर्ष में उपवास दिन के तौर पर पालन करने के लिए कहा गया। जब से यरूशलेम का पतन हुआ, यहूदी लोगों द्वारा वर्ष में कई बार उनके नगर के पतन को स्मरण करके उपवास किया जाता था। अब लोगों ने यरूशलेम को पुनः स्थापित कर लिया था तो प्रश्न यह था कि क्या वे इसे इसी प्रकार चालू रहने दें। परमेश्वर का उत्तार था कि वह उपवास से अधिक आज्ञाकारिता में रूचि रखता है। परमेश्वर ने अपने लोगों पर आशीष का वादा किया यदि वे अपने जीवन को जीने के द्वारा उसका आदर करेंगे।

अध्याय 9–10 एक नया दर्शन है।

अध्याय 9:1–8 विजेता (सिकन्दर महान) के विषय में बात करता है, जिसने इन आयतों में बताये गये क्रम के अनुसार इस्राएल के चारों ओर के राष्ट्रों को जीत लिया था। इस दर्शन द्वारा यह भविष्यवाणी हुई कि सिकन्दर यरूशलेम को नष्ट नहीं करेगा, और वास्तव में उसने यरूशलेम के नष्ट नहीं किया।

2. अब आयत 9–10 में हम मसीह का चित्र पाते हैं। आयत 9 राजा यीशु के यरूशलेम में प्रवेश का चित्र प्रस्तुत करता है। (देखें मत्ती 21:5)

3. अध्याय 9:14–17 फिर से आने वाले मसीह के विषय में बात करती है, जो कि दयालु राजा होगा, एक राजा जो अपने लोगों की सुरक्षा करेगा जैसा एक चरवाहा करता है। यह अधिकतर राजाओं के समान नहीं है जिन्होंने लोगों को अपने लाभ के लिए उपयोग किया।

अध्याय 11 समझ पाना काफी कठिन है, परन्तु हम यह कह सकते हैं कि यह भयंकर न्याय की भविष्यवाणी करता है। कुछ टीकाकार सोचते हैं कि यह 70 ई. में रोम द्वारा यरूशलेम के विनाश का हवाला देता है।

अध्याय 12–14 में एक नया दर्शन है।

अध्याय 12 इस विषय में बात करता है कि यरूशलेम किस प्रकार आक्रमण किया जाएगा। यद्यपि शत्रु लोग सोचेंगे कि वे आसानी से यरूशलेम को पराजित कर देंगे, परन्तु परमेश्वर उनके आक्रमणों को सफल नहीं होने देगा। यह विचार कलीसिया पर लागु होता है। वहां कलीसिया पर कई आक्रमण हुए हैं, परन्तु परमेश्वर कलीसिया की सुरक्षा करेगा इसलिए यह कभी भी नष्ट नहीं किया जा सकेगा, वहां पर हमेशा ही बचाये जायेंगे।

अध्याय 13 की पहली आयत से हम यह देखते हैं कि कैसे लोग उनके पापों से शुद्ध किये जा रहे हैं। आयतें 7–9 परमेश्वर चरवाहे यीशु की मृत्यु को दिखाती है। इसके पश्चात उसके अनुयायी तितर बितर हो जायेंगे और कई प्रकार की परीक्षाओं को सामना करेंगे। जब वे पूरी तरह से शुद्ध हो जायेंगे तो वे परमेश्वर को प्रस्तुत किये जायेंगे। परमेश्वर के लोग उसके नाम को पुकारेंगे और परमेश्वर उन्हें अपने लोगों के समान स्वीकार करेंगे।

अध्याय 14 इस पुस्तक को भविष्य की ओर देखने के साथ समाप्त करता है। यह समझ पाने के लिए एक कठिन परिच्छेद है परन्तु यह उस समय की ओर देखना प्रतीत होता है जब इस्राएल फिर से एक राष्ट्र होगा। अगली बात, दूसरा राष्ट्र जो इस जगत में है वे इस्राएल पर आक्रमण करेंगे परन्तु परमेश्वर हस्तक्षेप करेगा, आयत 3 ओर शत्रु परास्त किये जायेंगे।

आयतें 6–11 कहती है कि परमेश्वर उसके लोगों के साथ होगा और इस्राएल के लिए महान आशीषों होगी। यह आशीषें उसके सभी शत्रुओं के परास्त होने के बाद प्राप्त होगी।

अगला भाग जिसमें 12–15 आयते हैं, कहती हैं कि परमेश्वर के शत्रुओं के लिए भयानक न्याय था दण्ड होगा। 16–19 आयतें कहती हैं कि जो भी राष्ट्र परमेश्वर का अनुसरण करेंगे, वे आशीषित होंगे।

4. अन्तिम दो आयतें कहती हैं कि एक दिन आनेवाला है जब सब कुछ पवित्र होगा। स्वर्ग पवित्र होगा, वहाँ स्वर्ग में कोई पाप नहीं होगा।

मलाकी

मलाकी की पुस्तक पुराना नियम का समापन है और आगे नया नियम को देखते हैं। यह नहेम्याह के समय था। नबी मलाकी परमेश्वर के लोगों के लिए प्रेम और चेतावनीयों का संदेश ले कर आया। इस पुस्तक को इस प्रकार लिखा गया है जैसे परमेश्वर और उसके लोगों के मध्य वार्तालाप हो रहा हो। 55 में से 47 आयतें परमेश्वर द्वारा बोली गई हैं।

परमेश्वर ने अध्याय 1:5 से लोगों से कहना प्रारम्भ किया कि वह उनसे प्रेम करता है और सबूत के तौर पर उसने उनके शत्रुओं को नाश कर दिया, एदोम।

2. आगे 1:6–2:17 में, परमेश्वर कहता है कि लोग परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं करने और सम्मान नहीं करने के द्वारा उसकी उपेक्षा करना निरंतर रूप से जारी रखे हुए हैं।

6–8 आयतें, परमेश्वर ने घटिया किस्म के बलिदान चढ़ाने के द्वारा उसका अपमान करने का दोष लगाया।

अध्याय 2:5–9 में परमेश्वर यह शिकायत करते हैं कि उसके याजकों ने लोगों को उसके विषय में सत्य नहीं बताया। परमेश्वर चाहते हैं कि उसका वचन बाईबल विश्वासपूर्णता से दोनों को बूढ़े और जवान, पुरूष और महिला को सिखाया जाए। कलीसिया के अगुवे इस शिक्षण के लिए जिम्मेदार हैं।

अध्या 2:1 में परमेश्वर दुबारा उसके लोगों को विदेशी महिलाओं से विवाह करने के लिए फटकार लगाते हैं। जैसे हम पुराना नियम के अंत पर आते हैं, हम देखते हैं कि लोगों ने अभी भी उनकी शिक्षाओं को नहीं सीखा।

परमेश्वर की अगली शिकायल 14–16 आयतों में है कि लोग अपनी पत्नियों को तलाक दे रहे हैं।

आयत 10 शिकायत करती हैं कि उसके लोग एक दूसरे से प्रेम नहीं करते हैं। युहन्ना 4:7–12 कि हम मसीही लोगों को एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए या फिर हम मसीही नहीं हैं।

हम आयत 17 में देखते हैं कि लोगों ने यह दावा किया कि परमेश्वर उनकी अनुचित हरकतों से प्रसन्न है जो कि बिल्कुल गलत है। परमेश्वर उसके लोगों के पापों में प्रसन्न नहीं होता है।

परमेश्वर कहता है कि लोगों की असफलता के बावजूद भी परमेश्वर अपने भले नाम को निर्दोष ठहराएगा।

अध्याय 3:1–6 भविष्य में यीशु की ओर देखने के विषय में बात करती है।

आयत 1 युहन्ना बपतिस्मादाता के आने के विषय में भविष्यवाणी करती है जो परमेश्वर के न्याय के आने की घोषणा करेगा जो कि मसीह के रूप में है।

2–4 आयतें कहती हैं कि परमेश्वर का यह न्याय केवल चारों ओर के मूर्तिपूजक राष्ट्रों पर ही न्याय को नही लाएगा परन्तु यहूदियों पर भी दण्ड आएगा।

हम आयत 6 में परमेश्वर के चरित्रों में से एक को देखते हैं। हमारा परमेश्वर कभी भी बदलता नहीं है। वह पवित्र है जिसका अर्थ है कि वह परिपूर्ण है और सदा परिपूर्ण या श्रेष्ठ रहेगा। परमेश्वर द्वारा किये गए प्रत्येक वायदे आज भी वैसे ही सच्चे हैं जैसे उसने उन वायदों को दिया था क्योंकि परमेश्वर के विषय में कुछ भी नहीं बदलता है।

मलाकी 3:7–12 परमेश्वर द्वारा यह दोष लगाने के विषय में है कि कैसे लोग दशमांश और भेंट न देने के द्वारा उसे लूट रहे हैं। परमेश्वर इसे स्पष्ट करते हैं कि हमें अपना पैसा परमेश्वर को देना है और यह परमेश्वर पर भरोसा रखने का मामला है।

मलाकी 3:13–18 में हम देखते हैं कि बहुत से लोग परमेश्वर के प्रति उस प्रकार प्रत्युत्तर नहीं दे रहे थे जैसा उन्हें देना चाहिए था। हम आयत 16–17 में देखते हैं कि इस राष्ट्र में भी जो बहुसंख्यक अविश्वासी हैं, परमेश्वर के पास विश्वासयोग्य अनुसरण करने वाले हैं। जगत आज भी उसी समान है, हम देखते हैं कि कलीसिया में बहुत से लोग परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन भी करते हैं, परन्तु फिरभी कुछ विश्वासयोग्य लोग उसके पीछे हैं।

6. अध्याय 4:1–3 में अनाज्ञाकारिता के प्रति अंतिम लोगों की मूसा के द्वारा दी हुई उसकी आज्ञाओं का पालन करने का स्मरण दिलाते हुए करते हैं। आयत 5–6 में मलाकी यह वायदा करते हुए अन्त करता है कि परमेश्वर किसी को भेजेंगे जो कि परमश्वर के लोगों को पश्चाताप में लाएगा। एलियाह के नाम का उपयोग यहां पर असमंजस उत्पन्न करता है। इस कारण बहुत सी असहमतियां हैं। निश्चित रूप से यह नहीं पता कि एलियाह किसके संदर्भ में कहा गया है।